* सर्व शुद्ध *

॥ श्री ॥

मुहूर्त चिन्तामणि

(भाषा टीका)

सम्पूर्ण चतुर्दश प्रकरणों सहित

टीकाकार—

ज्योतिर्विद-पं० बसन्तलाल व्यास मंत्रशास्त्री

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा ।

११४

मूल्य ४) रुपया

ईश्वरदास शर्मा

* सर्व शुद्ध *

॥ श्री ॥

मुहूर्त चिन्तामणि

(भाषा टीका)

सम्पूर्ण चतुर्दश प्रकरणों सहित

टीकाकार—

ज्योतिर्विद-पं० बसन्तलाल व्यास मंत्रशास्त्री

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा ।

मूल्य ४) रुपया

॥ अथ मुहूर्तचिन्तामणेर्विषयानुक्रमः ॥

इति अनुक्रमणिका ।

॥ श्री ॥

अथ

मुहूर्तचिंतामणि

अनंत नामक ज्योतिर्विद् पुत्र रामनाम्ना निर्मितः ।

———:o:———

सान्वयांको भाषानुवाद सहितः ।

)(—०—)(

प्रथमं प्रकरणम् ।

[इन्द्र] गौरीश्रवः केतकपत्र भंगमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे ।
विघ्नं मुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहो हरतु द्विपास्यः ॥१॥

श्री गणेशायनमः । श्रीकृष्णं सच्चिदानन्दं नमस्कृत्यजगद गुरुम् । करोति सरलां टीकां घनश्यामोहिमाधुरः ॥ पार्वती के कानों में जो केतकी के पत्ते का टुकड़ा था उसको शूंड से खींच कर मुख में रख लिया है और दो घड़ी के लिये बनाया है दूसरा दांत का अंकुर, ऐसे गणेश जो मेरे विघ्न को दूर करें ।

विषय सहित ग्रंथका नाम निरूपण

[उप] क्रियाकलाप प्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्त सारार्थविलासगर्भम् ॥
अनंतदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्त्तचिंतामणिमातनोति ॥२॥

अनन्त नामक ज्योतिषी का पुत्र राम नामक ज्योतिषी सो जात कर्म से आदि लेकर मुहुर्तों के समय के ज्ञान का हेतु और थोड़े से में जिस में सब सार दिखलाया गया है ऐसे मुहूर्त चिन्तामणि नामक ग्रन्थ कौ बनाता है ॥२॥

क्रम से तिथि स्वामी

[अनु०] तिथीशा वन्हिकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ॥
शिवो दुर्गांतको विश्वे हरिः कामः शिवः शीशः ॥३॥

तिथियों के स्वामी

प्रतिपदा का स्वामी अग्नि द्वितीया का ब्रह्मा तृतिया की पार्वती चौथ के गणिपति पंचमी के सर्प षष्ठी के स्वामि कार्तिक सप्तमी के सूर्य अष्टमी के महादेव नवमी की दुर्गा दशमी का विश्वेदेवा द्वादशी के विष्णु त्रयोदशी का कामदेव चतुर्दशी के शिव और पूर्णिमा का चन्द्रमा और अमावाश्या के पितृ स्वामी हैं इस प्रकार के दोनों पक्षों की तिथियों के स्वामी हैं ॥ ३ ॥

ति.	ति फ.	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	पालन
१	सिद्धि	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	कोहड़ा
२	का. सा	ब्रह्मा	भद्रा	अ.	शुभ	बनभं
३	आरोग्य	गौरी	जया	अ.	शुभ	नोन
४	हानि	गणेश	रिक्त	अ.	शुभ	तिल
५	शुभ	सर्प	पूर्णा	अ.	शुभ	खट्टा
६	अशुभ	स्वाका	नदा	मध्यम	मध्यम	तेल
७	व्याधि	सूर्य्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आमला
८	मृत्युदा	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारि
९	धनदा	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	लडुआ
१०	शुभ	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	चिचे
११	सर्वसि.	विश्वे	नंदा	शुभ	अशुभ	सेमदा
१२	सर्वसि.	हरि.	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	उग्रा	कामदे	जया	शुभ	अ.	भंटा
१४	[illegible]टका	शिव	रिक्ता	शुभ	अ.	सहद
१५	अशुभ	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	अ.	जुवा
३०	,,	पितर	,,			मैथुन

सप्तमें अंक में शुभ समझनो अष्टम अंक से आदि क्रम से सम

[उप] नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः । सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥ ४ ॥

अर्थ—नन्दा, भद्रा, जया रिक्ता, पूर्णा ये तिथियां होती हैं सो इस प्रकार १, ६, ११ की नन्दा २, ७, १२ भद्रा ३, ८, १३ की जया ४, ९, १४ का रिक्ता ५, १०, १५ की पूर्णा संज्ञा है। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से पंचमी तक अशुभ है और षष्ठी से १० तक मध्यम है और एकादशी से पूर्णो तक अशुभ है और

कृष्णपक्ष में प्रतिपदा से पंचमी तक शुभ है और षष्टी से १० तक मध्यम हैं और एकादशो से अमावश्या तक शुभ है शुक्रवार को नन्दा बुध को भद्रा मंगल को जया शनि को रिक्ता और गुरुवार को पूर्णा तिथि आ जाय तो सिद्धा तिथि होतो हैं ॥४॥

(शालि०) नंदा भद्रा नंदिकाख्या जया च रिक्ता भद्रा पूर्णसंज्ञाऽधमार्कात् ॥याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठान्त्यं रवेर्दधभं स्यात् ॥५॥

अर्थः—रविवार से लेकर सातों बारों में ये तिथि अधम संज्ञक होती है और भरणा से लेकर नक्षत्र दग्ध संज्ञक होते हैं जैसे रविवार को १ । ६ । ११ (नन्दा) सोमवार को २ । ७ १२ (भद्रा) मंगल को फिर १ । ६ । ११ (नंदा) बुधवान को ३ । ८ १३ (जया) वृहस्पति को रिक्ता ४ । ९ १४ शुक्रवार को फिर भद्रा २ । ७ । १२ और शनिवार को पूर्ण ५ । १० । १५ । ३० ये अधम संज्ञक है और रविवार को भरगो सोम को चित्रा मंगल को उत्तराषाढ़ बुध को धनिष्ठा वृहस्पति को उत्तरा फाल्गुनी शुक्र को ज्येष्ठा शनि को रेवती होय दग्ध संज्ञक होते हैं ये शुभ काम में बर्जित है ॥ ५ ॥

(अनु.) षष्ट्यादितिथयो मंदाद्विलोमं प्रतिपद् बुधे ॥
सप्तम्यर्केऽधमाः षष्ट्याद्यामाश्च रद्धावने ॥ ६ ॥

टीकाः—शनि आदि उलटे गिने हुए वारों में षष्टि आदि तिथि और बुध को प्रतिपदा रविवार को सप्तमो होय तो उसकी अधम संज्ञा है छट परवा मावस इनमें दातुन न करे। उदाहरणशनि के दिन षष्टी शुक्रवार को सप्तमी वृहस्पति को अष्टमी बुध को नवमी मंगल को दशमी सोमवार को एकादशी रविवार को द्वादशी होय तो क्रकच योग होता है और बुधवार को प्रतिपदा रविवार को सप्तमो होय तौ संवर्त योग होता है ॥ ६ ॥

(इंद्र) षष्ट्यष्टमी भूतविधूनयेषु नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं

रतम् ॥ नाभ्यञ्जनं विश्वदशद्विके तिथौ धात्रीफलै स्नानममाद्रिगोष्वसत् ॥ ७ ॥

टीका—पुरुष षष्ठी के दिन तेल अष्टमी को मांस चतुर्दशी को क्षौर और अमावस को स्त्री भोग न करै तेरस दशमी और द्वितिया को उबटना न करै मावस सप्तमीं और नवमी को जामलों से स्नान न करे ॥ ७ ॥

(इं व.) सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनंदा वेदांगसप्ता शिवगजांकशैलाः सूर्य्यांगसप्तोरगगोदिगीशादग्धा विषाख्याश्च हुताशनाश्च ।८
(उप.) सूर्यादिवारे तिथयो भवंति मघाविशाखाशिवमलवह्निः ब्राह्मायं करोर्काघमघटंकाश्च शुभे विवर्ज्या गमने त्ववश्यम् । ६ ।

रव्यादिवारेषग्धातिथिचक्रम्

र.	चं.	बु.	गु.	शा.	श	वाराः
१२	११	५	३	६	८	दग्धातिथि
४	६	७	२	८	९	विषाख्य,,
१२	६	७	८	९	१०	हुसाशना,
म घा	शा	द्रा	सू ल	कृ ति का	रो हि णी	यमघण्ट नक्षत्र

टीका—रविवार को १२ सोमवार को ११ मंगल को ५ बुध को ३ वृहस्पति को ६ शुक्र को ८ शनि को ९ तिथि होय तौ दग्ध तिथि होती है । रविवार को ४ सोम का ६ मंगल को ७ बुध को २ वृहस्पति ८ शुक्र को ९ शनि को ७ तिथि होंय तो विष संज्ञक तिथि होती है । रविवार को १२ सोमवार को ६ मंगल को ७ बुधवार को ८ वृहस्पति को ९ शुक्र को १० शनि को ११ तिथि होय तो हुताशन योग होता है ॥ ८ ॥ रविवार को मघा सोमवार को विशाखा मंगल को आर्द्रा बुध को मूल वृहस्पति को कृतिका शुक्र को रोहिणी और शनि को हस्त नक्षत्र होय तो यम घंट संज्ञक नक्षत्र होते हैं ये शुभ कार्य में वर्जित हैं और यात्रा में तो अवश्य ही वर्जित हैं ॥ ९ ॥

(शा. वि.) आर्द्रेचन्द्र दृशौ नभस्यनलनेत्रे माघ वे द्वादशी ।

पौषे वेदशरा इषे दशशिवा मार्गेऽद्रिनागा मघौ ॥
गोऽष्टौ चोभयपक्षगाश्च तिथयः शून्या बुधैः कीर्तिता ।
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे शरांगाब्धयः ॥१०॥
अब चैत्रादि १२ मासों की शून्य तिथि कहते हैं ।

टीका–भादों में दोनों पक्षों को १।२ श्रावण में २।३ वैशाख में १२ पौष में ४।५ आश्विन में १०।११ मार्गशीर्ष में ७।८ चैत्र में ८।९ ये पंडितों ने शून्य तिथि कही हैं । कार्तिक कृष्ण पक्ष को ५ अषाढ़ कृष्ण पक्ष की ६ फालगुन कृष्ण ४ ज्येष्ठ कृष्ण १४ माघ कृष्ण ५ ये शून्य तिथियां हैं ॥ १० ॥

(अनु) शक्राः पंच सितेशक्राद्र्यग्निविश्वरसाः क्रमात् ।
तथा निंद्य,शुभे सार्पं द्वादश्यां वैश्वमादिमे ॥ ११ ॥
अनुराधा द्वितीयायां पञ्चम्यां मित्र्यभं तथां ॥
त्र्युत्तराश्च तृतीया यामेकादश्यां च रोहिणी ॥ १२ ॥
स्वातीचित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसे ॥
नवम्यां कृत्तिकाऽष्टम्यां पूभाषष्ट्यां च रोरिणी ॥ १३ ॥
अब तिथि नक्षत्रों के दोष कहते हैं ॥

टीका—कार्तिक शुक्ला १४ अषाढ़ शुक्ला ७ फालगुन शुक्ला ३ ज्येष्ठ शुक्ला १३ और माघ शुक्ला ६ ये भी तिथि शून्य हैं इन तिथियों में शुभ कार्य न करें तैसे ही द्वादशी को अश्लेषा प्रतिपदा को उत्ताराषाढ़ द्वितीया को अनुराधा पंचमी को मघा तीज को तीनों उत्तरा एकादशी को रोहिणी, तेरस को स्वाती, चित्रा, सप्तमी को हस्त और मूल, नावमी को कृत्तिका अष्टमी को पूर्वा भाद्रपद, छटको रोहणी होय तो शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ ११ । १२ । १३ ॥

(अ.) कदाश्रभे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ ॥ वैश्व

श्रुतीपाशपौष्ण अजपादग्निपित्र्यभे ॥ १४ ॥ चित्राद्वीशौ शिवाश्व्यर्काः श्रुतिमूले यमेंद्रभे ॥ चैत्रादिमासे शून्याख्या स्तारा वित्तविनाशदाः ॥ १५ ॥

चैत्रादि मासो में शून्य नक्षत्र कहते हैं

चैत्र में रोहिणी और अश्विनी वैशाख में चित्रा और स्वाती, ज्येष्ठ में उत्तराषाढ़ और पुष्य, आषाढ़ में पूर्वा फाल्गुनी और धनिष्ठा श्रावण में उत्तराषाढ़ और श्रावण भाद्रपद में शतभिषा और रेवती आश्विन में पूर्वा भाद्रपद कार्तिक में कृत्तिका और मघा, मार्ग शीर्ष में चित्रा और विशाखा, पौष में आर्द्रा अश्विनी और हस्त, माघ में श्रवण और मूल, फाल्गुन में भरणी औरज्येष्ठा नक्षत्रशून्यनक्षत्रहैं। इनमें शुभकार्य करने से धन का नाश होता है ॥१४॥१५॥

आश्विनादि-शून्य-नक्षत्र

शू.	चै.	व.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.शी	पौष	माघ	फा.
ति. थयः	९।८ उभ. पक्ष	१२ उभ. पक्ष	कृ.१४ शुक्ल प. १३	कृ.६ शु.७	२।३ उभय पक्ष	१।२ उभ- पक्ष	१०।११ उभ- पक्ष	कृ. ५ श१४	७।८ उभ- पक्ष	४।५ उभ पक्ष	कृ.५ शु६	कृ.४ शु३
शून्य ताराणि	अश्वि	चित्रा स्वा	उत्तरा पुष्य	पु.फा. धनि	उ.पा. श्रवण	शत रेवती	प. फा.	कृत्ति मघा	चित्रा विशा	आर्द्रा अ.ह	श्रवण मूल	भरणी ज्येष्ठा
शू.	११	१२	२	३	१	६	८	७	९	४	१०	५

(अ) घटो झषो गौमिथुनंमेषकन्यालितौलिनः ॥ धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः ॥ १६ ॥

चैत्रादिमासों में शून्यराशि बतलातेहैं

चैत्र में कुंभ, वैशाख में मीन, ज्येष्ठ में वृष, अषाढ़ में मिथुन श्रावण में मेष भाद्रपद में कन्या, आश्विन में वृश्चिक, कार्तिक में तुला, मार्गशीर्ष में धन, पौष में कर्क, माघ में मकर, फाल्गुन में सिंह ये शून्य राशि हैं इन लग्नों में शुभ कार्य न करना चाहिये ॥१६॥

(इं. व.) पत्नादितस्त्वोजतिथौ घटेणौमृगेंद्र नक्रौमिथुनागने च।
चापेन्दुभे कर्कहरीहयांत्यौ गौन्त्यौच नेष्टे तिथिशून्यलग्ने॥१७॥

टीका—पड़वा से लेकर ऊनी तिथियों में तुला, मकर इत्यादि शून्य लग्न है। जैसे पडवा को तुला मकर तीज को सिंह मकर, पंचमी को मिथुन कन्या, सप्तमी को धन, कर्क, नवमी को कर्क, सिंह एकादशी को धन, मीन, त्रयोदशी को बृषुमीन ये तिथि शून्य लग्न हैं ये शुभकार्य में वर्जित हैं ॥१७॥

(अ.) तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नानि यान्यपि।
मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु तु ॥ १८ ॥
पंग्वंधकाणलग्नानि मासशून्याश्च राशयः।
गौडमालवस्योस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥ १९ ॥

टीका—मास शून्य तिथि और शून्य लग्न ये मधा देश में वर्जित हैं अन्य देशों में नहीं ॥१८॥

पंगु, अंध और कांण, लग्ने तथा और मासों की राशियां ये गौड और मालव देश में त्याज्य हैं और देश में नहीं हैं ॥१९॥

(अ.) वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्क पञ्चमातिथौ ॥
भौमाश्विनी च सप्तम्यां षष्ठ्यां चन्द्रैदवं तथा ॥२०॥
बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम ॥
नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ॥ २१ ॥

अब शुभ कार्य में सिद्धि दायक योगों को तिथि विशेष में निन्दित कहते हैं ॥

टीक-पंचमी के दिन हस्त नक्षत्र और रविवार होय सप्तमी को भौमवार और अशिवनी नक्षत्र होय छठ को सोमवार और मृगशिर नक्षत्र होय अष्टमी को बुधवार और अनुराधा होय दशमी को शुक्रवार और रेवती होय नवमी को गुरुवार और पुष्य होय एकादशी को शनिवार और रोहिणी होय तो शुभ कार्य में वर्जित है। २० ॥ २१ ॥

[अ] गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ॥
भौमेऽश्विनी शनौ ब्राह्यंगुरौ पुष्यं विवर्जयेत् २२ ॥

टोका-जो नये मकान में जाना होय तो भौमवार को अश्विनी और यात्र में शनिवार को रोहिणी और विवाह में गुरुवार का पुष्य होय तो वर्जित हैं ॥२२॥

[शालि०] आनन्दाख्यः कालदंडश्च धूम्रो धातासौम्या ध्वांक्ष केतू क्रमेण ॥ श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्र मानस पद्मलुम्बौ ॥ २३ ॥ उत्पातमृत्यू किल काण [उपे] सिद्धी शुभो मृताख्यो मुसलं गदश्च ॥ मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्यःप्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥ २४ ॥

ये आनन्द आदि योगों के नाम हैं।

आनन्द, कालदंड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष, केतु, श्री वत्स, वज्र, मुग्दर, छत्र, मित्र, मानस, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, कण सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातंग, रक्ष चर, सुस्थिर, और वर्द्धमान, ये क्रम से २८ योग हैं और अपने नाम के अनुसार फल देने वाले हैं ॥२३ ॥२४॥

योगचक्रम् ।

यो. आर्न.

सं०	याग	रवि	चद्र.	मं.	बुध.	बृ.	शुकं	शनि	फलम्
१	आनन्द	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु	उषा.	शत.	सिद्धि
२	काल	भरणी	आर्द्धा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति	पुनर्व.	पू. फा	स्वा.	मूल	श्रवण	उ.भा.	असुख
४	धाता	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत	अश्वि	सौभाग्य
५	सोम्य	रोहि,	पुण्य	उ.फा.	विशा	पू.षा.	धनि	रेवतीं	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	भरणी	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्वा	पूर्वा.फा	स्त्रा.	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृति.	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा	विशा	पू. षा.	धनि	रेवती	रोहि	सौख्यसंति
९	वज	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ. षा.	शत	अ	मृग	क्षय
१०	मुग्दर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू. भा.	भ.	आद्रा	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	पू.फा	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृ.	पुन.	राजसन्मान
१२	मित्र	उ.फा,	विशा	पूषा	धनि	रेवती	रो.	पुण्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनुरा.	उ. षा.	शत.	अश्वि	मृग.	श्लेषा	सौभाग्य
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	धनागम
१५	लुम्बक	स्वा.	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृति	पुन.	पू. फा.	धनक्षय
१६	उत्पात	विशा	पू. षा.	धनि.	रेवती	रोहि	पुष्य	उ. फा.	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुरा	उ. षा.	श.	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल.	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू. फा.	स्वा.	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पूर्वा	धनिष्टा	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ. फा.	विशा	कल्याण
२१	अमृत	उ.पा.	शतभि	आश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु.	राजसन्मान
२२	मुसल	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्र	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति	पुन.	पू. फा.	स्वा	मूल	अक्षयविद्या
२४	मातंग	धनि	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ. फा.	विश	पू.षा.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	शत	अश्वि	मृगशि	श्लेषा	हस्त	अनु	उ. षा.	महाकाष्ट
२६	चर	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	कार्यविद्धि
२७	स्थिर	उ. भा.	कृति	पुनर्वा	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रवण	गृहरम्भ
२८	वर्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विषा	पू.षा.	धनि	विवाह

(अ.) दास्त्रादर्के मृगादिंदौ सार्पाद्भौमे कराद्बुधे
मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद्गण्या मंदे च वारुणात् ॥ २५ ॥

॥ योंगों के देखने की रीति लिखते हैं ॥

रविवार के दिन योग देखना होय ता अश्विनी नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै गिनने से जितनी संख्या आवै उतना आनन्द से गिनै तो वर्तमान योग आ जायगा। सोमवार को मृगशिर से मंगल को अश्लेशा बुध को हस्त से बृहस्पति को अनुराधा से शुक्र को उत्ताराषाढा से शनिको शतभिषा से दिन नक्षत्र तक गिनै इसमें भी गिनना चाहिये ॥ २५ ॥

(शा०) ध्वांत्ते वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्योवर्ज्यावेदाःपद्मलुम्बेगदेश्वाः
धूम्रेकाणे मौसले भूर्द्वयंद्वेरक्षोमृत्यूपातकालाश्च सर्वे ॥२६॥

कोई काम आवश्यक होय तो उसमें कुछ घड़ी त्याग
कर काम करालेय सो बतलाते हैं ।

टीका–ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गर, इनकी ५ घड़ी वर्जित हैं पद्म और लम्ब की ४ घड़ी गद को ७ घड़ी धूम्र की १ घड़ी काण, और मुसल की दो दो घड़ी वर्जित हैं रक्ष, मृत्यु, उत्पात, काल ये सब वर्जित हैं अर्थात् इनकी सब घड़ी वर्जित हैं ॥ २६ ॥

(अ०) सूर्यभाद्वदगोतर्कदिग्विश्वनखसम्मिते ॥
चंद्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ॥ २७ ॥

इन दोषों के अपवाद सूर्य योग कहते हैं ।

टीका–जिस नक्षत्र पर सूर्य होय उस दिन से नक्षत्र चौथे नमें, छटें, दशमें १३ में २० इन गिनती में आवै तो रवियोग होता है ये दोषों के समूह को नाश करने वाला है ॥ २७ ॥

(इ) सूर्ये ऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चंद्रेश्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् । भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञेब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचांद्रम् ॥ २८ ॥
(उ) जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदिति श्रवोभम् । शनौश्रुतिब्राह्मसमारभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वः ॥ २६ ॥

अब रविवार से लेकर सातों वारों में नक्षत्र से जो योग होते हैं सो कहते हैं।

टीका—रविवार के दिन हस्त, मूल, उत्तरा फाल्गुनी उत्तरा षाढ़ और उत्तरा भाद्रपद पुष्य अश्विनी सोमवार के दिन श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य और अनुराधा, मंगल को अश्विनी उत्तरभाद्रपद कृतिका और आश्लेषा, बुधको रोहिणी, अनुराधा, हस्त कृत्तिका और मृगशिर ॥ २८ ॥ गुरुवार को, रेवती अनुराधा अश्विन, पुनर्वसु, पुष्य शुक्रको रेवती अनुराधा अश्विनी पुनर्वसु और श्रवण शनिवार को श्रवण, रोहिणी स्वाती ये प्राचीन पंडितों ने सर्वाथा सिद्धि योग कहे हैं ॥ २६ ॥

[शालि०] द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्चब्राह्मात्पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः ॥ स्यादुत्पातो मृत्युकाणौ च सिद्धिर्वारे ऽर्काद्ये तत्फलम् नामतुल्यम् ॥ ३० ॥

टीका—रविवार से सातों वारों में क्रमसे विशाखा से पूर्वाषाढ़ से धनिष्ठा से रेवती से रोहिणी से पुष्प से और उत्तरा फाल्गुनी से चार नक्षत्र लेकर उत्पात मृत्यु और काण सिद्धि ये ४ योग होते हैं इनका फल नाम के अनुसार है। जैसे रविवार को विशाखा होय तौ उत्पात, अनुराधा होय तौ मृत्यु, ज्येष्ठा होय तौ काण मूल होय तौ सिद्धि योग होता है इसी प्रकार सोमवार को पूर्वाषाढ़ होय तौ उत्पात योग होता है उत्तराषाढ़ होय तो मृत्यु श्रवण

होय तो काण और धनिष्ठा हस्त को सिद्ध योग होता है इसी प्रकार सातों वारों में होते हैं ॥ ३० ॥

(अ) कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः ।
हूणवंगखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ ३१ ॥

अन देशके अनुसार कुयोगों का परिहार करते हैं।

टीका—तिथिवार के योग से पैदा हुए, और तिथि नक्षत्र के योग से पैदा हुए और तिथि नक्षत्र और वार से पैदा हुये कुयोग हैं, ये हूण देश में वर्जित हैं और जगह नहीं॥ ३१ ॥

शार्दू०) सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलवावर्द्धे निशान्होर्घटीत्र्शं वकुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयम् । उत्पातग्रहतोऽथग्रहांश्च शुभदोत्पातैच दुष्टं दिन षण्मास ग्रहभिन्नभं त्यज शुभे योद्धं तथोत्पातभम् ॥ ३२ ॥

संपूर्ण शुभ कार्यों में वर्जित योग कहते हैं।

टीका-सब शुभकार्यों मे चन्द्रमा और पापग्रह से युक्तलग्न और नमांशक त्याज्य है रात और दिन के आधे में घड़ीं कातृतीय भागहोय तो सारा अंश २० पल सो त्याज्य है खोटा नवांशक और ग्रहण से पहले तीन दिन पुच्छल तारा आदि उत्पात के दिन से लेकर सात दिन, और शुभ सूचक उत्पात से दूषित दिन त्यागना चाहिये पाप ग्रहों से विद्ध नक्षत्र, और युद्ध का नक्षत्र और जिसमें उत्पात होय वह नक्षत्र छै महीना तक शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥३२॥

(इ) नेष्टंग्रहर्क्षं सकलार्द्धपादग्रासे क्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान् ॥
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्रा ग्रस्तेऽस्तगे वाभ्युदिते ऽर्द्धखण्डे ।३३।

ग्रहण के नक्षत्र का त्याग कहते हैं

जो सर्वग्रास होय तो ग्रहण का नक्षत्र छै महिने तक शुभकार्य में वर्जित है और आधा ग्रास होने पर तीन महीना और चौथाई ग्रास होने पर एक महीना तक शुभ कार्य में वर्जित है। जो ग्रस्तास्त

होय तो पहिले तीन दिन और अस्तोदय होय तो पिछले ३ दिन और अर्ध खंड में अगाड़ी पिछाड़ी के तीन तीन दिन अशुभ हैं॥ ३३ ॥

पांचांग के दूषण बतलाते हैं।

(व. ति.) जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपात भद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्द्धी ॥ न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपाताविष्कुम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम् ॥ ३४ ॥

टीका-जन्मका नक्षत्र, जन्म का महीनाजन्म की तिथि व्यतीपात, भद्रा, वैधृति योग अमावस्या, श्राद्ध का दिन, तिथिकाक्षय और वृद्धि, क्षयमास, अधिकमास, कुलिक योग, प्रहरर्द्धि योग, व्यतीपात, विष्कुम्भ, वज्र इनकी ३ घड़ी त्याज्य हैं ॥३४॥

(अ.) परिघार्द पंच शूलेषट् च गण्डातिगंडयोः ॥
व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥ ३५ ॥

टीका—परिघ का आधा शूलय की पांच घड़ी गण्ड और प्रति गंड को ६ घड़ी व्याघात को ९ घड़ी शुभकार्य में वर्जित है ॥ ३५

(अ.) वेदांगाष्टनवार्केन्द्रपक्षरंध्रतिथौ त्यजेत्।
वस्वङ्कमनुतत्त्वाशाःशरा नाडीः पराः शुभाः ॥ ३६ ॥

पक्ष रंध्र तिथियों को वर्जित घड़ी कहते हैं। चौथ की आदि की ८ घड़ी छट की ९ घड़ी चतुर्दशी अष्टमी की १४ घड़ी नौमी को २५ घड़ी द्वादशी की १० घड़ी चतुर्दशी को ५ घड़ी शुभकार्य में वर्जित हैं पिछली घड़ी शुभ कही हैं ॥ ३६ ॥

(अ.) कुलिकः कालवेला च यमघंटश्च कंटकः।
वाराद्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः ॥ ३७ ॥

(शार्द०) सूर्ये षट्स्वरनागदिङ्मनुमिताश्चन्द्रेऽब्धिषट्कुञ्जरांकार्कविश्वपुरंदराः क्षितिसुते द्व्यग्न्यब्धितर्का दिशः ॥ सौम्येद्व्यब्धिगजांकदिङ्मनुमिता जीवे द्विषट्भास्कराः

शक्राख्यास्तिथयः कलाश्च भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः ॥ ३८ ॥
[व.ति.] दिग्भास्करा मनुमिताश्च शनौ शशिद्विनागा दिशो भवदिवाकरसंमिताश्च ॥ दुष्टक्षणः कुलिककंटककालवेलाःस्युश्चार्द्धयामयमघंटगताः कलांशाः ॥ ३९ ॥

अब रवि आदि वारों में दुमुहूर्त आदि कहते हैं ।

कुलिक आदि मुहूर्त चक्रम्

	सू	चं०	मं	बु	गु	शु	श
	१४	१२	१०	८	६	४	२
कुलिक	८	६	४	२	१४	१२	१०
कालबेला	१०	८	६	४	२	१४	१५
यमघंट	६	४	२	१४	१२	१०	८
कंटक	७	९	३	९	१२	५	१
अर्द्धमया							

टीका—रविवार को छटा सांतवा आठवां दशवां चौदहवां चन्द्रवार को चौथा छटा आठवां नवां बारहवां तेरहवां चौदहवां मंगल को दूसरा चौथा तीसरा छटा दशवां बुधवारको दूसरा चौथा आठवाँ नवां दशवां चौदहवां बृहस्पति को दूसरा छटा बारहवां चौदहवां पन्द्रहवां और सोलहवां शुक्र को चौथा पांचवां छटा नवां दशमां बारहवां चौदहवां शनिवार को पहिला दूसरा आठवां दशवां ग्यारहवां बारहवां ये सब दुमुहूर्त एक २ बार में दुष्ट क्षण कुलिक कंटक काल वेला अर्द्ध याम यम घंटक नामक होते हैं दिन मान का जो सोलहवां भाग है उसके बराबर मुहूर्त होता है ॥ ३७ ॥३८॥३९॥

वार	संख्या	[illegible]	यामार्द्ध
र.	४	१२	१६
चं.	७	२४	२८
मं.	२	४	८
बु.	५	१६	२०
गु.	८	२८	२२
शु.	५	८	१२
श.	६	२०	१४

[अ.] विपाशेरावती तीरे शतुद्रयाश्चत्रिपुष्करे ॥
विवाहादिशुभेनेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥ ४० ॥

होलाष्टक का त्याग कहते हैं ॥

टीका—बिषाखा ऐ इरावती शुतुद्री त्रिपुष्कर इन नदियों के किनारे पर होली से पहिले आठ दिन का विवाहादि में त्याग है ॥ ४० ॥

[अनु०] मृत्युक्रकचदग्धादीनिंदौ शस्ते शुभाञ्जगुः ।
केचिद्यामोत्तरंचान्ये यात्रायामेव निंदितान् ॥ ४१ ॥

टीका–जो चन्द्रमा श्रेष्ठ होय तौ मृत्यु क्रकच दग्ध आदि दोष शुभ हैं ऐसा ज्योतिषी कहते हैं कोई २ आचार्य प्रहर भर दिन चढ़े बाद इनको शुभ कहते हैं कोई यात्रा में हा निन्दित कहते हैं ॥ ४३ ॥

[मु०प्र०] अयोगे सुयोगोपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैव सिद्धिं तनोति । परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ॥४२॥

टीक–जो बुरे योग में अच्छा योग आजाय तौ बुरे योग को नष्ट करके सिद्ध देता है कोई आचार्य कहते हैं कि लग्न शुद्ध होने से कुयोगादि का नाश होता है और दुपहर पीछे भद्रा, व्यतीपात वैधृति आदि शुभ हैं ।४२ ॥

(शा.लि.) शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमीपंचदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यें परार्द्धे । कृष्णेऽन्त्यार्द्धेस्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वे भागे सप्मीशम्भुतिथ्योः ॥ ४३ ॥

शुक्ल पक्ष की अष्टमी और पूनों को पूर्वार्द्ध तथा एकादशो चौथ की उत्तरार्द्ध में भद्रा रहती है कृष्ण पक्ष को तीज और दशमीउत्तराध्र्द तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भो भद्रा रहती है ।

(शा.दू.)पंचद्व्यद्रिकृताष्टरामरस भूयामादिघटयः शरा विष्ठ रास्यमसग्द्जेन्दुरसरामाद्र्यश्त्रबाणाग्धिषु । यामेष्वंत्यघटीत्रय शुभकर पुच्छं तथा वासरे विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ चपूर्वार्धजा ॥ ४४ ॥

अब भद्राका मुख पुच्छ कहते हैं ।

चतुर्थी से आदि लेकर तिथियों के पांचमें दूसरे, सातवें, चौथे आठवें तीसरे छटे और पहर के आदि की ५ घड़ी भद्रा का मुख है

वह अशुभ है और आठवें, पहिले, छटे, तीन घड़ी शुभ हैं उनकी पुच्छ संज्ञा है, उदाहरण, जैसे चौथक दिन पांचवे पहर के आदिकी ५ घड़ी भद्रा का मुख है अष्टमी को दूसरे पहर को आदि की ५ घड़ी एकादशी का सातवें पहर के आदिकी पूनो को चौथे पहर के आदिका तीज को आठवे पहर के आदिकी सप्तमी को तीसरे पहर के आदिकी चौदश को पहले पहर के आदिकी ५ घड़ी भद्रा का मुख है ये अशुभ है। इसी प्रकार चौथ के दिन आठवें पहर के अन्य की तीन घड़ी अष्टमी को पहिले पहर की एकादशी को छटे पहर की पूर्णमासी को तीसरे पहर को तीज को सातवें पहर की सप्तमी को दूसरे पहर की पांचवें पहर की चौदश को चौथे पहर के अन्त्य की ३ घड़ी पुच्छ हैं ये शुभ है ॥ ४४ ॥

(अ) कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे ॥
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रातत्रैव तत्फलम् ॥४५॥

भद्रा का निवास और फल कहते हैं।

टीका—कुंभ मीन कर्क और सिंह इनका चन्द्रमा होय तो मनुष्य-लोक में, मेष, मिथुन, वृश्चिक, इनका चन्द्रमा होय तो स्वर्ग में, कन्या, धन, तुला, मकर इनके चन्द्रमा में पाताललोक में भद्रा रहती है और जहां भद्रा रहती है होंव उसका फल होता है ॥४५॥

कुम्भ.	मीन.	कर्क सिंह	भद्रापृथि म
मेष	वृषभ.	मिथुन बृश्च	भद्रा स्वर्ग
कन्या.	धन.	तुला मकर	भद्रापाताल

(शा) वाप्यारामतडागकूपभवनारंभप्रतिष्ठे व्रतारभोत्सर्गवधूप्रवेशन महादानानि सोमाष्टके ॥ गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्म वेदव्रतं नीलोद्वाहमथातिपन्न शिशुसंस्कारान् सुरस्थापनम् ॥ ४६ ॥ दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं संन्यासाग्निपरिग्रहो नृपतिसं-

दर्शाभिषेकौ गमम् ॥ चातुर्मास्यसमावृत्ती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद्वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ॥ ४७ ॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म बयाते हैं ॥

टीका—गुरु और शुक्र के अस्त में, और इनकी बाल्यावस्था और बृद्धावस्था में, क्षयमास और अधिक मास में ये काम वर्जित हैं, बावली, बगीचा, तालाब, कूआ, मकान इनका बनाने का आरंभ और उद्यापन, वधूप्रवेश, सोलह महादान, सोमयाग अष्टकाश्राद्ध, के शान्त संस्कार, नवीन अन्न से यज्ञ करना, प्याऊ लगाना प्रथमहीश्रावणी कर्म करना, महानाम्नोव्रत, वृषोत्सर्ग, जिनका समय निकल गया ऐसे बाककों के संस्कार जातकर्मादि, और देवताओं का स्थापन, मंत्रदीक्षा यज्ञोपवीत, विवाह, मुंडन, पहिले पहल देवता और तीर्थों का दर्शन, सन्यास लेना, अग्निसंधान राजा का दर्शन, राज्याभिषेक, पहिले पहल यात्रा चातुर्मास्यनामक यज्ञ, समावर्तन, कर्णवेध, दिव्य परीक्षा इनका त्याग करे ॥ ४७ ॥

सिंह के गुरु में वर्जित कर्म कहते हैं-

(शा.) अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे ॥ गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ॥ ४८ ॥

जो काम वृहस्पति और शुक्र के अस्त में वर्जित हैं वे सिंह और मकर के वृहस्पति में भी वर्जित हैं और किसो आचार्यके मतसे वृहस्पतिके वक्री होने में और अतीचार में भी वर्जित हैं ॥ गुर्वादित्य में और तेरह दिन के पक्ष में भी ये कार्य वर्जित हैं हाथो दांत को चूड़ी और रत्न और सुवर्ण के आभूषण भी वर्जित ॥४८॥

सिंह को वृहस्पति का हरिहार करते हैं—

(इ:) सिंहेगुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत् ॥ भागीरथीयाम्यतटे हि दोषो नान्यत्रदेशे तपनेऽपि मेषे ॥४९ ॥

टीका—सिंह के वृहस्ति में सिंह के नवांशक में ही विवाह नेष्ट हैं और नवांशकों में नहीं, दूसरा परिहार कहते हैं। गोदावरी के उत्तर किनारे पर और गङ्गाजो के दाहिने किनारे पर जो देश हैं उनमें वर्जित हैं और जगह नहीं, तीसरा परिहार यह है कि मेष के सूर्य में सिह के वृहस्पति का दोष नहीं है ॥४९॥

[ञ.] मघादिपश्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निंदितः ॥
गंगागोदांतरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृतम् ॥५०॥
मेषेऽर्के सन् व्रतोद्वाहौ गंगागोदांतरेऽपि च ॥
सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिंगे गौड़गुर्जरे ॥ ५१ ॥

टीका—चार चरण मघा के और एक पूर्वाफाल्गुना का इनमें वृहस्पति सब जगह निन्दित है बाकी के चार चरणों में निन्दित नही है गंगा और गोदावरी को छोड़कर अर्थात् गङ्गा और गोदावरी के बीच में पूराहीनिषिद्ध है ॥५०॥ मेष सूर्य में तो गंगा और गोदावरो के बीच में भी व्रत और विवाह श्रेष्ठ हैं कलिंगदेश और गुजरात इनमें संम्पूर्ण सिंह का बृहस्पति बर्जित है ॥५१॥

मक के गुरु का परिहार कहते हैं--

(शा.) रेवापूर्वे गंडकीपश्चिमे च शोणस्योद्ग दक्षिणे नीच इज्यः ॥ वर्ज्यो नायं कोंकणे मागधे च गौडे सिंधौ वर्जनीयः शुभेषु ॥५२॥

रेवानदी के पूर्व में और गंडकी के पश्चिम में और शोण-नदी के उत्तर और दक्षिण में नीच का बृहस्पति वर्जित नहीं है कौंकण, मागध, गौड़ सिंध इनमें शुभ कार्य में वर्जित है ॥५२॥

[वं.] गोजांत्यकुम्भेतरभेऽतिचारगो नो पूर्वराशिं गुरुरेति वक्रितः ॥ तदा विलुप्ताब्द इहातिनिंदितः शुभेषु रेवासुर निम्नगांतरे ॥ ५३ ॥

टीका--वृष, मेष, मीन, कुम्भ, इन राशियों को छोड़कर अति चार से मिथुन आदि राशियों पर चला जाय और वक्री होकर पहिली राशि पर न आवै तौ लूप्त सम्वत् होता है यह शुभ कार्य में निन्दित है रेवा और गंगाजी के बीच में ही निन्दित है और जगह नहीं ॥५३॥

वार प्रवेश कहते हैं--

[उ.] पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयो दिनार्धतः ॥ ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैः पलैरूर्ध्वं तथाधो दिनप प्रवेशनम् ॥ ५४ ॥

जिस देश में वार प्रवेश जानना होय वह देश भूमध्य रेखा से जितने योजन पश्चिम या पूर्व होय उन योजनओं में से उनका चौथाई घटादेय वे पल होते हैं उन पलोंको जो अपना नगर मध्य रेखा से पश्चिम होय तो पन्द्रह घड़ी में जोड़ देय और पूर्व होय तो १५ घड़ी में से घटाय देय फिर दिनार्ध से उसका अन्तर करें जो दिनार्ध अधिक होय तौ दिनार्ध में से उसे घटावें और जो दिनार्ध कमती होय तौ दिनार्ध को उसमें से घटावें वे १५ घड़ी जो दिनार्ध से कम होंय तौ सूर्योदय के बाद वार प्रवेश जानना और जो अधिक होंय तौ पहिले जानना

उदाहरण जैसे मथुरामध्य रेखा से २० योजन पुर्व में है इसका चौथाई ५ इसमें से घठाया तौ १५ हुये ये पल हैं इनको पूर्व होने से १५ घड़ी में से घटाया तौ १४।४५ हुए इनको दिनार्द्ध १६।० में से घटाया तौ १।१५ शेष रहा दिनार्द्ध १५ घड़ी से अधिक है इसलिए सुर्योदय के एक घड़ी और १५ पल पीछे वार प्रवेश जानना ॥ ५४ ॥

रव्यादिकवारों भौमादिका दान करने के लिए काल होरा कहते हैं—

(अ.) वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाच्चहृच्छेषवर्जिताः ॥
सैकास्तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात् क्रमात् ॥ ५५ ॥

टीका—जिस समय वार प्रवेश हुआ होय उस समय से लेकर जितना इष्ट की घड़ी होंय उनको दूनो करके दो जगह रख देय एक में ५ का भाग देय जो शेष बचै उसको दुसरी जगह रक्खे हुए दुगुने अंक में से घटावे और उसमें एक जोड़ कर ७ का भाग देवै जो शेष बचै वही वर्तमान वार से गिनकर काल होरेश जानैं ॥ ५५ ॥

(शा.) वारे प्रोक्तं कालहोरासु तस्य धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामि-तिथ्यंशकेऽस्य ॥ कुर्याद्दिक्शूलादि चिंत्यं क्षणेषु नैवो-ल्लंध्यः पारिघश्चापि दंडः ॥५६॥

जो काम वार में कहा है वह उसकी काल होरा में कर लेय और जो काम किसो नक्षत्र में कहा है और उस नक्षत्र में कोई दोष आजाय तौ उस नक्षत्र के स्वामी की कालहोरा में कर लेय परन्तु उस मुहूर्त में दिकशूल आदि का विचार कर लेय परिघ और दंडयोग का उल्लंघन न करै ॥५६॥

अब मन्वादि और युगादि तिथि कहते हैं—

मन्वाद्यास्त्रितिथी मधौ तिथिरवी ऊर्जे शुचौ दिक्—

तिथि ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्विषे नव तपस्यश्वाःसहस्ये शिवा ॥ भाद्रेऽग्निश्च शिते त्वमाष्ट न भसः कृष्णे युगाद्याः सिते गोऽग्नी बाहुलराधयोर्मदनदर्शौ भाद्रमाघासिते ॥५७॥

टीका—चैत्र शुक्लपक्ष में ३। १५ कार्तिक शुक्ल में १५। १२ आषाढ़ शुक्ल में १०। १५, ज्येष्ठ और फाल्गुन में १५ आश्विन में ९ माघ में ७ पौष में ११ भादों सुदी में ३ श्रावण कृष्णपक्ष में ३०। ८ ये मन्वादि तिथि हैं। कार्तिक शुक्लपक्ष में ९ वैशाख शुक्ल में ३ भाद्रपद कृष्ण १३ माघ कृष्ण ३० ये युगादि तिथियां हैं।

इति महूर्तचितामणि टीकायां प्रथम प्रकरणम्।

———

अथ नक्षत्र प्रकरणम्

नक्षत्रों के स्वामी कहते हैं—

(शा.) नासत्यांतकवन्हिधातृशशभृद्रुद्रातितीज्योरगा ऋक्षेशाः पितरा भगोर्यमरवित्वष्टाशुगाश्च क्रमात् ॥ शक्राग्नी खलु मित्रशक्रनिऋतिक्षीराणि विश्वे विधि गोविंदो वसुतोऽयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥१॥

टीका—अश्विनी नक्षत्र का स्वामी अश्विनी कुमार भरणी का यम, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा मृगशिरका चन्द्रमा, आद्रा के शिव, पुनर्वसु को अदिति, पुष्य के बृहस्पति, अश्वलेषा के सूर्य, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी का भग, उत्तरा फाल्गुनी का अर्यमा, हस्त का सूर्य, चित्रा का त्वष्टा, स्वाती का पवन, विशाखा के इन्द्र और अग्नि, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा का इन्द्र, मूल के राक्षस, पूर्वाषाढ के जल उत्तराषाढ़ के वश्वदेवा, श्रवण का विष्णु धनिष्ठा के वसु शतभिषा क

बरुण पूर्वा भाद्रपद के अहिर्बुध्न्य रेवती के पूषा ये क्रम से नक्षत्रों के स्वामो हैं ॥१॥

नक्षत्र	तारा	रूप	देवता	अवकहड़ा चक्र	गण	योनि	नाड़ी
अश्वनो.	३	घोड़ा	देवता	चूचेचोला	दे.	अश्व	१
भरणी	३	भग	अश्वनीकुमार	लीलूलेलो	मनु	गज	२
कृत्तिका	६	छुरी	यमराज	अइउए	राक्ष.	छाग	३
रोहणी	५	गाढा	अग्नि	ओवावीवू	म.	नाग	३
मृग	३	हरिण	ब्रह्मा	वेवोकाकी	दे.	नाग	२
आर्द्रा	१	मणि	चन्द्रमा	कुघङछ	म.	श्वान	१
पुनर्वसु	४	कमान	शिव	केकोहाही	दे.	मार्जार	१
पुष्य	३	बाण	अदिति	हूहेहोडा	दे.	छाग	२
अश्लेषा	०	चक्र	वृहस्पति	डीडूडेडा	रा.	मार्जार	३
मघा	५	घर	सर्प	मामीमूमे	रा.	मूषक	३
पू. फा.	२	मजा	पितर	मोटाटीटू	म.	मूषक	२
उ. फा.	२	बिलार	भग	टेटोपापी	म.	गौः	१
हस्त	५	हाथ	अर्यमा	पूषणठ	दे.	महिषी	१
चित्रा	१	मोती	सूर्य	पेपोरारी	रा.	व्याघ्र	२
स्वाती	१	मृगा	त्वष्टा	रूरेरोता	दे.	महिषी	३
विशाखा	४	तारण	पवन	तीतूतेतो	रा.	व्याघ्र	३
अनुराधा	४	भात	मित्र	ननीनूने	दे.	मृग	२
ज्येष्ठा	३	कुन्डल	इन्द्राग्नि	नोययीयू	रा.	मृग	१
मूल	११	सिंहपुछ	राक्षस	ययेभाभी	रा.	स्वान	१
पूर्वा षाढा	[illegible]	हाथीदांत	जल	मूधफण	म.	मर्कट	२
उ. षा.	२	मंजा	विश्वेदेव	भेभोभभी	म.	नोला	०
अभिजित	३	त्रिकोण	विधि	जूजेजोख	दे.	नोला	३
श्रवण	३	बामन	विष्णु	खिखूखेखौ	दे.	बानर	३
धनिष्ठा	५	मृदंग	वसु	गगीगूगे	रा.	सिंह	२
शततारका	१००	वृभ	वरुण	गोससीसू	रा.	अश्व	१
पू. भा.	२	मंजा	अजपाद	सेसोदादी	म.	सिंह	५
उ. भ.	२	यमल	बहिबूंध्य	दुथझञ	म.	गौः	२
रेवती	३२	मृदंग	पूषा	देदोचची	दे.	गज	३

(अ) उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।

तत्र स्थिरं बीजगेहशांत्यारामादि सिद्धये ॥२॥

टीका–तीनों उत्तारा रोहणी और रविवार इनकी ध्रुव और स्थिर संज्ञा है इनमें स्थिर काम बीज बोना घर बनवाना शान्ति आदि करना अच्छा है ॥ २ ॥

चर संज्ञक नक्षत्र कहते हैं—

(अ) स्वात्यादि श्रुतेस्त्रीणि चंद्रश्चापि चरं चलम् ।

तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥३॥

स्वाति, पुनर्वस और श्रवण से तीन, सौमवार इनको चर और चल संज्ञा है, इनमें हाथी आदि पर चढ़ना और बगीचा आदि में जाना श्रेष्ठ है ॥ ३ ॥

उग्र नक्षत्र ये हैं

[अ] पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा ।

तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि । विषशस्त्रदि सिध्यति

तोनों पूर्वा, भरणी मघा, और मंगलवार इनकी क्रूर उग्र संज्ञा है इनमें घात चलना, अग्नि लगाना दुष्ट कर्म करना विष देना शस्त्र चलाना इत्यादि सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

(अ.) विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतिम् ।

तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्धये ॥ ५ ॥

विशाखा, कृत्तिका, बुधवार, इमकी मिश्र और साधारण संज्ञा हैइनमें अग्निहोत्र और मिश्र जो किसी नक्षत्र में कहा होय और वृषोत्सर्ग आदि करने चाहिये ॥ ५ ॥

लघु संज्ञक नक्षत्र कहते हैं—

[अ.] हस्ताशिवपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।

तस्मिन् पण्यरतिज्ञान भूषाशिल्पकलादिकम् ॥६॥

टीका—हस्त अश्विनी, पुष्य, अभिजत् और गुरुवार इनको क्षिप्र, लघु संज्ञा है इसमें व्यापार, मैथुन, आभूषण कारीगरी का ये श्रेष्ठ हैं ॥ ६ ॥

मृदु-नक्षत्र कहते हैं—

(अ.) मृगांत्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ॥
तत्र गीतांबरक्रीडा मित्रकार्यविभूषणम् ॥७॥

मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा. और शुक्रवार इनकी मृदु संज्ञा है उसमें गान विद्या, वस्त्र पहिनना, मित्र कार्य, शृङ्गार आदि करना श्रेष्ठ है ॥७॥

तीक्ष्ण नक्षत्र कहते हैं—

(अ.) मूलेंद्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ॥
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ ८ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, और शनिवार इनकी तीक्ष्ण दारुण संज्ञा है इनमें अभिचार, मारण, भयंकर कर्म, भेद मित्रों में कलह करना, पशु को वधिया कराना इत्यादि करने चाहिए ॥८॥

(व.) मूलाहिमिश्रो ग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरि-
त्रयं ध्रुवम् ॥ तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्वि-
भानीदृशकृत्यमेषु सत् ॥ ९ ॥

टीका—मूल, आश्लेषा. मिश्र (कृत्तिका विशाखा और उग्र संज्ञक (तीनों पूर्वा, मघा, भरणी, इनको अधोमुख नक्षत्र कहते हैं. आर्द्रा, पुष्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी और तीनों उत्तरा, इनको ऊर्ध्वमुख कहते हैं अनुराधा, हस्त, स्वाति, पुनर्वसुज्येष्ठा और अश्विनी इनको तिर्यङ्मुख कहते हैं इनके नामानुसार ही काम इनमें करने चाहिए ॥९॥

मूंगा हाथीदांत आदिके धारण का मुहूर्त—

(व.) पौष्णध्र वाश्विकरपंचकवासवेज्यादित्ये प्रवालरद-शंखसुवर्णवस्त्रम् ॥ धार्यं विरिक्तशनिचंद्रकुजेन्हि रक्तं भैमे ध्रु वादितियुगे सुभगा न दध्यात् ॥१० ॥

रेवती, रोहिणी, तीनों उत्तारा, आश्विनी, हस्त से पांच, धनिष्ठा, पुष्य, पुनर्वसु, इनमें मूंगा, हाथीदांत की चूड़ी शंख, सुवर्ण के गहने और सफेद वस्त्र इनको धारण करे रिक्त तिथि, शनि और सोमवार, मंगलवार के दिन रोहणी, पुनर्वसु, और पुष्य इन नक्षत्रों में सुहागिल स्त्री रंगा वस्त्र न पहिने ॥ १० ॥

वस्त्र के जलने का दोष कहते हैं

(शा,) वस्त्राणां नवभागकेषु च चतुष्कोणेऽपरा राक्षसा मध्यत्र्यंशगता नरास्तु सदशे पाशे च मध्याशयोः । दग्धे वा स्फुटितेंऽवरे नवतरें पंकादिलिप्ते न सद्रक्षोंशे नृसुरांशयोः शुभमसत् सर्वांशके प्रांततः ॥ ११ ॥

टीका—वस्त्र में नौ भाग होते हैं चारों कोनों में देवता रहते हैं बीच के तीनों भागों में राक्षस होते हैं और बीच के भाग के पास में मनुष्यों को भाग होता है, जो नवीन वस्त्र राक्षसों के भाग में जल जाय, फट जाय अथवा कीच में सन जाय तो अशुभ है देवता और मनुष्य के अन्श में श्रेष्ठ है सब के अन्श के प्रान्त में कोई दोष होय तो भी अशुभ है उसको धारण नहीं करना चाहिए ॥११॥

दूषित दिन में धारण करने की विधि—

(अ) विप्राज्ञया तथोद्राहे राज्ञा प्रीत्यार्पितं च यत् ॥

निंद्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ वस्त्रं धार्यं जगुर्बुधाः ॥ १२ ॥

टीका—ब्राह्मणों की आज्ञा से तथा बिबाह में और किसी राजा ने जो प्रीति से दिया होय तो निन्दित वार और नक्षत्र में भी बस्त्र को धारण करै ये पंडितों ने कहा है ॥२०॥

[शा.] राधामूलमृदु ध्रु वर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोऽथो नृपदर्शनं ध्रु वमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ॥
तीक्ष्णोग्राबुपभेषु मद्यमुदितं क्षिप्रांत्यवन्हीद्रभादित्यें-
द्रांबुपवासवेषु हि गवां शस्तः क्रयो विक्रयः ॥१३॥

टीका-विशाखा, मूल, चित्रा अनुराधा, मृगशिर, रेवती, रोहिणी तीनोंउत्तरा, शतभिषा, अश्विनी, पुष्य अभिजित, इन नक्षत्रों में वेल और बृक्ष का लगाना श्रेष्ठ है, तीनोंउत्तरा, रोहिणी, चित्रानुअराधामृगशिर, रेवती, पुष्यहस्त, श्रवण, धनिष्टा इनमें राजा से मिलना श्रेष्ठ है, और मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, मघा, भरणी, शतभिषा इन नक्षत्रों में मदिरा का, व्यापार या सेबन श्रेष्ट है अश्बिनी, पुष्य, हस्त रेवती, विशाखा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा शतभिषा, इनमें गौ का बेचना खरीदना शुभ है ॥१३॥

पशुओं की रक्षा का मुहूर्त—

(इं) लग्ने शुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षापशूनां निजयोनिभे चरे ॥ रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रु वत्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशनं न सत् ॥ १४ ॥

टीका—लग्न शुभ होय अष्टम घर शुद्ध होय अपनी योनिका

नक्षत्र होय जैसा कि विवाह प्रकरण में योनिचक्र कहा है उससे योनिका नक्षत्र जानना । चार संज्ञक नक्षत्र होय तब पशुका रखना शुभ है रिक्ता, ग्रष्टमी, ग्रमावस्या, मंगल, श्रवण, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र ग्रौर चित्रा इन नक्षत्रों में पशुका घर से बाहर निकालना ग्रौर प्रवेश करना शुभ नहीं है ।। १४ ।।

ग्रौषधि का मुहूर्त-

(मं.) मषज्यं सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यंगलग्ने शुक्रेद्वीज्ये
विदि च दिवसे चाऽपि तेषांखेञ्च ।। शुद्धे रिष्फे
द्यु नमृतिगृहे सत्तिथौ नोजनेभें सूचीकर्माप्यदितिवसुभे
तत्त्वमैत्राश्विधिष्णये ।।१५।।

हस्त, पुष्य, ग्रश्विनी, चित्रा, मृगशिर ग्रनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाती, पुनर्वसु मूल, इन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र होय, मिथुन कन्या, धन, मीन, ये लग्न होंय, रवि चन्द्र, बुध गुरु, शुक्र, ये वार होंय, ग्रौर चन्द्र, बुध, गुरु शुक्र ये द्विस्वभाव लग्न में बैठे होंय ग्रौर सातवां, ग्राठवां, बारहवां, घर शुद्ध होय श्रेष्ठ तिथि होय ग्रौर जन्म नक्षत्र होय नहीं तौ उसमें ग्रौषधि का सेवन करना श्रेष्ठ है पुनर्वसुः चित्रा, धनिष्ठा ग्रनुराधा, ग्रश्विनी, इनमें दरजी के यहां कपड़ा सिलाना या नवीन वस्त्र धारण करना श्रेष्ठ है ।।१५।।

(ग्र.) क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे क्रयोऽपि न ।।
पौष्णांबुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ।। १६ ।।

टीका-खरीदने के नक्षत्र में बेचना शुभ नहीं है ग्रौर बेचने के नक्षत्र में खरीदना ग्रच्छा नहीं है रेवती, शतभिषा, ग्रश्विनी स्वातीं, श्रवण, चित्रा, ये नक्षत्र माल के खरीदने में शुभ हैं ।।१६।।

विक्री करना और दुकान का मूहूर्त

(अ) पूर्वा द्वीशकृशानुसार्पयमभे केन्द्रत्रिकोणे शुभैः
षट्त्र्याये ऽष्वशुभैर्विना घटतनुं सन् विक्रयः सत्तिथौ ॥
रिक्ता भौमघटान्विता च विपाणिर्मित्रध्रु वक्षिप्रभैर्लग्ने
चंद्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्व्यायखे ॥ १७ ॥

तीनों पूर्वा, विशाखा कृत्तिका, आश्लेषा, भरणी, इनमें से कोई नक्षत्र होय केन्द्र और त्रिकोण में शुभ ग्रह होंय छठे, तीसरे और ग्यारहवे घरमें पाप ग्रह होय कुम्भ लग्न को छोड़कर और लग्न होय श्रेष्ठ तिथि में बेचना शुभ है और दुकान के मूहूर्त में रिक्ता तिथि मङ्गल वार और कुंभलग्न न होय, चित्रा, अनुराधा मृगशिर, रेवती, रोहिणी, तीनों उत्तर अश्विनी, पुष्य हस्त, ये नक्षत्र होय लग्न में चन्द्रमा और शुक्र होंय आठ में और बारह में घर में पाप ग्रह नहीं होंय और दूसरे, देशमे ग्यारहमे घर में शुभ ग्रह होंय तो दुकान खोलना श्रेष्ठ है ॥१७॥

हाथी घोडे के बेचने खरीदने का मुहूर्त-

(इ) क्षिप्रांत्यवस्विंदुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ॥
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्थं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् १८

अश्विनी. रोहणी, पुष्य, हस्त, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिर, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में रिक्ता तिथि और मंगल वार को छोड़कर और वार में श्रेष्ठ है घोडे का बेचना खरीदना श्रेष्ठ है और चित्रा, अनुराधा, मृगशिर रेवती, अश्विनी पुष्य हस्त श्रवण धनिष्ठा शतभिषा, पुनर्वसु और स्वाती इन नक्षत्रों में हाथी की सवारी आदि श्रेष्ठ है ॥१८॥

(शा.)स्याद्भूषाघटनं त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रु वे रत्नयुक्तरौ दणोग्रवि

हीनभे रविकुजे मेषालिसिंहे तनौ ॥ तन्मुक्तासहितं चरध्रु वमृदुक्षिप्रे शुभे सत्तनौ तीक्ष्णोग्राश्विमृगेद्विदैव वदहिने शस्त्रं शुभं घट्टितम् ॥ १६ ॥

त्रिपुष्कर योग, श्रवण, धनिष्टा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाती, पुष्य, अश्विनी, हस्त, रोहणी, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में आभूषण बनवाना श्रेष्ठ है और जो जड़वाना होय तौ मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, तीनों पूर्वा मघा और भरणी, को छोड़कर और नक्षत्रों में ऐतवार या मंगलवार मेष, वृश्चिक, सिंह इन लग्नों में शुभ है और जो उसमें मोती लगवाने होंय ता चर ध्रुव, मृदु क्षिप्र, इन नक्षत्रों में और शुभलग्न में श्रेष्ठ है मूल ज्येष्ठा आर्द्रा, आश्लेषा, तोनों पूर्वा, भरणी, मघा आश्विनी मृगशिर, और विशाखा, इनमें शस्त्र का गढवाना शुभ है ॥१६॥

सिक्का ढलवाने और कपड़ा धुलवाने का मुहूर्त ॥

(स्रग्धरा) मुद्राणां पातनं सद् ध्रु वमृदुचरभक्षिप्रभैर्वीन्दुसौरे घस्रे पूर्णाजयाख्ये न च गुरुभृगुजास्तेविलग्ने शुभैः स्यात् ॥ वस्त्राणां क्षालनं सद्वसुहयदिनकृत्पंचकादित्यपुष्ये नो रिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषु कार्यं कदापि । २० ।

टीका—रोहिणी, तीनों उत्तरा, मृगशिर, रेवती, और चित्रा अनुराधा स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, शतभिषा, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजित सोम और शनिवार को छोड़कर ५ । १० । १५ । ३ । ८ ॥ १३ । इन तिथियों में बृहस्पति और शुक्रके अस्त न होने पर और लग्न में शुभ ग्रह होने पर सिक्का ढलवाना शुभ है धनिष्ठा, अश्विनो, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्रों में वस्त्रों का धुलवाना शुभ है रिक्ता-तिथि, पर्व और षष्ठी अमावस्या, शनिवार और रविवार इनमें वस्त्र न धुलवावै ॥२०॥

[स्रग्धरा] संधार्याः कुंतवर्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्योविरिक्ते
शुक्रेज्याऽर्केऽन्हि मैत्रध्रु वलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे ॥
स्युर्लग्ने हि स्थिराख्ये शशिनि च शुभदृष्टे शुभैः केंद्रगैः
स्याभ्दोगःशय्यासनादेर्ध्रु वमृदुलघुहर्यंतकादित्यइष्टः।२१।

खड्ग आदि धारण करने का मुहूर्त-

रिक्तातिथि को छोड़ कर शुक्र, बृहस्पति, रविवार में अनुराधा, ध्रुव लघुसंज्ञक नक्षत्र सहित पुनर्वसु ज्येष्ठा बिशाखा ये नक्षत्र होंय स्थिर लग्न होय और शुभग्रह से देखा हुआ, चन्द्रमा होय और शुभग्रह केन्द्र में होय ऐसे मुहूर्त में फरसा, कवच, धनुषबाण, तलवार छुरी, धारण करनी चाहिए और ध्रुव मृदु लघु संज्ञक, श्रवण, भरणी, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में शय्या आसन, खड़ाऊँ इनका प्रयोग करना श्रेष्ठ है ॥२१॥

अन्ध आदि नक्षत्रों कीं संज्ञा

[शार्दू] अंधाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमांत्याभिधं मंदाक्षं
रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचांद्रं भवेत् ॥ मध्याक्षं शिव-
पित्रजैकचरणत्वाष्ट्रे द्रविध्यंतकं स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवो-
दहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥ २२ ॥

धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढा, विशाखा-उत्तरा फाल्गुनी, रेवती ये अन्धाक्ष है हस्त, उत्तराषाढा, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिर, इतने नक्षत्र मन्दाक्ष हैं आर्द्रा मघा, पूर्वाभाद्रपद चित्रा ज्येष्ठा, अभिजित, भरणी ये मध्याक्ष हैं स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद मूल, पूर्वाफाल्गुनी, ये स्वक्षसंज्ञक हैं ॥२२॥

फल कहते हैं ।

(अनु) विनष्टार्थस्य लभोंऽधे शीघ्रं मदेप्रयत्नतः ॥ स्याद्दूर
श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने ॥ २३ ॥

टीका—अंधनक्षत्र में खोई वस्तु जल्दी मिल जाय और मन्द नक्षत्र में खोई वस्तु यत्न करने से मिले मध्य नक्षत्र में गई वस्तु का दूर से श्रवण होता है और सुलोचन में गई वस्तु का पता नहीं लगता ॥२३॥

द्रव्य के देने में निषिद्ध नक्षत्र—

(अनु.)तीक्ष्णमिश्रध्रु वोग्रैर्यद्दत्तं द्रव्यं विनश्यति ॥ प्रयुक्तंच विनष्टं च विष्टयां पाते न चाप्यते ॥२४ ॥

टीका—तीक्ष्ण संज्ञक (मूल ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा)

मिस्र (विशाखा, कृत्तिका) ध्रुव संज्ञक और उग्र नक्षत्र में दिया हुआ धन नष्ट हो जाता हैं। खोया हुआ धन भी नहीं मिलता भद्रा और व्यतीपात में गया हुआ भी धन नहीं मिलता ॥ २४ ॥

जलाशय का मुहूर्त।

शार्दू मित्रार्कध्रु ववासवांबुपमघातोयांत्यपुष्येन्दुभिः पापैर्हीन-न वलैस्तनौ सुरगुरौ ज्ञे वा भृगौ खे विधौ आप्ये सर्व जलाशयस्य खननं व्यंभोमघैः सेंद्रभैस्तै र्नत्यं हिबुके शुभैस्तनुगृहे ज्ञेऽब्जे ज्ञराशौ शुभम् ॥ २५ ॥

टीका—अनुराधा, हस्त, तीनों उत्तरा, रोहिणी, धनिष्ठा शतभिषा, मघा, पूर्वाषाढा, पुष्य, और मृगशिर, इनमें से कोई नक्षत्र होय और पाप ग्रह निर्वल होंय लग्न में बृहस्पति बुध या शुक्र होय लग्न से दशमघर जलचर राशि होय और उसमें चन्द्रमा होय ऐसे मूहूर्त में सब जलाशयों का खुदवाना शुभ है, अब नृत्य का मुहूरत करते हैं पूर्वाषाढा, मघा को छोड़कर ज्येष्ठा सहित पूर्वोक्तनक्षत्रों में लग्न से चौथे शुभग्रह होय अथबा शुभग्रहों की दृष्टि होय और चन्द्रमा बुधकी राशिका होय तौ इसमें नृत्यारंभ करना शुभ होता है ॥२५॥

(शालि] क्षिप्रे मैत्रे विस्तिताऽर्केज्यवारे सौम्ये लग्नेऽर्के कुजे वा खलाभे ॥ योनेमत्र्यां राशिपोश्चापि मैत्र्यां सेवा कार्या स्वामिनः सेवकेन ॥ २६ ॥

हस्त, पुष्य, अभिजित, अश्विनी, चित्रा, अनुराधा मृगाशिर, रेवती, इन नक्षत्रों में रवि, बुध, बृहस्पति शुक्र ये वार होंय शुभ ग्रह युक्त लग्न होय सूर्यदशम अथवा ग्यारमेस्थान में होय सेवक और स्वामो के राशि स्वामियों की मित्रता होय और योनि मेवी होय तौ नौकरी करना चाहिये ॥२६॥

ऋणदेने का मुहूर्त ।

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभेकर्णत्रयाश्वेचरे लग्ने धर्मसुताष्ठशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ॥ नारे ग्राह्यमृणं तु संक्रम दिने बृद्धौ करेऽर्केऽन्हि यत्तद्वंशेयेषु भवेद्दणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ॥ २७ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञकनक्षत्र, विशाखा, पुष्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा अश्विनी, इनमें से कोई नक्षत्र होय चरलग्न होय ६ । ५ । ८ ये घर शुद्ध होंय तो रुपया उधार देना शुभ है मंगलवार संक्रान्ति का दिन, वृद्धि योग हस्तयुक्त रविवार इनमें कर्ज लैना अच्छा नहीं होता वह कभी चुकता नहीं है और बुधवार को कभो उधार देना नहो चाहिये ॥२७॥

हल चलाने का मुहूर्तः

[शादू]मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं पापैर्हीनवलैर्विचौ जललवे शुक्रे विधौ मांसाले ॥ लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे कर्काजैणधटेतनौ न्नयकरं रिक्तासु षष्ठायां तथा ॥ २८ ॥

मूल, विशाखा, मघा, चर संज्ञक, ध्रुव संज्ञक, मृदु संज्ञक क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में रवि और शनिवार को छोड़कर पाप ग्रह निर्बल होंय चन्द्रमा और शुक्रवली होंय और जल चर राशि में होंय और लग्न में गुरु होंय तो हल चलाना शुभ है और सिंह कर्क, कुम्भ, मेष, तुला, मकर, इन लग्नों में ४ । ९ । १४ । ६ इन तिथियों में हल चलाना बर्जित है इन पूर्वोक्त तिथि और लग्नों में हल चलवावे तो क्षयकारक है ॥ २८ ॥

बीज बोने का मुहूर्त

(शार्दू) एतेषु श्रुतियारुणादितिविशाखाड्गनि भौमं विना
बीजोप्तिर्गदिता शुभा त्वगुभतोऽष्टाग्नींदुरामेंदवः॥ रामें-
द्वग्नियुगान्यसच्छुभकरान्युक्तौ हलैःकौजिकाद्धाद्रामा-
ष्टनवाष्टभानि मुनिभिःप्रोक्तान्यसत्संति च ॥ २९ ॥

मंगलवार और श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा इन नक्षत्रों को छोड़कर पहिले श्लोक में कहे हुए नक्षत्रों में बीज बोना शुभ है राहु के नक्षत्र से आठ तीन, एक, तीन, एक, तीन एक, तीन और चार नक्षत्र क्रम से अशुभ और शुभ होते हैं सूर्य के त्यागे हुए नक्षत्र ३।८।९।८ नक्षत्र गिनने में क्रम से अशुभ और शुभ कहे हैं ॥ २९ ॥

फस्त खुलवाने का

(शार्दू) त्वाष्ट्रान्मित्रकभाद्द्वयेंऽप्युपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणंभौ-
मार्केज्यदिने विरेकवमनाद्यं स्याद्बुधार्की विना ॥
मित्रक्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाहे लग्नवर्गे विदो जीवस्या-
ऽपि तनौ गुरौ निगदिता धर्मक्रिया तन्दुले ॥ ३० ॥

चित्रा, अनुराधा, और रोहिणी से दो दो चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्टा, रोहिणी, मृगशिर शतभिषा । लघु संघज्ञक (हस्त, पुष्प, अश्विनी, अभिजित् श्रवण इन नक्षत्रों में मंगल गुरु रवि इन वारों में फस्त खुलवाना

श्रेष्ठ हैं और बुध, शनिवार को छोड़ और वारों में पूर्वोक्त नक्षत्रों में जुलाव और उलटी करना अच्छा हैं और अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी स्वांती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा हस्त, अश्विनी, पुष्य अभिजित् ये नक्षत्र होंय रविवार समेत शुभ वार होय बुध बृहस्पति का षडवर्ग होय लग्न में बृहस्पति होय करने वाले के बृहस्पति अच्छे होंय तौ अनुष्ठान आदि करना श्रेष्ठ है ॥३०॥

अन्न काटने का मुहूर्त—

(व.ति) तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतींदुस्वातीमघोत्तरज-
लांतकतक्षपुष्ये ॥ मंदाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ३१ ॥

मूल ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वाभाद्रपदा, हस्त, कृतिका श्रवण धनिष्ठा, मृगशिर, स्वाती, मघा, उत्तरा, शतभिषा, भरणी, चित्रा और पुष्य इन नक्षत्रों में शनि और मंगल को छोड़ रिक्ता तिथि को छोड़कर स्थिर लग्न में अन्न काटना शुभ है ॥३१॥

दांय चलाने का मुहूर्त

(व.ति) भाग्यार्थमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्रांत्यभेषु कथितं
कणमर्दनं सत् ॥ द्वीशाजपान्निऋतिधातृशतार्यमर्क्षे
सस्यस्य रोपणमिहार्किकुजौ विना सत् ॥ ३२ ॥

पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल अनुराधा, रेवती, इन नक्षत्रों में दांय चलवाना शुभहै विशाखा, पूर्वा भाद्रपद, मूल, रोहिणी, शतभिषा, उत्तरा फाल्गुनी इन नक्षत्रों में और शनि मंगल-के बिना और वारों में पौध लगाना शुभ है ॥३२॥

अग्निवास का मुहूर्त—

[ई.व.] सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि

वन्हिवासः ॥ सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थ नाशौ दिवि भूतले च ॥ ३३ ॥

शुक्ल पक्ष को प्रतिपदा से वर्तमान तिथि को गिनती करै और उसमें एक जोड़ै और वार जोड़ै उनमें ४ का भाग देय जो ३ या० शेष बचै तो अग्निका वास पृथ्वी पर जानना । उसमें हवन,करने से सुख होता है १ शेष बचै तो स्वर्ग में और दो शेष बचै पाताल में वास जानना इनमें क्रमसे प्राण और अर्थ का नाश जानना ॥ ३३ ॥

खत्ती भरने का मुहूर्त—

(व.ति.) मिश्रोग्ररौद्रभुजगेंद्रविभिन्नभेषु कर्काजतौलिरहिते च तनौ शुभाहे ॥ धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्य द्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः ॥ ३४ ॥

विशाखा, कृत्तिका, तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, आर्द्रा आश्लेषा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों को छोड़कर और नक्षत्रों में कर्क, मेष, तुला इनसे भिन्न लग्न में और शुभ वार में खत्ती और कोठे का भरना श्रेष्ठ है । तीनों उत्तरा,रोहिणी, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा । अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु,श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा, इन नक्षत्रों में धान्य वृद्धि करना शुभ है ॥ ३४ ॥

शान्ति पौष्टिक मुहूर्त—

[व.ति.] क्षिप्रध्रुवांत्यचरमैत्रमघासु शस्तंस्याच्छांतिकं च सह मंगलपौष्टिकाभ्याम ॥ खेऽर्के विधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो मौढ्यादिदुष्टसमयेऽशुभदं निमित्ते ॥ ३५ ॥

क्षिप्र हस्त अश्विनी, पुष्य अभिजित, रोहिणी, तीनों उत्तरा,स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा,अनुराधा और मघा इन नक्षत्रों में सूर्य लग्न से दशम चन्द्रमा, चतुर्थ, बृहस्पति लग्न में होय तब मंगल पौष्टिक

विनायक शान्ति आदि कृत्य शुभ हैं बृहस्पति और शुक्र के अस्त आदि का इसमें दोष नहीं है ॥ ३५ ॥

हौमाहुति का मुहूर्त—

(अनु.) सूर्यभात्त्रित्रिभे चांद्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः ॥ चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खल ॥ ३६ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक तीन २ नक्षत्र गिनै यदि पहिले तीन नक्षत्रों में चन्द्रमा का नक्षत्र आवै तो सूर्य की आहुति होती है दूसरे त्रिकमें बुध की तोसरे त्रिकमें शुक्र को चौथे में शनि के मुख में पांचवे में चन्द्रमा की छटे में मंगल का सातवें में गुरु की आठवें में राहु की नवें में केतु की आहुति होती है पाप ग्रह की आहुति अशुभ होती है ॥ ३६ ॥

नये अन्न खाने का मुहूर्त ॥

(अनु.) नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् ॥ बिना नन्दा विषघटी मधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ३७ ॥

टीका—चर संज्ञक (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा) क्षिप्र (हस्त, रोहिणी, पुष्य, अश्विनी, अभिजित) मृदु (मृगशिर, रेवतो, चित्रा अनुराधा,) इन नक्षत्रों में शुभलग्न में नये अन्नका भोजन करे और नंदा तिथि, विषघड़ी, चैत्र पौष महोना शनि, और मंगलवार इन में नया अन्य न खाय ॥ ३७ ॥

नौका बनाने का मुहर्त—

(अनु.) याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे ॥ भृग्वीज्यार्कदिने नौकाघटनं सत्तनौ शुभम् ॥ ३८ ॥

टीका—भरणी से तीन, विशाखा ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा, आर्द्रा इनसे भिन्न नक्षत्र होय शुक्र, बृहस्पति, रविवार हो श्रेष्ठ लग्न होय तो नौका बनाने का मुहूर्त शुभ है ॥ ३८ ॥

बीर साधन और अभिचार का मुहूर्त

(अनु.) मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृभे सौम्ये घटेतनौ ॥ सुखेशुक्रे

ष्टमे शुद्धे सिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥ ३९ ॥

टीका मूल, आर्द्रा भरणी, मघा, मृगशिर ये नक्षत्र होय और कुंभ लग्न होव उसमें शुभ ग्रह बैठे होंय लग्न से चतुर्थ घर में शुक्र होय अष्टम घर शुद्ध होय तो इसमें वीर साधन, घात, मूठ चलाना शुभ है ।

रोग निमुक्त स्नान की मुहूर्त

(व. ति) व्यंत्यदितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवींदुवारे ॥ स्नानं रुजा विरहितस्य जनस्य शस्तं हीने विधौ खलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ॥ ४० ॥

रेवती, पुर्नवसु, ध्रुव, मघा स्वाती आश्लेषा इन नक्षत्रों को छोड़कर और नक्षत्र में चर लग्न में शुक्र और चन्दवार न होय चन्द्रमा ४।६ स्थान में होय लग्न से ग्यारह में और केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह होय तो निरोग को प्रथम स्नान करना शुभ है ॥ ४० ॥

शिल्प का मुहूर्त

(अनु.) मृदुक्षिप्रध्रुवचरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे ॥ विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते ॥ ४१ ॥

मृदु संज्ञक (मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा) क्षिप्र (हस्त अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) तीनों उत्तरा रोहिणी स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा ये नक्षत्र होंय बुध, वृहस्पति दशम में और लग्न में होंय चन्द्रमा बुध वृहस्पति के वर्ग में होय तो शिल्प विद्या (कारीगरी) शुभ है ॥४१॥

संधान मुहूर्त—

(अ.) सुरेज्यमित्रभाग्येषु चाष्टम्यां तैतिले हरौ ॥ शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यवारे संधानमिष्यते ॥ ४२ ॥

पुष्य, अनुराधा, पूर्वा फाल्गुनी, इन नक्षत्रों में अष्टमी और द्वादशी तिथि में और तैतिल करण में लग्न में शुक्र होय अथवा शुक्र की दृष्टि होय और बुधवार में संधान कृत्य (मित्रता करना) शुभ है ।।४२।।

(व.ति) त्यक्त्वाऽष्टभूतशनिविष्टिकुजाऽजनुर्भमासौमृतो रविविधू अपि भानि नाड्यः ।। द्वयंगे चरे तनुलवे शशिजीवताराशुद्धौ करादितिहरींद्रकपे परीक्षा ।। ४३ ।।

टीका–८।१४ तिथि शनि और भौमवार, भद्रा, जन्म नक्षत्र जन्म मास, लग्न से अष्टम सूर्य चन्द्रमा और नाड़ी नक्षत्र इनको छोड़कर द्विस्वभाव लग्न और द्विस्वभाव नवांशक में चर लग्न और नवांशक में चन्द्रमा गुरु और तारा इनकी शुद्धि होने पर हस्त, पुनर्वसु श्रवण ज्येष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रों में परीक्षा होना बहुत शुभ है ।।४३।।

सब कार्यों में लग्न शुद्धि

(अ.ष्टु) व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते ।। चंद्रे त्रिषट्दशायस्थे सर्वारंभः प्रसिद्धियति ।।४४।।

टीका-१२।८ घर में जहां पाप ग्रह न होय ऐसी अपनी जन्म राशि और जन्म लगन होय उससे उपचय ३।६।११।१० घर शुभ ग्रहों से दृष्टि होय लग्न से उपचय में चन्द्रमा होय ऐसी लग्न में जो कार्य किया जाय वह सिद्ध होता है ।।४४।।

ज्वर का विचार

(इं बं) स्वातीद्रपूर्वाशिवसार्पभे मृतिर्ज्वरेंऽन्त्यमैत्रेस्थिरता भवेद्रुजः ।। याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवा घस्रा हि पक्षो द्व्यधिपार्कवासवे ।।४५।। मूलाहिदास्त्रेनव पित्र्यभे नखाबुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभे नगाः ।। मासोऽब्ज-

वैश्वेऽथयमाहिमूलभे मिश्रेशपित्र्ये कणिदंशने मृतिः ॥ ४६ ॥

टीका–स्वाती, ज्येष्ठा, तीनों आर्द्रा, आश्लेषा इनमें ज्वर आवै तो मृत्यु होय, रेवती और अनुराधा में ज्वर आवै तो कुछ दिन बीमारी रहै भरणी श्रवण, शतभिषा, चित्रा, इनमें ज्वर आवै तो ११ दिन रहै विशाखाहस्त ज्येष्ठा, इनमें जो ज्वर आवै तो १५ दिन रहै ॥ ४५ ॥ मूल,आश्लेषा, अश्विनी इनमें ९ दिन रहे मघा में आया हुआ २०दिन रहे उत्तराभाद्रपद उत्तरा फाल्गुनी, पुष्य पुनर्वसु, रोहिणी, इन नक्षत्रों में ७ दिन मृगशिर उत्तराषाढ़में आया हुआ १ महीना रहता है भरणी, आश्लेषा,मूल,कृत्तिका विशाखा,आर्द्रा, मघा, इनमें जो सर्प काटै तो मनुष्य मर जाता है ॥४६॥

रोगी के जल्दी मरने का योग–

(उ.जा) रौद्राहिशाक्रांबुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वाग्निषुपापवासरे रिक्ताहरिस्कंददिनेचरोगेशीघ्रं भवेद्रोगिजनस्यमृत्युः ॥४७॥

टीका–आर्द्रा, अश्लेषा, ज्येष्ठा शतभिषा, भरनी तीनों पूर्वा विशाखा, धनिष्ठा, कृत्तिका इन नक्षत्र १२ । ६ इन तिथियों में जो रोग होय तौ रोगी की शीघ्र मृत्यु होती हैं ॥४७॥

प्रेत दाहका मुहूर्त ।

[इं.शा.] क्षिप्राहिमूलेंद्रहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्याज्झषकुम्भगे विधौ ॥ प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं त्यजेच्छय्यवितानं गृहगोपनादि च ॥ ४८ ॥

क्षिप्र संज्ञक अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा श्रवण, आर्द्रा, स्वाती, इन नक्षत्रों में प्रेत क्रिया करै यह मुहूर्त उसके लिये है जिसकी मरण समय में किसी कारण क्रिया न हुई हो परन्तु कुंभ मीन के चन्द्रमा में प्रेत का दाह दक्षिण

की यात्रा, खाट बुनवाना, छप्पर छवाना, छत्त पटवाना ईंधन खरीदनाआदि वर्जित है ॥ ४८ ॥

त्रिपुष्कर योग—

(व.ति) भद्रातिथौ रविजभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादितिवन्हिवैश्वे ॥ त्रैपुष्करोभवति मृत्युविनाशवद्धौ त्रैगुरायदोदिवगुणकृद्वसुत्तचांद्रे ॥ ४६ ॥

दोज, सप्तमी द्वादशी, तिथि, शनि, मंगल, रवि ये वार विशाखा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, पुनर्वसु कृतिका उत्ताराषाढ़ा इन का सम्बन्ध होने से त्रिपुष्कर योग होता है इस तरह सप्तमी और द्वादशी में जानना यह तिगुना फल देता है मृत्यु हानि और बुद्धि में तिगुना फल जानना पूर्वोक्त तिथि और वारों में धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिर इनमें से कोई नक्षत्र आजाय तो द्विपुष्कर योग होता है वह भी दुगुना फल देता है ॥४६॥

पुत्तलदाह का निषेध और विधि—

(शार्दू) शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नंदासुतीक्ष्णोग्रभे पौष्णे वारुणभेत्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने ॥ याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यनुंक्रास्तके भद्रावैधृतयोः-शवप्रतिकृतेर्दाहोन पक्षे सिते ॥५०॥जन्म प्रत्यरितारयो-र्मृतिसुखांत्येब्जे च कर्तुर्न सन् मध्यो मैत्रभगादितित्रु व-विशाखाद्र्यंघ्रिभेज्ञेऽपि च ॥ श्रेष्ठो ऽर्केज्याविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्वात्यश्विपुष्ये तथा त्वाशौचात् परतो विचार्यमखिलं मध्ये यथासंभवम् ॥ ५१ ॥

टीका—शुक्र, मंगल, शनि, मावस, चौदश, त्रयोदशी प्रतिपदा षष्ठी, एकादशी तीक्ष्णसंज्ञक, उग्रसंज्ञक, रेवती, शतभिषा, इन नक्षत्रों में त्रिपुष्कर योग न्यूनमास अधिकमास, दक्षिणा-

यन, वर्ष के बीतनेपर, व्यतीपात, परिघ, बृहस्पति और शुक्र का अस्त, भद्रा, वैधृत और शुक्ल पक्ष इनमें पुत्तल का दाह न करै ॥ ५० ॥ जन्मतारा, प्रत्यरितारा, और जन्मराशि से चौथे आठवें बारहवें चन्द्रमा होंय तो उस क्रिया करने वाले को शुभ नहीं है ॥ अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, ध्रुव संज्ञक विशाखा, मृगशिर चित्रा, धनिष्ठा, और बुधवार इनमें मध्यम है रविवार, बृहस्पति, सोमवार श्रवण, हस्त, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, इनमें दाह करने वाले को शुभ होता है जो आशौच बीत गया होय तौ इन बातों का विचार करना चाहिये और जो १० दिन के भीतर ही किया जाय तौ यथा संभव विचार करना चाहिये ॥ ५१ ॥

अभुक्त मूल कहते हैं—

[उ.] अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठांत्यमूलादिभवं हि नारदः ॥ वसिष्ठ एकद्विघटीमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेक-घटीप्रमाणकम् ॥ ५२ ॥ अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघट्यो मूलस्य शाक्रांतिमपंचनाड्यः ॥ जातं शिशुं तत्र परि-त्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमान पश्येत् ॥ ५३ ॥

ज्येष्ठा के अत्यन्त की चार घड़ी और मूल के आदि की ४ घड़ी अभुक्त मूल संज्ञक है इसी उपलक्षण से आश्लेषा के अत्यन्त की और मघा के आदि चार घड़ी अभुक्त मूल हैं ये नारद जी का मत है ज्येष्ठा अंत्य की १ घड़ी और मूल के आदि की २ घड़ी वशिष्ठजी के मत से अभुक्त मूल है और बृहस्पति जी के मत से ज्येष्ठा के अन्त्य की १ घड़ी और मूल के आदि की १ घड़ी अभुक्त मूल है ॥५२॥ और कुछ आचार्यों ने ज्येष्ठा के अन्त्य की ५ घड़ी और मूल के आदि की ८ घड़ी अभुक्त मूल कहीं हैं इन घड़ियों में जन्में हुए बालक का मुंह पिता ८ वर्ष तक न देखे अथवा उसका त्याग करदे ॥५३॥

मूल आश्लेषा के चरणों में जन्म का फल

[उ.] आद्येपिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृ-

तीये ।। धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शांत्या सर्वत्र सत्स्या दहिभे विलोमम् ।।५४।।

मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता का नाश होता है दूसरे में माता का तीसरे में धन का चौथे में शुभ होता है शांति करने से सब शुभ है अश्लेषा में फल उलटा होता है अर्थात् अश्लेषा के चौथे चरण में पिता का नाश तीसरे में माता का दूसरे मे धन का पहिले में शुभ है ।। ५४ ।।

मूल निवास कहते हैं—

(इं) स्वर्गे शुचिप्रोष्ठपदे च माघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्र पौषे।। मूलं ह्यधस्तातात्तु तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र ।।५५।।

टीका—आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, मघा, इन महीनों में मूल का स्वर्ग में वास होता है श्रावण, कार्तिक, चैत्र, पौष, इनमें भूमि में होता है फाल्गुन, मार्गशीर्ष, वैषाख, ज्येष्ठ, इनमें पाताल में होता है, जहां मूल का निवास होय वहीं अशुभ फल होता है ।। ५५ ।।

अब गंडान्त और उसका परिहार कहते हैं—

[शा.] गंडातेंद्रभशूलपात परिघव्याघातगंडावमे संक्रांतिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके ।। वज्रे कृष्णचतुर्दशीषु यमघंटे दग्धयोगे मृतौ विष्टौ सोदरभे जर्निन पितृभे शस्ता शुभा शांतितः ।।५६।।

टीका—गंडान्त, (तिथि गंडान्त, नक्षत्र गंडान्त, लग्नगंडान्त) ज्येष्ठानक्षत्र, शूलयोग, व्यतीपात, परिघ, व्याधातगंड, क्षयतिथि, संक्रान्ति वैधृति, सिनीवाली, कुहूदर्श (ये तीनों अमावस्या के भेद हैं) वज्रयोग, कृष्णपक्ष चतुर्दशी, यमघट, दग्धयोग, मृत्युयोग, भद्रा, सहोदर भाई या बहिन के जन्म नक्षत्र, माता पिता का जन्मनक्षत्र इतने योग में बालक का जन्म शुभ नहीं होता शान्ति करने से शुभ होता है ।। ५६ ।।

अश्विन्यादि नक्षत्रों तारों को संख्या-

(उ.) त्रित्र्यंगपंचाग्निकुवेदवन्हयः शरेषुनेत्राश्विशरेंदुभूकृताः वेदाग्निरुद्राश्वियमाग्निवन्हयोऽब्धयः शतंद्विद्विरदाभतारकाः ॥५७॥

टीका-अश्विनी के ३ भरणी के ३ कृत्तिका के ६ रोहणी के ५ मृगशिर के ४ आर्द्रा के १ पुनर्वसु के ४ पुष्य के ३ अश्लेषा के ५ मघा के ५ पूर्वाफालगुनी के २ उत्तरा फालगुनो के २ हस्त के ५ चित्रा का १ स्वाती का १ विषाखा के ४ अनुराधा के ४ ज्येष्ठा के ३ मूल के ११ पूर्वाषाढ़ के ३ उत्तराषाढ़ के २ अभिजित के ३ श्रवण के ३ धनिष्ठा के ४ शतभिषा के १०० पूर्वाभाद्रपद के २ उत्तराभाद्रपद के २ रेवती के ३२ तारे आकाश में उदय होते हैं ॥ ५७ ॥

अब नक्षत्रों का आकार कहते हैं—

(उ.) अश्व्यादिरूपं तुरगास्ययौनिः क्षुरो न एणास्यमणिर्गृहं च ॥ पृषत्कचक्रे भवनं च मंचशय्याकरो मौक्तिकविद्रुमं च ॥५८॥ तोरणं बलिनिभं च कुन्डलं सिंहपुच्छगजदंतमंचकाः ॥ अस्त्रि च त्रिचरणाभमर्दलो बृत्तमंचयमलाभमर्दलाः ॥५६॥

अश्विनी का घोड़े के मुख के समान आकार, भरणी का योगि के समान कृत्तिका का उस्तरा के समान, रोहिणी का गाड़ी के समान, मृगशिरका, हिरण के मुख के समान, आर्द्रा का मणि के समान, पुनर्वसु का गृह के समान, पुष्य का बाण के समान आश्लेषा का चक्र कें समान मघा का भवन के समान, पूर्वाफाल्गुनी का मांचे के समान उत्तराफाल्गुनी का शैय्या के समान हस्त का हाथके समान आकार चित्राका मोतीके समान स्वातीका मूँगा के समान, विशाखा का तोरण के समान अनुराधा का

वलि के समान, ज्येष्ठा का कुंडल के समान, मूल का सिंह की पूछ के समान पूर्वाषाढ़ का हाथी दांत के समान, उत्तराषाढ़ का मांचे के समान, अभिजित् का त्रिकोणाकार, श्रवणका बामनजी के आकार का धनिष्ठा का मृदंग के आकार का शतिभिषाका गोलाकार, पूर्वाभाद्रपद का मांचे के समान, उत्तरा भाद्र पदका यमल के समान रेवती का मृदंग के समान आकार होता है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

जलाशय बाग देवप्रतिष्ठा का मुहूर्त–

(छ.उ.) जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशांकशुक्रे॥ दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षे सिते स्वर्क्षतिथि-क्षणेवा ॥६०॥ रिक्तारवर्जे दिवसेऽतिशस्ता ॥

जलाशय (कुआ, तालाब, बावली) बगीचा, और देवताओं की प्रतिष्ठा करनी होय तौ उत्तरायण, सूर्य होय बृहस्पति, चन्दमा, शुक्र ये दृश्य में होंय मृदु संज्ञक, ध्रुव संज्ञक, क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र होंय शुक्ल पक्ष होय जिसकी प्रतिष्ठा करनी होय उसीका नक्षत्र और क्षण होय उसमें प्रतिष्ठा शुभ है परन्तु रिक्तातिथि और मंगलवार का निषेध है।६०।

(उ.) शशांकपापैस्त्रिभवांगसंस्थैः ॥ व्ययाष्टांत्यगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रे सूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः ॥६१॥ शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च देव्यः क्षुद्राश्चरे सर्वइमे स्थिरर्क्षे ॥ पुष्ये ग्रहा विघ्नपयक्षसर्पभूतादयोऽन्त्ये श्रवणे जिनश्च ॥ ६२ ॥

इति श्रीमुहूर्त चिन्तामणौ मथुरास्य चतुर्वेद घनश्यामलाल भाषानुवादे द्वितीयं प्रकरणम् समाप्तम ।

टीका–प्रतिष्ठा की लग्न शुद्धि इस प्रकार है कि चन्द्रमा पाप ग्रह तीसरे, ग्यारहवें, छटे स्थान में होय शुभ ग्रह आठ में और बारह घर को छोड़कर और स्थान में होंय और जो

सूर्य का स्थापना करना होय तो सिंह लग्न में ब्रह्मा जी का स्थापना करना होय तो कुम्भ लग्न में और विष्णु का स्थापना होय तो कन्या लग्न में करै ॥६१॥ शिवजी का मिथुन में दुर्गा का द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धन, मीन) लग्न में और क्षुद्र देवताओं का मेष, मकर, तुला, कर्क और सब देवताओं का स्थिर-लग्न में नवग्रहों का पुष्य नक्षत्र में, गणेश, यक्ष, सर्प, भूतादि का रेवती में और बुद्धदेव का श्रवण में स्थापन करना शुभ है ॥६२॥

इति श्रीमुहूर्तचिंतामणौ मथुरास्थ चतुर्वेद घनश्याम लाल कृते
भाषा नुवादे द्वितीय प्रकरणं नक्षत्राख्यं समाप्तम्

अथ तृतीयं प्रकरणम् ।

अथ तृतीयं संक्राति प्रकरणम्

[छं.] घोरार्कसंक्रमणमुग्ररवौ हि शूद्रान् ध्वांक्षी विशो लघुविधौ च चरक्षभौमे ॥ चौरान्महोदरयुता नृपतीन् ज्ञमैत्रे मन्दाकिनी स्थिरगुरौ सुखयेच्च मन्दा ॥ १ ॥
विप्राश्च मिश्रभभृगौ तु पशूंश्च मिश्रा तीक्ष्णार्कजेंत्यजसुखा खलु राक्षसी च ॥ अंत्र्यशेदिनस्य नृपतीन्प्रथमे निहंति मध्ये द्विजांनपि विशोऽपरके च शूद्रान् ॥ २ ॥
अस्ते निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन् नक्तंचरानपि नटान्पशुपालकांश्च ॥ सूर्योदये सकललिंगिजनं च सौम्ययाम्यायनं मकरकर्कटयोर्निरुत्तम् ॥ ३ ॥

टीका उग्र संज्ञक (भरणी, मघा, तीनों पूर्वा) और रविवार के दिन जो संक्रांति होय तौ वह घोरा कहलाती है वह शूद्रों को सुख दायक होती है और लघु (अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित्) नक्षत्र में और सोमवार में जो संक्रान्ति होय तौ ध्वांक्षी होती है और वैश्यों को सुखदायक होती है और चर संज्ञक नक्षत्र और मंगल के दिन महोदरा नामक होती है वह

चोरों को सुखदायक होती है और मैत्र (मृगशिर, रेवती, चित्रा,अनुराधा) नक्षत्र और बुधवार को जो संक्रान्ति होय तौ उसकी मन्दाकिनी संज्ञा है और वह राजाओं को सुख देती है और स्थिर नक्षत्र और बृहस्पति के दिन होने से मंदा नामक होती है वह ब्राह्मणों को सुख देती है ॥ १ ॥ और मिश्र (कृत्तिका, विशाखा) और शुक्रवार को संक्रान्ति होय तौ मिश्रानाम होता हैं वह पशुओं को सुखदायक होती है, और तीक्ष्ण संज्ञक (ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, आश्लेषा) नक्षत्र और शनिवार को जो संक्रान्ति होय तौ राक्षसी नाम को संक्रान्ति होती है वह शूद्रों को सुख देती है दिन के पहिले अंश में संक्रान्ति होय तौ राजाओं को नाश करती है दूसरे अंश में होय तो ब्राह्मणों को नाश करती है तीसरे अंश में वैश्यों का और सूर्यास्त के समय संक्रान्ति होय तौ शूद्रों का नाश करती है ॥ २ ॥ अब रात्रि में संक्रान्ति का फल कहते हैं ॥ २ ॥ रात के पहिले पहर में संक्रान्ति होय तौ पिशाचों को दूसरे पहर में राक्षसों को तीसरे पहर में नटनर्तकोंको चौथे प्रहर में अहीरों को नष्ट करती है सूर्योदय के समय में संक्रान्ति होय तौ पाखन्डियों को नष्ट करती है मकर से ६ राशि में संक्रान्ति होयतौ उत्तरायण होता है और कर्क से ६ राशि तक दक्षिणायण होता है ॥३,।

[अ.] षडशीत्याननं चापनृयुक्कन्याझषे भवेत् ॥ तुलाजौ विषुवं विष्णुपदं सिंहालिगोघटे ॥४॥

धन, मिथुन, कन्या और मीनकी षड़शोत्यानन संज्ञा है मेषकी विषुव, सिंह, वृश्चिक वृष, कुम्भ की संक्रा[illegible] की विष्णुपद संज्ञा है ॥४॥

संक्रान्तिका पुण्यकाल कहते हैं–

[उ.] संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिका पुण्यां मता षोडष-षोडषोष्णगोः ॥ निशीथतोर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वापराह्णांतिमपूर्वभागयोः ॥५॥

टीका—सूर्य का संक्रान्ति से १६ घड़ी पहिली और १६ पिछली

पुण्यकाल की होती हैं अर्थात् इन्हीं ३२ घड़ियों में दान पुण्य करना चाहिये जो अर्द्धरात्रि के पहिले संक्रान्ति होय तौ पहिले दिन का अन्तिम भाग पुण्यकाल समझना और जो अर्द्धरात्रिके पीछे संक्रान्ति होय तौ दूसरे दिनका पूर्वभाग पुण्यकाल का होता है ॥ ५ ॥

(उ.) पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथोदयस्तात् । पूर्वं परस्ताद्यदि याम्यसौम्यायने दिने पूर्व परे तु पुण्ये ॥ ६ ॥

टीक–जो ठीक आधीरात पर संक्रान्ति होय तौ पहिला दिन और पिछलादिन दोनोंही दिन पुन्यकाल होता है परन्तु मकर और कर्क के सूर्य में ये नियम नहीं है कर्क की संक्रान्ति जो सूर्योदय से पहिले होय तौ पहिले दिन ही पुण्काल होता है और जो सूर्यास्त के बाद मकर की संक्रान्ति होय तौ दूसरे दिन उसका पुण्यकाल होता है पहिले दिन नहीं होता ॥६॥

(इ.) संध्या त्रिनाडीप्रतिमार्कबिंबादर्धोदितास्तादधऊर्ध्वमत्र ॥ चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात्स्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वघस्रौ ॥ ७ ॥

टीका–अर्धोदित और अर्धास्त सूर्य विंवसे आगे और पीछे तीन ३ घड़ीका संध्याकाल होता है उस समयमें जो कर्क और मकरकी संक्रान्ति होय तौ क्रमसे पिछला और पहिला दिन पुण्यकाल का होता है अर्थात् जो प्रातः संध्या के बीच में जो कर्क संक्रान्ति होय तौ सूर्योदय के पीछे पुण्यकाल होता है और जो सायं सन्ध्या में मकर संक्रान्ति होय तौ सूर्यास्त से पहिले सब दिन पुण्यकाल होता है और जो सायं संध्या के पीछे मकर संक्रान्ति होय तौ दूसरे दिन ही पुण्यकाल होता है ॥७॥

विष्णु पदादिक में विशेषता कहते हैं—

[अनु.] याम्यायने विष्णुपदे चाद्यमध्या तुलाजयोः ॥ षड-शीत्यानने सौम्ये परानाड्योऽतिपुण्यदाः ॥ ८ ॥

टीका —कर्क संक्रान्ति में और विष्णुपद (बृष सिंह वृश्चिक, कुम्भ,) संक्रान्ति में आदि की १६ घड़ी पुण्यकाल की होती हैं तुला और मेषमें मध्य की १६ घड़ी अर्थात् ८ घड़ी आदि को और ८ घड़ी पीछे की पुण्यकाल को होतो हैं और षड़शीत्यानन (मिथुन, कन्या, धन, मीन,) और मकर की आगे की १६ घड़ी बहुत पुण्यदायक होतीं हैं ॥ ८ ॥

सायानांश संक्रान्ति प्रकार—

(उ.) तथायनांशाः खरसाहताश्च स्पष्टार्कगत्या विहता दिनाद्यैः । मेषादितः प्राक्चलसंक्रमाः स्युर्दाने जपादौ बहुपुण्यदास्ते ॥ ९ ॥

टीका-अयनांशका ६० से गुणा करै और स्पष्ट सूर्य की गति को भाग देय भाग देने से दिन, घड़ी, पल, ये तीन लब्धि आवैगी वह मेषादि संक्रान्ति से पहिले हर संक्रान्ति का चल संक्रमण होता है वह दान और जपादि में बहुत पुण्य दायक होता है ॥ ९ ॥

अब नक्षत्रों की जघन्य वृहत संज्ञा कहते हैं—

(उ.) समं मृदुक्षिप्रवसुश्रवोग्निमघात्रिपूर्वासूपभं बृहत्स्यात् ॥ ध्रुवद्विदैवादितिभं जगन्यं सार्पां बुपाद्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥ १० ॥

टीका —मृदुसंज्ञक (मृगशिर, रेवती, अनुराधा, चित्रा, क्षिप्र (अश्विनी पुण्य, हस्त, अभिजित) श्रवण धनिष्ठा, कृत्तिका, मघा, तीनों पूर्वा, मूल, इन नक्षत्रों की सम संज्ञा है। ध्रुव संज्ञक (रोहिणी, तीनों उत्तरा) विशाखा, पुनर्वसु इनकी बहुत संज्ञा है और आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा स्वाती ज्येष्ठा, भरणी इनकी जघन्य संज्ञा है।

उक्त संज्ञा का प्रयोजन कहते हैं ।

(उ.) जघन्यभेसंक्रमणे मुहुर्ताः शरेन्दवो १५ वाणकृता-४५ बृहत्सु ॥ खराम ३० संख्याः समभे महघसमर्घसाम्यं विधुदर्शनेऽपि ॥ ११ ॥

जो जघन्य नक्षत्र में संक्रान्ति होय तो १५ मुहूर्ती होती है और बृहत्संज्ञक में होय तो ४५ मुहूर्ती संक्रान्ति होता है और समान नक्षत्रमें हो तो ३० मुहूर्ती होती है जो १५ मुहूर्ती संक्रान्ति होय तो अन्न तेज बिकता है और ४५ मुहूर्ती में सस्ता बिकता है और ३० मुहूर्ती में समभाव रहता है ॥ ११ ॥

[अनु.) अर्कादिवारे संक्रांतौ कर्कस्याब्दविशोपकाः ॥ दिशो नखा गजाः सूर्या धृत्योऽष्टादश सायकाः ॥१२ ॥

टीका जो सूर्यादिक वारों में कर्क संक्रान्ति होय तौ ये क्रमसे शब्द विशोपक होते हैं । जैसे रविवार को कर्क संक्रान्ति होय तौ १० सौमवार को २० मंगल को ८ बुध को १२ बृहस्पति को १८ शुक्र १८ और शनि को संक्रान्ति होय तौ ५ शब्द विशोपक होते हैं ॥ १२ ॥

अवस्था विशेष से संक्रान्ति का फल ।

(इ) स्यात्तैतिले नागचतुष्पदे रविः सुप्तो निविष्टस्तु गरादिपंचके ॥ किंस्तुघ्न ऊर्ध्व शकुनौ सकौलवेऽनिष्ट समः श्रेष्ठः इहार्घवर्षणे । १३ ।

टीका—तैलिक, नाग, चतुष्पद, करण में जो सूर्यकी संक्रान्ति होय तो सूर्य सोता हुआ जानना और गर, वनिज, विष्टि, वव, वालव इन कारणों में जो संक्रान्ति होत तौ सूर्य बैठा होता है और किंस्तुघ्न, शकुनि, कौलव करण में जो संक्रान्ति होय तो सूर्य खड़ा होता है इससे मूल्य और वर्षामें अनिष्ट, श्रेष्ठ, और समफल का देनेवाला सूर्य क्रम से होता है जैसे सोते

हुए सूर्य में संक्रान्ति होय तो अन्न तेज रहता है और वर्षा कम रहती है इसी प्रकार और भी जानना ॥ १३ ॥

सिंहादिवाहन कहते हैं ॥

(शा.) सिंहव्याघ्रवराहरासभगजा वाहद्विषद्घोटकाः श्वाजो गौश्चरणायुधश्च ववतो वाहा रवेः संक्रमे ॥ वस्त्रंश्वेत-सुपीतहारितकपांडूवारक्तकालासितं चित्रं कबलदिग्ध नाभमथ शस्त्रांस्याद्भुशुण्डीगदा ॥ १४ ॥ खड्गोदंड-शरासतोमरमथो कुंतश्च पाशोऽकुशोऽस्त्रंबाणस्त्वथ भक्ष्यमन्न परमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकम् ॥ दुग्धं दध्यपिचित्रितान्न-गुडमध्वाज्यं तथा शर्कराऽथो लेपो मृगनाभि कुंकुममथो पाटीरमृद्रोचनम् ॥१५॥ यावश्चोतुमदोनिशाजनमथो कालागुरुश्चद्रंको जातिर्दैवतभूतसर्पविहगा पश्वेणवि-प्रास्ततः क्षत्रा वैश्यकशूद्रसंकरभवाः पुष्पं च पुन्नागकं जामाबाकुलकेतकानि च तथा बिल्वार्कदू-र्वाबुजम् ।१६। (उ.) स्यान्मल्लिका पाटलिका जपा च संक्रातिवस्त्राशनवाहनादेः ॥ नाशश्च तद्वृत्युपजीविनां च स्थितोपविष्टस्वयतां च नाशः ॥ १७ ॥

वव आदि ग्यारह करणों में क्रमसे सिंह आदि वाहन श्वेत आदि वस्त्र भुशुंडी आदि आयुध होते हैं सो क्रमसे जानने जैसे वव करणमें संक्रान्ति होय तौ सिंह वाहन श्वेत वस्त्र भुशुन्डी आयुध अन्न का भोजन कस्तूरी लेपन देवता जाति पुन्नाग पुष्प होता है और जो वालव करण संक्रान्ति होय तौव्याघ्र वाहन पीला वस्त्र गदा शस्त्र भोजन उत्तम अन्न कुंकुमलेपन भूतजाति और जातिका पुष्प होता हैजब कौलब करणमें संक्रान्ति होय तब बाराह बाहन हरित वस्त्रखड्ग आयुध भिक्षा भोजन चन्दन लेपन सर्प जाती और वकुल का पुष्प होता है तैतिल करण में

संक्रान्ति होय तौ गधा बाहन पांडु वस्त्र दण्ड आयुध पक्वान भोजन मृत्तिका लेपन पक्षी जाति और केतकी का पुष्प होता है और गर करण में संक्रान्ति होय तौ हाथी बाहन लाल वस्त्र धनुष शस्त्र दूध भोजन गौरोचन लेपन पशुजाति और वेल का पुष्प होता है और वणिज करण में संक्रान्ति होय तौ महिष वाहन काले वस्त्र तोमर आयुध दधि भोजन महावर लेपन मृगजाति औरआकका फूल होता है विष्टि करण में संक्रान्ति होयतो घोड़ा वाहन काला वस्त्र भाला शस्त्र बिचित्रअन्न भोजन जवादि लेपन विप्रजाति और दूर्वा पुष्प होता है और जो शकुनि करण में श्वानवाहन चितकबरा वस्त्र फरसा शस्त्र गुड़ भोजन हल्दी लेपन क्षत्रिय जाति कमल पुष्प होता है चतुष्पाद करण में संक्रान्ति होय तो बकरा बाहन कंवल वस्त्र अंकुश शस्त्र मधु भोजन अंजन लेपन वैश्य जाति मल्लिका का फल होता है नाम करण में संक्रान्ति होय तौ बैलवाहन दिशा वस्त्र अस्त्र आयुध घृत भोजन अगर लेपन शूद्र जाति पाटलिका फूल होता है और किंस्तुघ्नकरण में जो संक्राति होय तो मुरगा वाहन आसमानी रंग का वस्त्र बांण आयुध खांडका भोजन कपूर लेपन संकर जाति जया का फूल होता है संक्रान्ति के जो वस्त्र बाहन और भोजनादिक है उनका भी नाश होताहै और उनवस्तुओं से जो व्यापार करते हैं उनका भी नाश होता है सोती हुई संक्रांति होय तौ जो अधिक सोते रहते हैं उनका नाश होता है और जो खड़ी हुई संक्रांति होय तो खड़े रहने वालों का नाश होता है और जो बैठी हुई संक्रांति होय तो बैठे रहने वालों का नाश होता है ॥१४॥१५॥१६॥१७॥

संक्रान्ति से मनुष्य का शुभाशुभ कहते हैं।

(उ. संक्रान्तिधिष्णयाधरधिष्णयतस्त्रिभे स्वभे निरुतं गमनं ततोऽगभे ॥ सुखं त्रिभे पीडनमंगभेऽशुक्रं त्रिभेऽर्थहानी रसभे धनागमः ॥ १८ ॥

जिस नक्षत्र पर संक्रति होय उससे जो पूर्व नक्षत्र है उससे गिनै उन में यदि तोन नक्षत्र के भीतर अपना जन्म नक्षत्र आ जाय तौ यात्रा होती है और उससे आगे छः नक्षत्रों के भीतर जो नक्षत्र आवे तो सुख होता है और उसके आगे तीन नक्षत्रों क भोतर होय तौ पीड़ा होती है और उसके आगे छः नक्षत्रों में होय तो वस्त्र को प्राप्ति और उसके आगे तोन नक्षत्रों में होय तौ धनकी हानि और उसके आगे छै नक्षत्रों में धनकी प्राप्तिहोतीहै ।१८।

अथ संकांतिचक्रम ।

करण	बव	बालव	कौल.	तैति	गर	वण	विष्टि	चतु	नाग	किस्तु	कुश.
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	गज	महिष	अश्व	कुत्ता	बकरा	बृष	मुगर।
वस्त्र	सफेद	पीला	हरित	पाँडु	लाल	काला	श्याम	चित्र	कंबल	दिशा	बहल
आयु.	मुसुं.	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	'भाला	पाश	अंकुश	शस्त्र	बाण
भोज.	अन्न.	पर.	भैक्ष्य	पकान्न	दुग्ध	दही	चित्रितान्न	गुड	मधु	घृत	शर्क. रा
लेपन	कस्तू.	केसर	चंदन	मृत्ति.	गोरोचन	महावर	आतुमद	हलदी	अंजन	अगर	कपूर
जाति	देवता	भूत	र्प	पक्षी	पशु	हरिण	ब्राह्म	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	संकर
पुष्प	पुन्ना.	जाती	बारे.	केतकी	बिल्व	आक	दुर्वा	कमल	मालती	पाकर	दुपहरिया
उमर	शिशु	कुमा.	गनलका	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	बध्या	अति वंध्या	सुता.	प्रवाजिका
अव.	रस्ता चल.	भोग. भोगती	रतीक रती.	हसती	दुर्मुखी	ज्वर युक्ता	भोज नरक.	कांप. ती	ध्यान करती	कक. शा	वद्ध. रूपा।

कार्याविशेष में रविआदि का बल कहे हैं

(३.) नृपेक्षण सर्वकृतिश्च संगरः शास्त्रं विवाहो गमदीक्षणे रवेः ॥ वीर्यैथ ताराबलतः शुभो विधुर्विधोर्बलेऽकौंबले कुजा-द्यः॥ १९ ॥

संक्रांतिनक्षत्रम्

नं.	फल.
३	गमनम्
६	सुखम्
३	पीडनम्
६	वस्त्रम्
३	अर्थहानि
६	धनागम्

टीका—सूर्यवली होय अथवा रविवार होय तो राजासे मिलना श्रेष्ठ है चन्द्रबलो होय अथवा चन्द्रवार के दिन सब काम श्रेष्ठ हैं मंगल बली होय अथवा मंगल के दिन संग्राम करना अच्छा है बुध बली होय अथवा बुध के दिन शास्त्र पढ़ना श्रेष्ठ है बृहस्पतिबली होने पर विवाह श्रेष्ठ है शुक्र बली होने पर यात्रा शुभ है शनि बली होने पर चन्द्रमा भो शुभ होता है चन्द्रमा बलवान होने से सूर्य शुभ हो जाता है और सूर्य बलवान होने से सूर्य शुभ हो जाता है और सूर्य बलवान होने से भौमादिक सब ग्रह शुभ है ॥ १९ ॥

अधिक मास और क्षय मास ।

(उ.) स्पष्टार्कसंक्रातिविहीन उक्तो मासोऽधिमासः क्षयमासकस्तु ॥ द्विसंक्रमस्तत्र विभागमोस्तस्तिथेर्हि मासौ प्रथमांत्यसंज्ञौ ॥ २० ॥

मधिक मास और क्षय मास

स्पष्टसूर्य की संक्रान्ति से हीन जो महीना है अर्थात् चतुर्दशी को तो संक्रान्ति हो गई हो और फिर दो अमावस्या हो जांय और संक्रांति नहीं होय तो उसको अधिक मास कहते हैं और जिस अमान्त महीना में दो संक्रांति हो जांय उसको क्षय मास कहते हैं क्षय मास में जिनका जन्म है उनका जन्म गांठ किस महीने में करना जो मर गये हैं उनका श्राद्ध किस महीने में करना चाहिये सो कहते हैं जो तिथि के पूर्वार्द्ध में जन्म है उनका जन्म गांठ पहिले महीने में करना और जो तिथि के उत्तरार्द्ध में जन्म होय तो दूसरे महीने में समझना इसो तरह मृतक श्राद्ध भी जानना चाहिये ।२०

इति श्रीमुहूर्तचिंतामणौ भाषा टीकायां तृतीयं

संक्रान्ति प्रकरणं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ प्रकरणम्।

।उ.।सूर्यो रसांत्ये खयुगेऽग्निनंदे शिवान्त्ययोर्भौ मशनी तमश्च॥ रसांकयोर्लाभशरे गुणांत्ये चंद्रोंबराब्धौ गुणनंदयोश्च॥ १ ॥ लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नगद्वये ज्ञो द्विशरेऽब्धिरामे ॥ रसांकयोर्नागविधौ खनागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ ॥ २ ॥ व्ध्यंत्ये नवांशेऽद्रिगुणे शिवाग्नौ शुक्रः कुनागे द्विनगेऽग्निरूपे ॥ वेदांबरे पंचनिधौ ॥ गजेषौ नंदेशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ।३। क्रमाच्छुभो विद्ध इति ग्रहः स्यात् पितुः सुतस्याऽत्र न वेधमाहुः ॥ दुष्टोऽपि खेटो विपरीतवेधाच्छुभो द्विकोणे शुभदः सितेऽब्जः ॥ ४ ॥

टीका· सूर्य अपनी जन्मराशि से छठे घर में होय तब शुद्ध होता है और यदि जन्म राशि से बारहवें घर में कोई और ग्रह होयतौ विद्ध होता है इसी प्रकार जन्मराशि से दशम घर में सूर्य शुद्ध होता है औरजन्म राशि से चौथे घर में और ग्रह हो तौ विद्ध होता है जन्मराशि से तीसरे घर में सूर्य शुद्ध और नवे घर में और कोई ग्रह होय तौ विद्ध होता है और जन्मराशि से ग्यारहवें घर में सूर्य शुद्ध होता है और पांचवें घर में और कोई ग्रह होय तौ विद्ध होता है इसी प्रकार मंगल शनि राहु केतु अपनी जन्मराशि से ६ ३।११ शुद्ध होते हैं और ९।५।१२ में घर में और ग्रह होंय तौ विद्ध होते हैं और चंद्रमा अपनी जन्मराशि से १०।३।११।१।६।७ घर में होय तौ शुद्ध और जन्मराशि से ४।९।८।५।१२।२ इन घरों में दूसरे ग्रह के होने से चंद्रमा विद्ध होता है जन्म राशि से २। ४।६।८।१०।११ घर में शुद्ध होता है और जन्म

राशि से ५।३।९।१।८।१२ घर में और ग्रह के होने से विद्ध होता है और बृहस्पति जन्मराशि से ५।२।९।७।११ में घर में शुभ होता है और ४।१२।१०।३।८ में घर में और कोई ग्रह होय तौ बृहस्पति विद्ध होता है इसी प्रकार शुक्र जन्मराशि से १।२।३।४।५।८।९।११।१२ इन घरों में होने से शुद्ध होता है और यदि जन्मराशि से ८।७।१।१०।९।५।११।६।३ घरों में अन्य कोई पाप ग्रह होय तौ विद्ध होता है इसमें पिता पुत्र का वेध नहीं होता सूर्य और शनि का चन्द्र और बुध का वेध नहीं होता दुष्टग्रह बिपरीत वेध से शुभ होता है शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा द्वितीय पंचम नवम घर में होने से शुभ होता है ॥१॥२॥३॥४॥

वेधचक्र ।

रवेः				मं. श. रा.			चन्द्रस्य						बुधस्य.			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६	शुभ
१२	४	९	५	९	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९	विद्ध
				गुरोः						शुक्रस्य.						
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	५	११	६	३

इस दो प्रकार के वेध में मतभेद कहते हैं।

। उ. । स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठतराशितः सः । हिमाद्रिविंध्यांतर एव वेधो न सर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तः ॥ ५ ॥

नारदादि ऋषियों ने जन्मराशि से क्रमिक और वाम ये दो प्रकार से बेध कहे हैं उन्हीं वेधों कश्यप ने ग्रहाधिष्ठित राशि से कहा है जैसा कि सूर्य जन्मराशि से छटे घर में शुभ होता है वह सूर्य संक्रान्ति राशि से बारहवें घर में स्थित शनि रहित ग्रहों से विद्ध नहीं होता है इसी प्रकार सूर्य जन्मराशि से बारहवें घर स्थित भी शुभ नहीं होता वह सूर्य संक्रान्ति से छटे घर में बैठे शनि वर्जित ग्रहों से विद्ध हो तब शुभ फलादायक होता है यह वेध हिमाचल और

विन्ध्याचल के बीच में ही माना जाता है सब देशों में नहीं माना जाता यह कश्यपजी का मत है ॥ ५ ॥

अब ग्रहण का फल कहते हैं

(शा.) जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिमतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा चिंता सौख्यकलत्रदौष्टस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम ॥ लाभोपाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगौदानं शांतिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे ॥ ६ ॥

यदि जन्म नक्षत्र पर ग्रहण होय तौ मृत्यु फल होता है और जन्म राशि पर होय तौ घात और जन्म राशि से दूसरी राशि पर ग्रहण होय तौक्षति तीसरी पर होय तौ लक्ष्मी प्राप्ति चौथी राशि पर होय तौ व्यथा पांच पर चिन्ता छठी राशि पर होय तौ सुख सप्तम राशि पर होय तौ मृत्यु नवम राशि पर माननाश दशम राशिपर सुख ग्यारहवीं राशि पर लाभ बारहवीं राशि पर ग्रहण होय तौ मृत्यु होती है अशुभ फल की निवृत्ति के लिये जप सुवर्ण और गौका दान अथवा शान्ति करनी चाहिये और किसी आचार्य का ये भी मत है कि अपनी राशि से जो अशुभ ग्रहण होय तौ उसको नहीं देखना चाहिये ।

चन्द्रमा के बल में विशेषता कहते हैं ।

(अ.) पापांतः पापयुग्द्यूने पापाच्चन्द्रः शुभोप्यसन् ॥ शुभांशे वाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोऽपि सन् ॥ ७ ॥

शुभ भी जो चन्द्रमा है वह यदि पाप ग्रहों के मध्य में होय अथवा पाप ग्रह के संग होय अथवा पाप ग्रह सातवें घर में होय तौ वह पापी होने के कारण अशुभफल देता शुभग्रह के नवांश में होय अथवा अधि मित्र के अंश के अंश में होय और गुरु की दृष्टि होय तो वह अशुभ होय तौ भी शुभ फल दायक होता है ॥ ७ ॥

[अ.] सितासितादौ सद्दुष्टे चंद्रे पक्षौ शुभावुभौ ॥ व्यत्यासे चाशुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जबलं त्विदम् ॥ ८ ॥

टीका–शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को जो चन्द्रमा शुभ होय तो सम्पूर्ण पक्ष शुभ होता है और जो कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को चन्द्रमा अशुभ होय तो सम्पूर्ण कृष्ण पक्ष अशुभ होता है और इससे विपरीत होय तो फल भी विपरीत जानना ये चन्द्राबल संकट के समय में ग्रहण करना चाहिए जैसे विवाह करना है और चन्द्रमा ठीक नहीं बनता है तो इसी तरह से देख लेना हर कार्य में ऐसे नहीं देखै ;॥८॥

ग्रहों की शांति के लिये नवरत्न कहते हैं ।

[शा.] वज्रं शुक्रेऽब्जे सुमुक्ता प्रवालं भौमेऽगौ गोमेदमार्कौ सुनीलम् ॥ केतौ वैदूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे पाचिः प्राङ्-माणिक्यमर्के तु मध्ये ॥ ६ ॥

टीका–एक नौ छेद की अंगूठी बनवावै उसमें शुक्र की प्रीति के लिए पूर्व में हीरा जड़वावै चंद्रमा की प्रीति के लिए सुन्दर मोती अग्नि कोणमें जड़वावै मंगल की प्रीति को दक्षिण में मूंगा राहु के लिये नैऋत्य में गोमेद शनि के लिये पश्चिम में नीलम जड़वावै केतु के लिये ,वायव्य में वैदूर्य मणि जड़वावै वृहस्पति की प्रीति के लिये उत्तर पुखराज जड़वावै बुध की प्रीति के पाचिनामक मणि ईशान में और सूर्य की प्रीति के लिए बीच में मानिक जड़वा कर उसको अपने पास रक्खे तो सब ग्रहों का दोष शांत रहता है ।

अब एक २ रत्न धारण की विधि कहते हैं—

(इं. व.) माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमं मणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनी

लम् ॥ गोमेदवैदूर्यकमर्कतः स्युः रत्नान्यथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् ॥ १० ॥

टीका–सूर्य की प्रसन्नता के लिये माणिक धारण करै चन्द्रमा के लिये मोती मगल के लिये मूंगा बुध के लिये गारुत्मक (गरुड़ चाचि) बृहस्पति के लिये पुखराज शुक्र के लिये हीरा शनि के लिये नीलम् राहु के लिये गोमेद केतु के लिये वैदूर्य और बुध के लिये सुवर्ण धारण करैं ॥ १० ॥

अथ थोड़े मूल्य की चीजों की विधि कहते हैं—

(शा.) धार्यं लाजावर्तकं राहुकेत्वो रौप्यं शुक्रेंद्वोश्च मुक्ता गुरोस्तु ॥ लोहं मंदस्यारभान्वोः प्रवालंताराजन्मर्क्षात्त्रिरावृत्तितः स्यात् ॥ ११ ॥

राहु और केतु का दोष दूर होने के लिये लाजा वतर्क, शुक्र और चन्द्रमा के लिये चांदी वृहस्पति का दोष निवृत करने को मोती शनि का दोष निवृत्त करने को लोहा मंगल और सूर्य का दोष दूर करने कोमूंगा धारण करै ॥ ११ ॥

तारा कहते हैं।

(अ.) जन्माख्यसंपद्विपदःक्षेमप्रत्यरिसाधकाः ॥ वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारा नामसदृक्फलाः ॥ १२ ॥

अपने जन्म नक्षत्र से तीन आवृत्ति करके जन्म, संपत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यार, साधक, बध, मैत्र, अतिमैत्र ये नौ तारा जानले ये नामानुसार फल देने वाले हैं ॥ १२ ॥

अशुभ तारा का दान कहते हैं।

(शा.) मृत्यौ स्वर्णतिलान्विपद्यपि गुडं शाकं त्रिजन्मस्व-

थो दद्यात्प्रत्यरितारकासु लवणं सर्वो विपत्प्रत्यरिः मृत्युश्चादिमपर्यये न शुभदोऽथैषां द्वितीयेंशका नादिप्रांत्यतृतीयका अथ शुभाः सर्वे तृतीये स्मृताः ॥ १३ ॥

मृत्यु तारा में सुवर्ण और तिल दान करै और विपद तारा में गुड़ तीनों जन्म ताराओं में शाक प्रत्यरि ताराओं में लवण का दान करना चाहिए इन ताराओं की प्रथमावृत्ति में विपत तारा, प्रत्यरितारा,औरमृत्यु तारा ये सम्पूर्ण शुभ फल नहीं देते इसी प्रकार दूसरी गणना में विपद् प्रत्यरि और मृत्यु ताराओं के आदि मध्य और अन्त्य की बीस२ घड़ी क्रम से अशुभ है जैसे विपत को आदि को बीस घड़ी त्याज्य और ४० घड़ी शुभ है और प्रत्यरि तारा में मध्य की २० घड़ी त्याज्य हैं औरबधतारामें अन्त्य की बीस घड़ी त्याज्य हैं बाकी की शुभ हैं और तीसरी आवृत्ति में ये ती ों तारा सम्पूर्ण शुभ हैं ॥ १३ ॥

चन्द्रमा की अवस्था कहते हैं ।

(अ.) षष्टिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतम् ॥ शराब्धिहृल्लब्धतोऽर्कशेषेऽवस्थाः क्रमाद्विधोः ॥ १४ ॥

गत नक्षत्र को ६० से गुणा करे फिर जो गुणनफल आवै उसमें वर्तमान नक्षत्र की भुक्त घड़ियों को जोड़ देय फिर उस योगफल को ४ से गुणा करै जो अंक आवै उसमें ४५ का भाग देय जो लब्धि आवै उसमें १२ भाग देय जो शेष बचे उसे चन्द्रमा की प्रव[illegible] आदि अवस्था जाननी जैसे वर्तमान नक्षत्र भरणी है तो गत अश्विनी है यह पहिला है इसको ६०से गुणा किया तो ६० हुआ गत घडी२०हैं सो जोड़ दीनी तो८० हुए इसको

४ से गुणा किया तौ ३२० हुये इसमें ४५ का भाग दिया ७ लब्धि आये इनमें १२ का भाग नहीं जा सकता इसलिये ७ को ही शेष मानकर मेष से गिनने से चंद्रमा की अवस्था जाननी ॥ १४ ॥

अवस्थाओं के नाम--

[उ.] प्रवासनाशौ मरणं जयश्च हास्यारतीः क्रीडितसुप्त भुक्ताः ॥ ज्वराख्यकंपस्थिरता अवस्था मेषात् क्रमान् नामसदृक्फलाः स्युः ॥ १५ ॥

टीका—प्रवास, नाश, मरण, जय, हास्य, अरति, क्रीड़ित, भुप्त, मुक्त, ज्वर, कंप, स्थिरता, ये बारह अवस्था, नामानुसार फल देने वालीं होती हैं ॥ १५ ॥

ग्रह नोष निवृत्ति के लिये औषधि स्थान कहते हैं -

(शा.) लाजाकुष्टबलाप्रियंगुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः ॥ पुंखा-लोध्रयुतैर्जलैर्निगदतं स्नानं ग्रहोत्थाघहृत् । धेनुः नम्ब्व-ऽरुणो बृषश्च कनकं पीताम्बरं धोटकः श्वेतो गौरसिता महासिरज इत्येता रवेर्दक्षिणाः ॥ १६ ॥

टीका—खील, या लजवंती, कोष्ट, बलवीज, माकांगनी, मोथा, सरसों, हलदी, देवदारु, सरपुंखा, और लोध इनको जल में मिलाकरस्नान करने से ग्रह जनित दोषों की निवृत्ति होती है । अब सूर्यादिकों का दान कहते हैं सूर्य की प्रीति के लिये गाय चंद्रकृत दोषनिवृत्ति को शँख, मंगल के दोष शान्ति को लाल वैल बुधकृत दोष शान्ति को सुवर्ण, बृहस्पति के लिये पीताम्बर शुक्र के लिये सफेद घोड़ा शनि के लिये श्यामा गौ राहु के लिये तलवार केतु का दोष दूर करने को बकरा इस प्रकार इन वस्तुओं के दान करने से ग्रहों के दूर होते हैं ॥ १६ ॥

नव ग्रहों के दान का चक्र है ।

सू.	माणि	गेहूं	सत्सव गौ	रक्तव स्त्र	गुड़	सोना	तांमा	र.चंदन	मसूर	जपसं ७०००
चं.	घीकलश	श्वे.व.	दही	शंख	मोती	सोना	चांदी	....	....	११०००
मं.	मूंगा	गेहूँ	मसूर	वृषला ल	कनेर फूल	रक्तव स्त्री	गुड़	सोना	तांबा	१०००००
बु.	नीलाव.	मूंग	सोना	दासी	पन्ना	रलस	घृत	कास्नी	हाथी दांत	५०००
बृ.	पीतवस्त्र	घोड़ा	सहत	पीला अ	अन्न तीत	नौन	पुखरा ज	चींनी	हरि द्रा	११००००
शु.	चित्रव.	चाव.	घृत	सोना	चांदी	हीरा	सुगंध	श्वेतधेनु	केसर	११०००
श.	उडदो	तेल	नीलम	तील	कुल थी	मैल	लो.ह	कष्णा गऊ	भैसी	२३०००
रो.	गोमेद	घोड़ा	नीलम	कंबल	तिल	उड़द	लोहा	भेढ	सोना	१५०००
के	वैदूर्यं	रत्न	व.स्तू.	कंबल	शस्त्र	गेहे	नोन	धूमले वस्त्र	बकरा	७०००

ग्रहों के फल देने के समय का निश्चय—

(छं.उ.) सूर्यारसौम्यास्फुजितोऽन्नागसप्ताद्रिघस्त्रान् विधुरग्निनडीः ॥ तमोयमेज्यास्त्रिरसाशिवमांसान् गतव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ॥ १७ ॥

टीका—सूर्य जिस राशि पर जाने वाला हो उसका फल पांच दिन पहिले से देता है । मंगल आठ दिन पहिले बुध ७ दिन पहिले शुक्र ७ दिन पूर्व गन्तव्य राशि का फल देता है चन्द्रमा ३ घड़ी पहिले राहु ३ मास पहिले, शनैश्चर ६ महीना पहिले और वृहस्पति २ महीना पहिले से गन्तव्य राशि का फल देने लगता है ॥ १७ ॥

(छं.व.) राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽजमंदौ ॥ अध्वान्नवन्हिभयसन्मतिवस्त्रसौख्यदुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ ॥ २८ ॥

टीका—सूर्य और मंगल राशि के पहिले १० अंशों में शुक्र और वृहस्पति राशि के मध्य के १० अंशों में बुध समग्र राशि में चन्द्रमा और शनि अंशके १० अंशों में अपना पूरा शुभाशुभ फल देते हैं शेष अंशों में थोड़ा फल देते हैं। प्रत्येक महीने में रविवार का जो आना जन्म नक्षत्र होय तो रास्ता चलना पड़े सोमको जो जन्मनक्षत्र आवै तो भोजनमिलता हैं मंगल को जो जन्म नक्षत्र आवै तो अग्नि भय होता है बुधको जो जन्म नक्षत्र होय तो उत्तम बुद्धि वृहस्पति को होय तो वस्त्र शुक्र को होयतोसुख शनि को हो तो दुःख प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अब आवश्यक कार्य में तिथ्यादि दुष्ट योग की
शांति के लिए दान कहते हैं।

(छं.श.) दुष्टे योगे हेम चंद्रे च शंख धान्यं तिथ्यर्द्धे तिथौतं-
डुलाश्च। वारे रत्नंभे च गां हेम नाड्यां दद्यात्सिं
धूत्थं च तारासु राजा ॥ १९ ॥

इति दैवज्ञानंतसुतरामदैवज्ञकृत मुहूर्त चिन्तामणौ चतुर्थ नक्षत्रप्रकरणम
भाषा टीकायां समाप्तम।

टीका—दुष्ट योग होय तो सुवर्ण दान करै चंद्र दुष्ट होय तो शंख तिथि में भद्रादि दोष होय तो धान्य तिथि चतुर्थी आदि होय तो चांवल वार दुष्ट होय तो रत्न नक्षत्र अशुभ होय तो गौ घड़ी दूषितहोयत। सुवर्ण तारा दूषित होय तो सेंधा नोन दान करै ऐसा करने से सम्पूर्ण दोष शांत होते हैं ॥ १९ ॥

इति दैवज्ञानंतसुतरामदैवज्ञकृत मुहूर्त चिन्तामणौ भाषा टीकायां
चतुर्थ नक्षत्र प्रकरणं समाप्तम् ॥

—:—

॥ चन्द्रावस्था चक्रम ॥

अश्वनी	११।प्रवास	२२॥ नाश	३३॥ मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
भरणी	७॥ रति	१८॥ कीड़ा	३० सुप्त	४१ मुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
कृत्तिका	३॥ कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७। नाश	४८॥ मरण	६० जय
रोहिणी	११। हास्य	२२। रति	३३॥कीडा	४५ सुप्ति	५६। मुक्ति	६० ज्वर
आर्द्रा	७॥ ज्वर	१८॥ कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६०मरण
पुनर्वसु	३॥ मृति	१५ ज्वर	२६। हास्य	३७। रति	४८॥कीडा	६० सुप्ति
पुष्य	११। भुक्ति	२२॥जय	३३॥ कंप	४५ स्थिरता	५६। प्रवास	६० नाश
आश्लेषा	७॥ नाश	१८॥मरण	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६०कीडा
मघा	३॥ कीड़ा	१५ सुप्ति	२६ भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥ कंप	६०स्थिर
पू. फा	११प्रवास	२२॥ नाश	३३॥ मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
उ. फा	७॥ रति	१८॥क्रीडा	३० सुप्ति	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
हस्त	३॥ कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥नाश	४८॥ मरण	६० जय
चित्रा	११। हास्य	२२। रति	३३। कीडित	४५ सुप्ति	५६। मुक्ति	६० ज्वर
स्वाती	७॥ ज्वर	१८॥ कंप	३०स्थिरता	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६०मरण
विशाखा	३॥ मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७। स्थिर	४६॥क्रडा	६०सुप्ति
अनुरा.	११। भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥ कंप	४५ स्थिर	५६। प्रवास	६० नाश
ज्येष्ठा	७॥ नाश	१८॥मृति	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० कीडा
मूल	३॥ कीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७। ज्वर	४८। कं	६० स्थिर
पू. षाढ	११। प्रवास	२२। नाश	३[illegible]। मृति	४५ जय	५६ हास्य	६० रति
उ. षा.	७॥ रति	१८॥क्रीडा	३० सुप्ति	४१। मुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
श्रवण	३॥ कंप	१५स्थिरता	२६। प्रवास	३७॥नाश	४८॥ मरण	६० जय
	११। हास्य	२२। रति	३३॥ क्रीडा	४५ सुप्ति	५६। मुक्ति	६० ज्वर
धनिष्टा	७॥ ज्वर	१८॥ कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
शतता.	३॥ मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ रति	४८॥कीडा	६० सुप्ति
पू. भा.	११। भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥ कंप	४५ स्थिरता	५६। प्रवास	६० नाश
उ. भा.	७॥ नाश	१८॥ मृति	३० जय	४१।हास्य	५२॥ रति	६०कीडा
रेवती	३॥ कीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥स्थिर	४६। कंप	६०स्थिर

अथ संस्कार प्रकरणम्

—:०:॥※॥:०:—

पंचमम्

प्रथम पजोदर्शन में शुभ सूचक कहते हैं।

(छं. अ.) आद्यरजः शुभं माघमार्गराधेशफाल्गुने ॥ ज्येष्ट-श्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा ॥ १ ॥

टीका—माघ, मार्गशीर्ष, वैसाख, आश्विन फाल्गुन, ज्येष्ठ, श्रावण इन महीनों में शुक्ल पक्ष बुध बृहस्पति चन्द्रवार शुक्रवार और श्रेष्ठलग्नमें और दिनमें रजोदर्शन का होना शुभ होता है ॥ १ ॥

प्रथम रजोदर्शन में नक्षत्रानुसार फल कहते हैं—

(छ अ.) श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौसितांबरे ॥ मध्यं च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत् ॥२॥

टीका-श्रवण से तीन, चित्रा, अनुराधा, मृगशिर रेवती, अश्विनी, पुष्य हस्त, रोहिणी, तीनों उत्तरा, स्वाती, इन नक्षत्रों में सफेद वस्त्रपहिने हुए जो प्रथम रजोदर्शन होय तौ शुभ फल है मूल, पुनर्वसु, मघा विशाखा, कृत्तिका इनमें प्रथम रजोदर्शन होय तौ मध्यम है और शेष नक्षत्रों में अशुभ है ॥ २ ॥

छ. शा. भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासंध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु ॥ रोगेष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते चाद्यं नो रजोदर्शनं सत् ॥३॥

टीका—भद्रा में और सोते हुये में, संक्रान्ति में, अमावस्या में रिक्ता में सन्ध्या के समय, षष्ठी द्वादशी, वैधृति योग रोग,

अष्टमी, तिथि और सूर्य चंद्र के ग्रहण में ग्रहण में व्यतीपात महापात इनमें से कोई बात होने पर प्रथम रजोदर्श होय तौ शुभ नहीं होता ।३।

(छं.व.) हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च ॥ स्नायादथार्तववती मृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम् ॥४॥

प्रथम रजज्वला के स्नान का मुहूर्त ।

हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिर, अनुराधा, धनिष्टा तीनों उत्तरा रोहिणी, ज्येष्ठा, इन नक्षत्रों में शुभ तिथि और शुभ बार में स्नान करै मृगशिर, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी, रोहिणी, इसमें स्नान करने से शीघ्र गर्भ धारण करती है ॥ ४ ॥

गर्भाधान कहते हैं ।

(छं.शा.) गंडांतं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलांतकं दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथावैधृतिं ॥ पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे मान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ ५ ॥

टीका— यदि निषिद्ध तिथ्यादि में रजोदर्शन हुआ होय तो उसकी शान्ति करना चाहिये । गर्भाधान में तीन प्रकार का गण्डान्त बध तारा जन्म का नक्षत्र, मूल नक्षत्र, भरणी, अश्विनी रेवती ग्रहण का दिन, व्यतीपात, बैधृति माता पिता का श्राद्ध दिन, दिवस, परिघका पूर्वार्द्ध उत्पात से हत हूए नक्षत्र, जन्म राशि अथवा जन्म लग्न से अष्टमलग्न, और पाप ग्रह युत नक्षत्र इनका स्त्री भोग के समय परित्याग करै ॥५॥

(छं.शा.) भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च सन्ध्या भौमार्कार्की नद्यरात्रीश्चतस्रः ॥ गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वंबुपे सत् ॥ ६ ॥

भद्रा, षष्ठी, पर्व रिक्ता, भौम, रवि, शनि वार और जिस दिन रजोदर्श हुआ होय उससे ४ दिन रात इनको छोड़कर सम रात्रि में तीनों उत्तरा मृगशिर, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा, इन नक्षत्रों में गर्भाधान श्रेष्ठ होता है।

गर्भाधान में लग्न बल कहते हैं।

(छं.इं.) केंद्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगः पुंग्रहदृष्टलग्ने ॥ ओजांशकेब्जेपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं तत् ॥ ७ ॥

केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह होय लग्न से ३।।६ ११ घर में पाप ग्रह पुरुष ग्रहों से देखा हुआ लग्न होय चन्द्रमा विषम राशि के नवांशक में होय लग्न भी विषय नवांशक में होय और सम रात्रि होय तौ गर्भाधान करना योग्य है चित्रा, पुनर्वसु पुष्य, अश्विनी इनमें वह मध्यम है।

सीमान्त का मुहूर्त।

(छं. शा.) जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋति श्रोतादितिब्रध्नभै रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे ॥ सीमंतोष्टमषष्ठमासि शुभदैः केंद्रत्रिकोणे खलैर्लाभारित्रिषु वा ध्रुवांत्यसदहे लग्ने च पुंभांशके ॥८॥

टीका-गुरु, रवि, मङ्गल ये बार होंय मृगशिर पुष्य मूल, श्रवण पुनर्वसु, हस्त ध्रुव संज्ञक, रेवती ये नक्षत्र होंय रिक्ता अमावास्या, द्वादशी, षष्ठी इनसे भिन्न तिथियों में और मास का स्वामी वलवान होय, और छटे आठमें महीने में शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में होंय और पाप ग्रह तीसरे छठे, ग्यारहवें स्थान में होय ध्रुव संज्ञक और रेवती ये नक्षत्र होय और शुभ वार होय लग्न में पुरुष ग्रहका नवांश होय तौ सीमन्त संस्कार शुभ है ।।८।।

मासों के स्वामी कहते हैं।

(छं.व.) मासेश्वराः सितकुजेज्यरवींदुसौरिचंद्रात्मजा स्तनुपचंद्रदिवाकराः स्युः ॥ स्त्रीणां विधोर्बलमुशंति विवाहगर्भ संस्कारयोरितरकर्मसु भर्तुरेव ॥ ९ ॥

टीका—प्रथम मास का स्वामी शुक्र द्वितीय का मङ्गल, तीसरे का गुरु चौथे का सूर्य, पांचवें का चन्द्रमा, छठे का शनि, सातमें का बुध आठमें का गर्भाधान लग्न का स्वामो ९ का चन्द्रमा १० का स्वामी होता है, विवाह और गर्भाधान में ही स्त्रियोंका चंद्रबल देखे और कार्योंमेंपतिका चन्द्रबल देखना उचित है ॥९॥

पुंसवन का मुहूर्त ।

(छं.इ.) पूर्वोदितैः पुंसवनं विधेयं मासे तृतीये त्वथ विष्णुपूजा ॥ मासेष्टमे विष्णुविधातृजीवर्लग्ने शुभे मृत्युगृहे-च शुद्धे ॥ १० ॥

टीका—पूर्व श्लोक के अनुसार तीसरे मास में पुंसवन करना उचित है और अष्टम मासमें श्रवण रोहिणी पुष्य नक्षत्र में शुभ ग्रह सहित लग्न में अष्टम घर शुद्ध होने पर विष्णु की पूजा करना शुभ है ॥१०॥

जात कर्म नाम करण का मुहूर्त

(छं: उ.) तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयं पर्वाख्यारिक्तोनतिथौ शुभेऽन्हि ॥ एकादशे द्वादशकेपिघस्रेमृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥ ११ ॥

टीका—बालक का जात कर्मादिक संस्कार पर्व और रिक्ता तिथि को छोड़कर और तिथि में शुभ बार में ग्यारह में और बारहमें दिनतीनों उत्तरा, रोहिणी, मृदु संज्ञक, चर संज्ञक, क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में जातकर्म नाम करण आदि शुभ हैं ॥ ११ ॥

सूतिका स्नान मुहुर्त ।

(छं. वं.) पौष्णध्रुवेंदुकरवातहयेषु सूतीस्नानं समित्रभरवीन्दु-
कुजेषु शस्तम् ॥ नाऽर्द्रात्रयश्रुतिमघांतक मिश्रमूल-
त्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १२ ॥

टीका–रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त, स्वाती, अश्विनी अनुराधा इन नक्षत्रों में रवि, चन्द्र मंगल इन बारों में सूतिका स्नानशुभ है परन्तु आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी मिश्र संज्ञक, मूल, चित्रा ये नक्षत्र न होंय और बुध शनि इन चारों को छोड़ और ८।६।१२।४।९।१४ ये तिथि न होंय तो सूतिका स्नान शुभ है ॥१२॥

बालक के दांत निकलने का फल ।

(छं. शा.) मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत्स्वयं
हन्यात्सक्रमतोनुजातभगिनीमात्रग्रजान्ष्याादिके षष्ठादौ
लभतेहि भोगमतुलं तातात्सुखं पुष्टतां लक्ष्मी
सौख्यमथो जनौसदशनश्चोर्ध्वं स्वपित्रादिहा ॥१३॥

टीका–जो प्रथम मास में ही बालक के दांत निकल आमै तौ वह आप ही मर जाता है दूसरे मास में दांत निकलैं तो छोटे भाइयों को मारता है तीसरे मांस में दांत निकलने से बहिन को मारता चौथेमास में दांत निकलने से माता को पांच में मासमें दांत निकलनेसे बड़े भाईको मारता है । छठे में दांत निकलने से अतुल भोग मिलै सातवें में पिता की ओर से सुख मिलै आठवें में दांत निकलें तो शरीर पुष्ट होय नवमम्ोंदांत निकलैं तौ लक्ष्मी, दशम मांसमें दांत निकलने से सदा सुखी होता है और जो जन्म के साथही दांत निकलैं अथवा पहिले ऊपर के दांत निकलैं तो पिता आदि को मारनेवाला होता है ॥१३॥

शिशोर्दोलारोहः ।

(छ्.अ.) दोलारोहेर्कभात्पंचशरपंचेषुसप्तभैः ॥ नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः ॥ १४ ॥

टीका—जिस नक्षत्र पर सूर्य होय उस नक्षत्र से ५।५।५।५७ नक्षत्र गिनकर बालक को पालने में झुलने नेरुज्यादि फल होता है जैसे सूर्य के नक्षत्र से ५ नक्षत्रों में मरण उससे आगे ५ नक्षत्रों में कृशता उससे आगे के ५ नक्षत्रों में व्याधि उससे आगे के नक्षत्रों में सुख होता है ॥ १४ ॥

दोलारोह और बाहर निकालने का मुहूर्त ।

(छं.व.) दंतार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे स्याद्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् ॥ दोलाधिरूढिरथनिष्क्रमणं चतुर्थमासे गमोक्तसमयेऽर्क मिते न्ह वा स्यात् ॥ १५ ॥

टीका—जन्म दिन से ३२।१२।१६।१८।१० ये दिन होने पर शुभवार में मृदु, लघु, और ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में बालक को पालने में बैठना शुभ है चौथे मास में यात्रा का मुहूर्त में कहे हुए समय समय में अथवा जन्म से १२ में दिन निष्क्रमण (घर से बाहर ले जाना) शुभ है ॥ १५ ॥

कूप पूजन का मुहूर्त

(छ.भु) कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे जलं पूजयेत्सूतिका मासपूर्तौ ॥ बुधेंद्वीज्वारे विरक्ते तिथहि श्रुश्रतीज्यादितीद्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः ॥ १६ ॥

टीका—शुक्र बृहस्पति के अस्त में चैत्र अधिक मास और पौष ये न होंय महीने के भीतर ही बुध, चन्द्रि, और गुरुवार में रिक्ता तिथि को छोड़कर और तिथि न श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिर हस्त, मूल, अनुराधा इन नक्षत्रों में जलाशय का पूजन शुभ है ॥ १६ ॥

॥ अन्न प्राशन मुहूर्त ॥

(छ.स.) रिक्तानंदाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्-
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च ॥
हित्वा षष्ठात्समे मास्यऽथ हि मृगदृशां पंचमादोजमा-
से नक्षत्रैः स्यात् स्थिराख्यैः समृदुलघुचरैर्बालका-
न्नाशनं सत् ॥१७॥ [छ.व.] केंद्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः
खशुद्धलग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदंति पापैः । लग्नाष्ट-
षष्टरहितं शशिनं प्रशस्त मैत्रांबुपानिलजनुर्भमसच्च
केचित् ॥ १८ ॥

टीका—रिक्ता (४।१४।९) नंदा १।६।११। और ८ ३।१२ ये तिथि और शनि, भौम, रवि ये वार जन्म राशि और जन्म लग्न से जो अष्टम राशि और अष्टम नवांशक की जो राशि है उस राशि का लग्न और मीन, मेष, वृश्चिक इन सबको छोड़ कर छटे मासमें सममहिने में बालकको अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है यदि कन्या होय तौ पंचम मासमें ऊने मासमें अन्नप्राशन शुभ है । स्थिर संज्ञक, मृदु संज्ञक, लघु संज्ञक, और संज्ञकनक्षत्रों में अन्न-प्राशन करावै ॥१७॥ केन्द्र त्रिकोण और तीसरे इन घरों में शुभ ग्रह होंय दशम में कोई ग्रह नहीं होय ऐसे लग्न से और लग्न से ३।६।११ में घरमें पाप ग्रह नहीं होय और १।६।८ इनमें चन्द्रमा नहीं होय तब अन्न प्राशन शुभ है कोई २ आचार्य कहते हैं कि अनुराधा, शतभिषा, स्वाती और जन्म का नक्षत्र ये अन्नप्राशन में अशुभ हैं ॥ १८ ॥

ग्रहों का स्थानानुसार फल ।

[छं.अ.] क्षीणेंदुपूर्णचंद्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवः ॥ त्रिकोणव्य-
यकेंद्रास्थिरस्थितेरक्तं फलं ग्रहैः ॥ १६ ॥ भिन्नाशीयज्ञ-

कृद्दीर्घजीवी ज्ञानी च पित्तरुक् ॥ कुष्ठी चान्नक्लेशवा-
तव्याधिमान्भोगवानिती ॥२०॥

टीका—क्षीण चन्द्रमा, पूर्ण चन्द्रमा गुरु बुध, भौम सूर्य, शुक्र ये ग्रह त्रिकोण, केन्द्र, १२।८ इन स्थानों में बैठे होय तौ क्रमसे भिक्षाशीआदि फल जानना जैसे इन लग्न में क्षीण चन्द्रमा होय तौ अन्न प्राशन करने वाला बच्चा भिक्षुक होता है इनमें पूर्ण चन्द्रमा होय तौ यज्ञ करने वाला होता है बृहस्पति होय तौ दीर्घायु होता है बुध होवे तौ ज्ञानी इनमें मंगल होय तौ पिता का रोगी सूर्य होय तौ कुष्ठी शनि होय तौ अन्नक्लेश युक्त और बात व्याधिवाला होता है शुक्र होय तौ वह बालक भोगी होता होता है । १९ ॥ २० ॥

॥ भूमि पर प्रथमबैठानेका मुहूर्त ।

[छं.व.] पृथ्वीं वराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धेऽरिक्ते तिथौ व्र-
जति पंचममासिबालम् ॥ बध्वा शुभेऽह्नि कटिसूत्र
मथध्रु वेदुज्येष्टर्त्तमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥२१॥

टीका—पंचम मासमें पृथ्वी का और वाराह जी का पूजन करके मंगल शुक्रहोने पर रिक्ता को छोड़कर तीनों उत्तारा, रोहिणी, ज्येष्ठा, अनुराधा हस्त, अश्विनी पुष्य, अभिजद् इन नक्षत्रों में शुभ वार में कमर में कौंधनी बांधकर बालक को पृथ्वी पर बैठावै ॥ २१ ॥

बालक की जीविका की परीक्षा ।

(छं शा.) तस्मिन् काले स्थापयेत् तत्पुरस्ताद्वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं
लेखनीं च ॥ स्वर्णं रौप्यं यच्च गृह्णाति बालस्तै-
राजीव्यैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा ॥२२॥

टीका—उस समय बालक के सामने वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, कलम सोना, चांदी ये सब चीज रक्खै इनमें से बालक जिस चीज को उठा लेय उसीसे वह जीविका करेगा यह जानना ॥ २२ ॥

बालकों को पानखिलानेका मुहूर्त ।

(छ.स्र.) वारे भौमार्किहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीद्र-
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्थिथुमृगसुताकुभगोमीनलग्ने ॥ सौ
म्यैः केन्द्रत्रिकोणैरशुभगगनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थैः
तांबूलंसार्घमासद्धयमितसमये प्रोक्ततन्नाशने वा ।२३।

टीका–मंगल और शनिवार को छोड़कर और वारों में ध्रुव (तीनों उत्तरा रोहिणी) मृदु [मृगशिर, रेवती, चित्रा अनुराधा] लघु [हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजन्] श्रवण, मूल, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाति, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में मिथुन, कन्या, मकर, कुम्भ, वृष, मीन लग्न में शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में होय और पाप ग्रह ६।११।३ घर में होय तो ढाई मास की अवस्था होने पर या पंचम मास में तांबूल खवाना शुभ है ॥ २३ ॥

अब कर्णवेध का मुहूर्त कहते हैं ।

(छ.स्र हित्वैतान्चैत्रपौषावमहीरशयनं जन्मासं च
रिक्तां युग्माब्दं जन्मतारामृतुमुनिवसुभिः संमिते
मास्यथो वा ॥ जन्माहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञे-
ज्यशुक्रेंदुवारेऽथोजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः
कर्णवेधः प्रशस्तः ॥२४

टीका–चैत्र, पौष मास, क्षयतिथि, देव शयन जन्म का महीना रिक्ता तिथि सम वर्ष इनको छोड़कर छटे, सातमे आठमे महीना में अथवा जन्म के दिन से बारह में सोलहमें दिन बुध, बृहस्पति सौमवार के दिन ऊने वर्षों में श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशिर, रेवती, चित्रा अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, इन नक्षत्रों में बालक के कान छिदवाने शुभ हैं ॥ २४ ॥

अथ कर्णवेधरें लग्नशुद्धि

(छ्र प्र) सशुद्धे नृतिभवने त्रिकोणकेन्द्रत्र्यायस्थैः शुभखचरैः

कवीज्यलग्ने ॥ पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थैर्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ॥२५॥

टीका—लग्न से अष्टम स्थान में कोई ग्रह न होय और शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण और तीसरे ग्यारहमे स्थान में होय शुक्र और वृहस्पति की राशि की लग्न होय और पाप ग्रह ३।६।११ इन स्थानों में होंय लग्न में गुरु होय तौ कर्ण वेध शुभ है ।

(छं. स्र.) गीर्वाणांबुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानचौलोपवीतक्षो-णीपालाभिषेकोदवसितविशनं नैव याम्यायनेस्यात् ॥ नो वा बाल्यास्तवार्ध्ये सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्यात् पक्षं वार्द्धे च केजिज्जहति तमपरे यावदीक्षां तदुग्रे ॥ २६ ॥

टीका—देवता, कूआ, तालाब आदि की प्रतिष्ठा करना विकाह, अग्न्याधान, मुन्डन, यज्ञोपवोत, राज्याभिषेक गृह प्रवेश ये सब काम दक्षिणायन सूर्य में वृहस्पति और शुक्र को बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में और अस्त में और पुच्छल तारे के उदय में नहीं करने चाहिए कोई कोई आचार्य कहते हैं कि उस पक्ष को ही त्यागना चाहिए कोई कोई कहते हैं कि ७ दिन को ही त्यागना चाहिए कोई २ कहते हैं कि जब तक दिखाई दे तभी तक शुभ कार्य वर्जित है ॥२६॥

बाल्यावस्था और वृद्धावस्था का प्रमाण ।

(छं.अ.] पुरः पश्चाद्भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्धकम् ॥ पक्षं पंचदिनं ते द्वे गुरोः पक्षमुदाहृते ॥ २७ ॥

टीका—शुक्र जो पूर्व में उदय होय तौ [illegible] दिन का और पश्चिम में उदय होय तौ १० दिन का बाल्य मानना चाहिए इसी प्रकार पूर्व में अस्त होय तौ १५ दिन का और पश्चिम अस्त होय तौ ५ दिन का

शुक्र की वृद्धावस्था होती है और बृहस्पति की १५ की बाल्यावस्था और १५ दिन की वृद्धावस्था होती है ॥२७॥

मतभेद के अनुसार बाल्यावार्धक ।

(छं.अ.) ते दशाहंद्वयोः प्रोक्ते कैश्चित्सप्तदिनं परैः॥ त्र्यहंत्वा त्ययिकेऽप्यन्यैरर्धाहं च त्र्यहं विधोः ॥ २८ ॥

टीका—कुछ आचार्यों ने गुरु और शुक्र दोनों का बाल्य वार्द्धक १० दिन का कहा है चाहें किसी दशा में उदय अस्त क्यों न हों और कुछ आचार्यों ने ७ दिन का कहा है कुछ आचार्यों का मत है कि आवश्यक कार्य में ३ दिन का ही बाल्य, वार्द्धक माने और चन्द्रमा का आधे दिन का बाल्य और तीन दिन का वार्द्धक होता है ॥२८॥

मुण्डन का मुहूर्त ।

(छं.स्र.) चूडा वर्षात्तृतीयात्प्रभवति विहमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी-षर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेंदुशुक्रेज्यकानाम ॥ वारे लग्नांशयोश्चाऽश्वभनिधनतनौनैंधने शुद्धियुक्ते शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषटत्रिस्थपापैः ॥२९॥

टीका—तीसरे वर्ष से लेकर ऊने वर्ष में अष्टमी द्वादशी रिक्ता प्रतिपदा, षष्ठी, पर्व तिथि इनको छोड़कर और चैत्र मास को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में बुध, सोम, बृहस्पति के दिन और सौमाग्रह की लग्न और नवांशक होय अपनी लग्न और जन्म राशि से नष्टम लग्न न होय और लग्न से अष्टम घर शुद्ध होय ज्येष्ठा सहित मृदु संज्ञक, चर संज्ञक लघु संज्ञक नक्षत्र होंय अनुराधा के बिना नक्षत्र होंय और पाप ग्रह ११।६।३ घर में होंय तो मुण्डन शुभ है ॥२९॥

[छं.र.] क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैर्मृत्युशस्त्रमृतिपंगुताज्वराः ॥ स्युः क्रमेण बुधजीवभार्गवैः केन्द्रगैश्च शुभमिष्टतारया ॥ ३० ॥

टीका जो क्षीण चन्द्रमा केन्द्र में होय तौ मृत्यु मंगल केन्द्र में होय तौ शस्त्रघात शनैश्चर होय तौ लंगड़ा सूर्य होय तो ज्वर ये फल होता है और जो बुध, वृहस्पति शुक्र केन्द्र में हों और शुभ तारा होय तौ श्रेष्ठ है ॥ ३० ॥

माता गर्भिणी होय तौ मुण्डन का समय कहते हैं—

[छं.अ.] पंचमासाधिकेमातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् ॥ पंचवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥ ३१ ॥

टीका—जो माता के ५ माससे अधिक गर्भ होय तो बालक का मुण्डन शुभ नहीं है यदि बालक को अवस्था ५ साल से अधिक होय तौर माताके गर्भवती होने पर भी बालक का मुण्डन शुभ है ॥ ३१ ॥

मुण्डन में दुष्ट तारा का परिहार—

(छं.शा.) तारादौष्ट्येऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा चौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे ॥ सौम्ये भेऽब्जे शोभने दुष्टताराशस्ताज्ञेया चौरयात्रादिकृत्ये ॥ ३२ ॥

जो चन्द्रमा त्रिकोण में उच्च में अथवा शुभग्रहों के षड्वर्ग में होय मित्र के षड्वर्ग अथवा अपने षड्वर्ग में होय तौ दुष्ट तारा होने पर भी मुण्डन और यात्रा शुभ है ॥ ३२ ॥

मुण्डन आदि में समय का निषेध—

(छं.अ.) ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत ॥ ज्येष्ठापत्यस्य नो ज्येष्ठेकैश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ॥ ३३ ॥

टीका—मासिक धर्म होगया हो तौ ५ दिन तक और प्रसूतिका

होय तौ १ महीना तक उस के बालक का मुण्डन नहीं करना

चाहिये बड़े पुत्र का ज्येष्ठ में मुण्डन नहीं करे कुछ आचार्यों का मत है कि मार्गशीर्ष में भी मुण्डन नहीं करै ॥ ३३ ॥

प्रसंगसे क्षौर में निषेध कहते हैं—

[छं.शा.] दंतक्षौरनखक्रियाऽत्रविहिता चौलेदिते वारभे पातं-ग्यारवीन् विहाय नवमं घस्रं च सध्या तथा ॥ रिक्तां-पर्व निशां निरासनरणामप्रयाणोद्यतस्नाताभ्यक्तकृता-शनैर्नहि पुनः कार्या हितप्रेप्सुभिः ॥ ३४ ॥

टीका—दांत सम्बन्धी कार्य, और नख कटवाना ये काम मुण्डन में कहे हुए नक्षत्र और वारों में करने चाहिये। शनि, मंगल रवि इन वारों को छोड़कर नवम दिन संध्या समय, रिक्ता तिथि, पर्वतिथि, रात्रि, आसन के विना संग्राम के लिये तैयार होय अथवा किसी ग्राम को जा रहा हो स्नान किये होय, उवटना कर चुका हो ऐसे समय पर जो अपना हित चाहै तौर क्षौर न करावै ॥ ३४ ॥

[छं.म.] कृतुपाणिपीडमृतिबंधमोक्षणे क्षुरकर्मच द्विजनृपाज्ञ-याचरेत ॥ शववाहतीर्थगमसिंधुमज्जनक्षुरमाऽऽचरेन्नखलु गर्भिणीपतिः ॥ ३५ ॥

यज्ञ, विवाह, मृत्यु, अथवा कैद से छूटा होय तौ ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से क्षौर करा लेय और ऊप्र के दोषों का विचार न करै ॥ गर्भिणी स्त्री का पति मुर्दनी में न जाय तीर्थ को न जाय समुद्र में स्नान न करै और हजामत न बनवावै ॥ ३५ ॥

[छं.भु.] नृपाणां हितंक्षौरभे श्मश्रुकर्म दिने पंचमे पंचमस्योदये वा ॥ षडग्निस्त्रि मैत्रोष्टकः पंचपित्र्योब्दतोऽध्यर्क्षभा क्षौर कृन्मृत्युमेति ॥ ३६ ॥

टीका—राजाओं को पांचमे २ दिन क्षौर में कहे हुए नक्षत्रों में ठोड़ी बनवाना चाहिये यदि वह नक्षत्र न होय तौ उस नक्षत्र

की लग्न में ठोड़ी बनवावै जो मनुष्य एक वर्ष में कृत्तिकामें छै वेर अनुराधा में तीन वेर रोहिणीमें आठवेर मघामें ५ वेर उत्तरा फाल्गुनी में ४ वेर हजामत बनवावें तो उसको मृत्यु होय ॥३६॥

अक्षरारंभका मुहूर्त

(छं. प.) गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रयुज्य पंचमाब्दके तिथौ शिवार्क दिग्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक् ॥ लघुश्रवोनिलांत्यभादितीशतक्षमित्रभे चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ ३७ ॥

टीका—पांचवें वर्षमें ११।१२।१०।२।६।५।३ इन तिथियों में उत्तरायण सूर्य में लघु संज्ञक [हस्त अश्विनी पुष्य] श्रवण, स्वाती, पुनर्वसु आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा इनमें से कोई नक्षत्र होय चर राशि को छोड़कर शुभ लग्न होय तौ शुभवार में गणेश विष्णु सरस्वती, लक्ष्मी इनको पूजन करके बालक से अक्षरारंभ करवावै ॥३७॥

विद्यारंभ मुहूर्त–

(छं. पं.) मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेशिवमूलपूर्विकात्रये गुरुद्वयेर्कजीववित्सितेन्हि षट्शरत्रिके ॥ शिवार्कदिक्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः शुभैरधीतिरुत्तमात्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ ३८ ॥

टीका—मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु हस्त, चित्रा, स्वाती श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मूल तीनों पूर्वा, पुष्य आश्लेषा इन नक्षत्रों में रवि, गुरु, बुध, शुक्र इन वारों में ६।५।३।११।१२।१०।२ इन तिथियों में ध्रुव संज्ञक रेवती अनुराधा नक्षत्र भी किसी किसी आचार्य के मत में लिये गये हैं और केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह होंय तौ विद्यारंभ करना श्रेष्ठ है ॥३८॥

यज्ञोपवीत का समय कहते हैं—

[छं.शा.] विप्राणां व्रतबंधनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे वर्षे वा
प्यथ पंचमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे ॥ वैश्यानां
पुनरष्टमेप्यथ पुनः स्याद्द्वादशे वत्सरे कालेऽथ
द्विगुणे गते निगदितं गौणं तदाहुर्बुधाः ॥ ३९ ॥

टीका—ब्राह्मणों का यज्ञोपवोत गर्भ से अथवा जन्म से आठमें वर्ष में पांचवें वर्ष में होना चाहिये और क्षत्रियों का छठे, ग्यारहवें वर्ष में कहा है और वैश्यों का आठ में और बारह वर्ष में कहा है जो इससे दुगुना समय हो जाय तौ गौण काल हो जाता है ये पंडितों ने कहा है ॥३९॥

यज्ञोपवीत में नक्षत्रादि कहते हैं—

(छं.वसस.) क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रेऽर्कविद्गुरुसितेंदु
दिने व्रतं सत् ॥ द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ च
कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चाऽपराह्णे ॥ ४० ॥

टीका—क्षिप्र (अश्विनी, पुष्य, हस्त) ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहणी) आश्लेषा, चर श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाती मूल, मृदु [मृगशिर, रेवती, चित्रा अनुराधा] तीनों पूर्वा, आर्द्रा, इन नक्षत्रों में रवि, बुध, गुरु शुक्र इन वारों में २।३।५।११।१२।१०. इन तिथियों में और कृष्णपक्ष की पंचमी तक यज्ञोपवीत शुभ है अपराण्ह काल में यज्ञोपवीत नहीं करना चाहिये ॥४०॥

यज्ञोपवीत में लग्न भङ्ग होने का योग ।

[छं.प्र.] कवीज्यचंद्रलग्नपा रिपौ मृतौ व्रतेऽघमाः ॥
व्ययेऽब्ज भार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुतेखलाः ॥४१॥

टीका—यज्ञोपवीत में शुक्र, गुरु, चन्द्रमा, लग्नेश ये छठे आठवें घर में होय चन्द्रमा और शुक्र बारहमें घर में होंय तैसे ही लग्न में

आठ में घर में और पांच में पाप ग्रह होंय तौ ये अधम होते हैं ॥ इनका फल अशुभ है ॥ ४१ ॥

अब सामान्य लग्न शुद्धि कहते हैं ।

(छ.अ.) व्रतबंधेऽष्टषड्रिःफवर्जिताः शोभनाः शुभाः ॥
त्रिषडाये खलाः पूर्णो गोःकर्कस्थो विधुस्तनौ ॥ ४२ ॥

टीका—उपनयन में शुभग्रह लग्न से छटे आठमे बारहमें घर में न होंय तौ शुभ हैं और पाप ग्रह तीसरे छटे ग्यारहमें घर में शुभ होते हैं और पूर्ण चंद्रमा बृष और कर्क का होकर लग्न में होय तौ शुभ हैं ॥४२॥

वर्णेश और खाखेश ।

(छ.श.) विप्राधीशौ भार्गवेज्यौ कुजार्कौ राजन्यानामाषधीशो विशां च ॥ शूद्राणां ज्ञश्चांत्यजानां शनिः स्यात् शाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ॥४३॥

टीका—ब्राह्मण वर्ण के स्वामी शुक्र और बृहस्पति हैं क्षत्रिय वर्ण के स्वामी मंगल और सूर्य हैं वैश्यों का स्वामी चंद्रमा शूद्रों का स्वामी बुध है अन्त्यजों का स्वामी शनि है ऋग्वेद का वृहस्पति है यजुर्वेद का शुक्र सामवेद का मंगल अथर्ववेद का बुध शाखेश है ॥ ४३ ॥

वर्णेश शाखेश का प्रयोजन कहते हैं—

(छं. व.) शाखेशवारतनुवीर्यमतीव शस्तं
शाखेशसूर्यशशिजीवबले व्रतं सत् ॥
जीवे भृगौ रिपुगृहे विजिते च नीचे
स्याद्वेदशास्त्रविधिना रहितो व्रतेन ॥ ४४ ॥

टीका—यज्ञोपवीत में शाखेख का ही वार होय शाखेश की ही लग्न होय और शाखेश बली होय तौ अति उत्तम है शाखेश सूर्य चन्द्र वृहस्पति इनका वल होने से यज्ञोपवीत शुभ होता है वृहस्पति और शुक्र शत्रु

के घर में होंय अथवा नाच के होंय अथवा युद्ध में पराजित होंय तौ ऐसे योग में यज्ञोपवीत करने से वह बालक वेद शास्त्र विधि से रहित होता है ।।४४।।

(ज. अ.) जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधिको व्रती ॥
आद्यगर्भेऽ पविप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ॥४५॥

जन्म मासादि का अपवाद—

टीका—जन्म नक्षत्र, जन्म मास, जन्मलग्न, जन्म तिथि इनके होने पर यज्ञोपवीत करने से ब्राह्मण का बालक पहिले गर्भ का होय चाहें द्वितीय गर्भ का होय अधिक विद्वान होता है । और जो क्षत्रिय ज्येष्ठ होय तौ जन्म मास आदि में नहीं होने चाहिए द्वितीय गर्भ का होय तौ श्रेष्ठ है ।।४५।।

बृहस्पति का बल कहते हैं—

(छ. अ.) बटुकन्याजन्मराशेः त्रिकोणायद्विसप्तगः ॥
श्रेष्ठो गुरुः खषटत्र्याद्ये पूजयान्यत्र्य निंदितः ॥४६॥

टीका—बटु और कन्या इनकी जन्म राशि से ९।५।११।२।७ इन घरों में बृहस्पति होय तौ श्रेष्ठ है और तीसरे छटे दशमें और जन्म राशि में होय तौ पूजा का होता है इनसे अतिरिक्त होय तौ निन्दित है ।।४६।।

गुरु के दोषों का अनुवाद—

(छ. अ. स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ॥
रिःफाष्टतुर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन् ॥४७॥

टीका—बृहस्पति उच्च होय अपनी राशि का होय मित्र की राशि का होय अपने नवांशक का होय अपने वर्गोत्तम का होय तौ बारहमां, आठमां, और चौथा होय तौ भी अच्छा है नीच और शत्रु की राशि का शुभ होय तौ भी अशुभ है ।।४७।।

यज्ञोपवीत में वर्जित समय—

(छं.अ.) कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यऽपराह्णके ॥
प्राक्संध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबंधो गलग्रहे ॥ ४८ ॥

टीका—पंचमी से अगाड़ी कृष्ण पक्ष, प्रदोष, अनध्याय शनिवार, रात्रि, अपराण्हकाल सवेरे जिसमें बादल गर्ज चुका हो ऐसा दिन और गलग्रह इनमें यज्ञोपवीत नहीं करना चाहिये ॥ कृष्ण पक्ष की चौथ ७।८।९। १३।१४।३०।१ ये तिथि गलग्रह कहलाती हैं ॥४८॥

यज्ञोपवीत की लग्न में नवांशक का फल—

(छं.अ.) क्रूरो जडो भवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद्वटुः ॥
यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् ॥४९॥

टीका—यज्ञोपवीत की लग्न में जो सूर्य के नवांशक में उपनयन हुआ होय तो क्रूर होता है चन्द्रमा के में जड़ होता है मंगल के में पापी होता है बुध के नवांशक में चतुर होता है बृहस्पति के नवांशक में षट् कर्म करने वाला शुक्र के नवांशक में यज्ञ का भागी शनि के नवांश में मूर्ख होता है ॥४९॥

चन्द्र के नवांश का फल—

(छं.मो.) विद्यानिरतः शुभराशिलवे पापांशगते हि दरिद्रतरः ॥
चन्द्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः कर्णादितिभे धनवान् स्वलवे ॥ ५० ॥

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह की राशि के नवांश में होय तो यज्ञोपवीत धारण करने वाला विद्वान होता है पाप ग्रह के नवांशक में होय तो दरिद्री होता है और जो चन्द्रमा अपनी राशि के नवांशक में होय तो बहुत दुखी होता है और जो चन्द्रमा श्रवण, पुनर्वसु नक्षत्र में अपने नवांशक में होय तो वह बालक धनी होता है ॥५०॥

केन्द्रस्थ ग्रहों का फल—

(छं.अ) राजसेवी वश्यावृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः ॥
प्राज्ञोर्थवान् म्लेच्छसेवी केंद्रे सूर्यादिखेचरै ॥५२॥

टीका—बालक का जिस लग्न में उपनयन हुआ है उस लग्न से केन्द्र में जो सूर्य होय तौ बालक राजा की सेवा करने वाला होता है केन्द्र में चद्रमा होय तौ वैश्य वृति होता है मंगल होय तो शस्त्र से जीविका करने वाला, बुध होय तो पढ़ाने वाला, गुरु होय तो बुद्धिमान शुक्र होय तो धनी शनि होय तो म्लेच्छ की सेवा करने वाला होता ॥५१॥

(छं.अ.) शुक्रे जीवे तथा चंद्रे सूर्य भौमार्किसंयुते ॥
निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निघृणः सद्युते पटुः ॥५३॥

शुक्र, वृहस्पति, चन्द्रमा. इनमें से कोई ग्रह सूर्य से युक्त होता है और इनमें से कोई ग्रह मंगल से युक्त होय तो क्रूर दृष्टि होता है और इनमें से कोई ग्रह शनि से युक्त होय तो निर्दयी होता है और जो शुभ ग्रह से युक्त होय तो चतुर होता है ॥५२॥

चन्द्रमा के कारण शुभा शुभ योग कहते हैं—

(छं.प्र.) विधौ शितांशगे सिते त्रिकोणगे तनौ गुरौ ॥
समस्तवेदविद्व्रतीयमाशगेऽति निर्घृणः ॥५३॥

टीका—यदि चन्द्रमा शुक्र के नवांश में होय और शुक्र त्रिकोण में होय और वृहस्पति लग्न में होय तो वह व्रती बालक सम्पूर्ण वेदों का जानने वाला होता है यदि चन्द्रमा शनि के नवांशक में होंय तौ वह बालक दया रहित होता है ॥५३॥

अब अनध्याय कहते हैं—

(छं.च.) शूचिशुक्रपौषतपसां दिगश्लिरुद्रार्कसंख्यसितति-
थयः ॥ भूतादित्रितयाष्टमीसंक्रमणं च व्रतेष्व
नध्यायाः ॥५४॥

टीका–आषाढ़ शुक्ला १० ज्येष्ठ शुक्ला २ पौष शुक्ला ११ माघ शुक्ला १२ और १४।१५।१।३० अष्टमी और संक्रांति ये अनध्याय तिथि हैं इनमें यज्ञोपवीत नहीं हौता है ॥ ५४ ॥

प्रदोष बतलाते हैं—

[छं. अ.] अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ॥
रात्र्यर्धसाद्प्रहरयाममध्ये स्थितैः क्रमात् ॥५५॥

टीका–द्वादशी को आधी रात को भी त्रयोदशी आजाय षष्ठी को ॥११॥ प्रहर रात को भी जो सप्तमी आजाय तीज को १ प्रहर रात तक जो चतुर्थी आजाय तब भी प्रदोष हो जाता है ॥५५॥

अब ब्रह्मौदन संस्कार का विशेष कहते हैं—

[छं. आ.] प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद्व्रतबंधानंतरं यदि चेत् ॥
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शांतिपूर्वकंतत्स्यात् ॥५६॥

टीका–यज्ञोपवीत भये पोछे ब्रह्मौदन पाक के पहिले यदि कोई उत्पात वा अनध्याय आजाय तो शांति करके ब्रह्मौदन पाक कर लेना चाहिये ॥ ५६ ॥

वेद पाठ के नक्षत्रों का फल—

[छं. व.) वेदकमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूल-
पूर्वासु पौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये ॥
ध्रौवेषु चाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेश-
कर्णे मृगांत्यलघुमैत्रधनादितो सत ॥५७॥

ऋग्वेदो ब्राह्मणों को मृगशिर, आर्द्रा, आश्लेशा हस्त चित्रा, स्वाती, मूल, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में उपनयन शुभ होता है और यजुर्वेदियों को रेवती, हस्त, अनुराधा, मृगशिर, पुनर्वसु पुष्य और ध्रुव संज्ञक इन नक्षत्रों में उपनयन श्रेष्ठ होता है और सामवेदियों को अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त तीनों उत्तरा, आर्द्रा, श्रवण इन नक्षत्रों में यज्ञोपवीत शुभ है और अथर्वण वेदियों को मृग-

शिर रेवती, पुष्य, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, धनिष्ठा, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में उपनयन शुभ है ॥५७॥

विवाह यज्ञोपवीत में माता के रजोदर्शन का विचार—

(छं.अ.) नांदीश्राद्धोत्तरं मातु पुष्ये लग्नांतरे नहि ॥
शांत्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथाननसत् ॥५८॥

टीका—नान्दीमुख श्राद्ध के पीछे जो माता के रजोदर्शन हो जांय और दूसरा लग्न बनता न होय तौ शान्ति करके मुण्डन यज्ञोपवीत,विवाह कर लेना चाहिए बिना शान्ति के शुभ नहीं ॥५८॥

छूरी बांधने का मुहूर्त ।

(छं.अ.) विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे ॥
छूरिकाबंधनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः ॥५९॥

टीक-चैत्र, मंगलवार, और मंगल का अस्त इनको छोड़ विवाह से पहिले यज्ञोपवीत के मुहूर्त में राजाओं को छूरी बांधना शुभ है ॥५९॥

केशान्त और समावर्तन का मुहूर्त—

(छं.अ.) केशांतं शोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसेशुभम् ॥
व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्ततविष्यते ॥६०॥

टीका-सोलह वर्ष में मुण्डन में कहे हुए दिवस नक्षत्र में केशान्त संस्कार शुभ है और यज्ञोपवीत में कहे हुए दिन नक्षत्र में समावर्तन शुभ है ॥ ६० ॥

ऋग्वेद	यजर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
मृगशिर	रेवती	अश्विनी	मृगशिर
आर्द्रा	हस्त	धनिष्ठा	रेवती
आश्लेषा	अनुराधा	पुष्य	हस्त
हस्त	मृगशिर	हस्त	अश्वनी
चित्रा	पुनर्वसु	उत्तरात्र.	पुष्य
स्वाती	पुष्य	आर्द्रा	अनुराधा
मूल	उत्तरात्र.	श्रवण	धनिष्टा
पूर्वात्र	रोहिणी		पुनर्वसु

इति श्री मुहूर्त चिन्तामणी भाषाटीकायां पंचम संस्कार प्रकरणम ॥शुभं॥

अथ षष्टं विवाह प्रकरणम्

अथ विवाह प्रकरणम् ॥ ६ ॥

(छ. व.) भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः ॥
तस्माद्विवाहसमयः परिचिंत्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः शुभशीलधर्माः ॥१॥

टीका- सुन्दर स्वभाववाली जो स्त्री है वह त्रिवर्ग [धर्म, अर्थ, काम,] का साधन होता है अर्थात् सुपुत्र स्त्री के होने से ही त्रिवर्ग सिद्ध होता है अच्छी लग्न में विवाह होने से उसका सुन्दर शील होता है इस लिये विवाह के लग्न का बिचार करना चाहिये लग्न के बिगड़ जाने से सुन्दर शील और धर्म नहीं होते ये लग्न के ही आधीन होते हैं ॥१॥

अब प्रश्न लग्न का बिचार कहते हैं ।

(छं.स्र.) आदौ संपूज्यरत्नादिभिरथ गणकं वेदयेत्स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहंदिगीशानलहयविशिखे प्रश्नलग्नाद्यदींदुः ॥
दृष्टो जीवेन सद्यः परिणयनकरो गोतुलाकर्कटाख्यं
वा स्यात्प्रश्नस्य लग्नंशुभखचरयुतालोकितंतद्विध्यात् २

टीका–प्रथम ही प्रश्न करनेवाला हाथ में रत्न वस्त्र लेकर ज्योतिषी के पास जाय और सावधान चित्त देख उसकी भेंट करके कन्या के विवाह का मुहूर्त पूछे प्रश्न करने के समय प्रश्न लग्न से १०।११।३।७।५ इनघरों में यदि वृहस्पति से देखा हुआ चन्द्रमा होवै तौ जल्दी विवाह होता है अथबा प्रश्न लग्न २।७।४ इनमें से होय और शुभ ग्रह की उस पर दृष्टि होय तो विवाह होता है और फल शुभ है ॥२॥

(छं द्रु) विषमांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः ॥ रचयतो वरलाभलिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥ ३ ॥

टीका—चन्द्रमा और शुक्र ये दोनों विषम राशि में और विषम राशि के नवांशक में होंय और ये दोनों बली होकर लग्न को देखते होंय तौ ये वर का लाभ करने वाले होते हैं और जो ये दोनों सम राशि के नवांशक में होय तौ ये युवति (स्त्री) के देने वाले होते हैं ॥ ३ ॥

प्रश्न लग्न से बैधव्य योग—

(छं. शा.) षष्ठाष्टस्थः प्रश्नलग्नाद्यदिंदु
लग्ने क्रूरः सप्तमे वा कुजः स्यात् ॥
मूर्ताविंदुः सप्तमे तस्य भौमो
रंडा सास्या-दष्टसंवत्सरेण ॥४॥

टीका—जो प्रश्न लग्न में छठे आठ में चन्द्रमा होय लग्न में क्रूर ग्रह होय अथवा सप्तम घर में मंगल होय तौ वह आठ वर्ष के भीतर विधवा होजाय अथवा लग्न में चन्द्रमा होय और सात में घर में मंगल होय तौ भी वह विधवा हो जाय ॥४॥

कुलटादि दोष कहते हैं—

[छं.दो.] प्रश्नतनोर्यदि पापनभोगः
पंचमगो रिपुदृष्टशरीरः ॥ नीचगयश्च तदा खलु
कन्या सा कुलटा त्वथवा मृतवत्सा ॥५॥

टीका—यदि प्रश्न लग्न से पांच में घर में पाप ग्रह होय और वह नीच का होय और उस पर शत्रु की दृष्टि होय तौ वह कन्या कुलटा और मृतवत्सा होती है ॥५॥

विवाह भंग योग बताते हैं।

[छं.पु.] यदिभवति सितातिरिक्तपक्षे
तनुगृहतः समराशिगः शशांकः
अशुभखचरवीक्षितोरिरंध्रे
भवति विवाहविनाशकारकोयम् ॥६॥

टीका–यदि कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा प्रश्न लग्न से छटे आठमें घरमें होय और समराशि का होय और शत्रु को उस पर दृष्टि होय तौ वह विवाहको नष्ट करने वाला होता है ॥६॥

बाल वैधव्य का उपाय–

[छं.शा.] जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाप्य व्रतं ।
सावित्र्या उत पैप्पलंहि सुतया दद्यादिमं वा रहः ॥
सल्लग्नेच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं ।
दद्यात्तां चिरजीविनेत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥७॥

टीका–जन्मपत्री में बाल विधवा योग देखकर उसका पिता सावित्री का पिप्पल का व्रत करवावै और उत्तम लग्न में एकान्त में विष्णु की मूर्ति के संग अथवा पीपल वा घट के संग विवाह करके चिरजीवि वर के साथ उसका विवाह कर देय तौ फिर उस कन्या का वैधव्य दोष मिट जाता है ॥७॥

अब उसकी संतान का विचार कहते हैं—

(छं.स्र.) प्रश्नलग्नक्षणे यादृशापत्ययुक् ।
स्वेच्छया कामिनी तत्र चेदाव्रजेत् ॥
कन्यका वा सुतो वा तदा पंडितै-
स्तादृशापत्यमस्या विनिर्दिश्यते ॥८॥

प्रश्न लग्न के समय जैसी सन्तान को लेकर कोई स्त्री वहां अचानक आजाय यदि उसके साथ कन्या होय तौ उसके भी

कन्या होती है और जो लड़का होय तो उसके भी लड़का होता है ॥८॥

शकुन अपशकुन का फल कहते हैं—

(ब्र.सू.) शंखभेरीविपंचरिवैर्मङ्गलं जायते वैपरीत्य तदा लत्त-येत् ॥ वायसो वा शरःश्वा शृगालो पि वा प्रश्नलग्न क्षणे रोति नादं यदि ॥९॥

टीका—जो प्रश्न के समय शंख, भेरी सितार आदि का शब्द सुनाई देय तो मंगल का सूचक होता है और कौआ, गधा, कुत्ता, स्यार, ये जो शब्द करै तो अशुभ होता है ॥९॥

कन्या को सगाई का मुहूर्त ।

(छ.म.)विश्वस्वातीवैष्णयपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयै र्वा करपीडोचित ऋक्षैः ॥ वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः संतोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणं हि ॥१०॥

टीका—उत्तराषाढ़, स्वाती, श्रवण तीनों पूर्वा अनुराधा, धनिष्ठा कृत्तिका, अथवा विवाह में कहे नक्षत्रों में वस्त्र अलंकार फल पुष्प इनसे कन्या को सन्तुष्ट करके तिलक लगाके कन्या का वरण करै ॥१०॥

वरकी सगाई का मुहूर्त ।

(छ.म.)धरणिदेवोथवा कन्यकासोदरः शुभदिने गीतावाद्यादीभः संयुतः ॥ वरवृत्तिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्वन्हिपूर्वात्रयैराचरेत् ॥११॥

टीका—ब्राह्मण अथवा लड़की का भ्राता अच्छे दिन में गीत बाजे के साथ तीनों उत्तरा रोहिणी कृत्तिका तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में वस्त्र और यज्ञोपवीत आदि लेकर वर का वरण करै ॥११॥

विवाह का समय और ग्रह—

[छं.व.] गुरुशुद्धिवसेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ॥ रविशुद्धिवशाच्छुभौ वराणामुभयोश्चंद्र विशुद्धितो विवाहः ॥१२॥

छटे वष के बाद समवर्षों में गुरु की शुद्धि से कन्या का विवाह करै और सूर्य की शुद्धि से वर का विवाह करै और चन्द्रमा की शुद्धि से दोनों का विवाह करै ॥ १२ ॥

विवाह में मासादि कहते हैं ।

(छं.द्रु.) मिथुन कुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेपि रवौ त्रिलवे शुचेः अलिमृगाजगते करपीडनं भवतिकार्तिक-पौषमधुष्वपि ॥१३॥

मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, मेष इनके सूर्य में विवाह शुभ है मिथुन के सूर्य में आषाढ़ शुक्ला १० तक विवाह होता है चांद्र मास के हिसाब से आषाढ़ फाल्गुन, माघ, मार्गशिर, ज्येष्ठ, बैसाख, इन महीनों में होता है किन्तु कार्तिक में जो वृश्चिक के सूर्य होंय और पौष में मकर के सूर्य होंय और चैत्र में मेष के सूर्य आजाय तो इन तीनों महिनों में भी दोष नहीं है ॥ १३ ॥

जन्म मासादिका निषेध ।

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ॥ नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥१४॥

टीका प्रथम गर्भ के पुत्र और कन्या का जन्ममास, जन्म का नक्षत्र, जन्म की तिथि इनमें विवाह नहीं करना चाहिये यदि द्वितीय गर्भ के पुत्र और कन्या का इनमें विवाह करै तो पुत्र देने वाला है ये बुद्धिमान् कहते हैं ॥ १४ ॥

ज्येष्ठ मास में निषेध–

ज्येष्ठद्वंद्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि ॥ केचित्सूर्यं वन्हिगं प्रोज्भय चाहुर्नैवान्यान्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥१५॥

टीका–जो दो ज्येष्ठ होंय तौ मध्यम है यदि तीनों ज्येष्ठ हो जांय तौ कभी विवाह न करै जैसे लड़का भी प्रथम गर्भ का होय और कन्याभी प्रथम गर्भ की होय ज्येष्ठ का महिना हो तौ तीन ज्येष्ठ होय गये ऐसे में किसी २ आचार्य का मत है कि जब कृत्तिका नक्षत्र पर सूर्य आवे तो कृत्तिका नक्षत्र को छोड़कर रोहिणी पर सूर्य के आने पर ज्येष्ठ में विवाह कर लेय परन्तु बहुत से आचार्यों का यह मत है कि ज्येष्ठ वर और ज्येष्ठ कन्या का विवाह करना चाहिये ॥१५॥

विवाह के समय का नियम ।

(छ.ह.) सुतपरिणयात्षरामासांतः सुताकरपीडनं न च निजकुले
तद्वद्वा मराडनादपि मुराडनम् ॥
नच सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके सहजसु-
तोद्वहोब्दार्धेशुभे न पितृक्रिया ॥ १६ ॥

टीका—पुत्र के विवाह के पीछे छै महीने के भीतर कन्या का विवाह नहीं करना चाहिये अपने कुल में पुत्र वा कन्या का विवाह हुआ होय तो उसके पीछे छै महिने तक मुण्डन नहीं होना चाहिये और दो सगे भ्राताओं के संग दो सगी बहिनों का विवाह नही होना चाहिये दो सगे भाइयों में से एक का विवाह हो गया तो दूसरे का ६ महीने के भीतर विवाह न करै इसी प्रकार दो सगी बहिनों का भी ६ महीने के भीतर न करै और विवाहादि शुभ कार्य के अनन्तर ६ महीने तक पिंडादिक का भी निषेध है यदि वर्ष बदल गया होय तो ऊपर का कहा हुआ निषेध

नहीं है जैसे फागुन में पुत्र का विवाह हुआ होय तो वैशाख में कन्या का विवाह करलेय तो दोष नहीं है ॥१६॥

विवाह का निश्चय होने पर कोई मर जाय तो उसका निर्णय ।

[छं.उ.] वध्वावरस्यापि कुले त्रिपूरुषे नाशं व्रजेत्कश्चन निश्चयोत्तरम् ॥ मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते शांत्याथवा सूतकनिर्गमे परैः ॥ १७ ॥

टीका-कन्या और बर का विवाह निश्चय होने के अनन्तर तीन पीढ़ीं के भीतर यदि किसी को मृत्यु हो जाय वो एक महोना के वाद शान्ति करके विवाह करना चाहिये किसी २ का मत यह है कि सूतक बीतने पर विवाह करै यदि माता पिता में से कोई मर जाय तौ साल भर बादकरना चाहिये ॥१७॥

॥ मुण्डन आदि का निर्णय ॥

(छं.उ.) चूडाव्रतं चापि विवाहितो व्रताच्चूडाच नेष्टा पुरुषत्रयातरे । वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः षण्मासतावाद्धविभेदतः शुभः ॥ १८॥

टीका—विवाह के अनन्तर तीन पीढ़ी में छै महीने तक किसी का यज्ञोपवीत और मुंडन नहीं होना चाहिये और यज्ञोपवीत के बाद ६ महीना तक पुत्री को विदा नहीं करनो चाहिए यदि वर्ष बदल गया होयतौ दोष नहीं है ॥१८॥

आश्लेषा आदि में जन्मे हुओं के विवाह का निषेध ।

(छं.व.) श्वश्रूविनाशमहिजौ सुतरां विधत्तः कन्यासुतौ निऋतिजौ श्वशुरं हतश्च ॥ ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजं च शक्राग्निजा भवति देवरनाशकर्त्री ॥ १९ ॥

टीका—आश्लेषा में जन्मे हुए वर कन्या सास को मारते हैं और मूल में पैदा हुए वर कन्या ससुर को मारते हैं ज्येष्ठा में पैदा हुई कन्या जेठ

को मारती है विशाखा में पैदा हुई कन्या देवर को मारती है ।।१९।।

विशाखा आदि का अपवाद ।

(छं. अ.) द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा ।।
मूलांत्यपादसार्पाद्यपादजाते तयोः शुभे ।। २० ।।

टीका–विशाखा के आदि के तीन चरणों में जिसका जन्म होय वह देवर को सुख देती है मूल के चौथे चरण की जन्मी अपने श्वसुर कोऔर अश्लेषा के प्रथम चरण की जन्मी हुई अपनी सास को सुख देती है ।। २० ।।

वर कन्या के जन्मपत्र का मेलापक–

(छं अ.) वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।। गणः मैत्र भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ।।२१।।

टीका–वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाड़ी ये आठ बात देखी जाती हैं इनमें एक २ गुण अधिक है जैसे वर्ण का एक गुण वश्य के दो गुण तारा के तीन योनि के ३ ग्रह मैत्री के ५ गण मैत्री ६ भकूट के ७ नाड़ी के ८ इस प्रकार जानने ।। २१ ।।

अब वर्ण की रीति कहते हैं–

विवाह प्रकरण

विवाह प्रकरण

[छं. प्र.] द्विचा झषालिकर्यटास्त तो नृपा विशोंघ्रिजाः ।। वरस्य वर्ण तोधिका वधूर्नशस्यते बुधैः ।।२२।।

कन्याप	वर्णगुण			
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१
	ब्रा०	क्ष०	वै०	शू०

टीका–मीन, वृश्चिक, कर्क, इनका ब्राह्मण वर्ण है मेष सिंह धन इन

राशियों का क्षत्रिय वर्ण होता है वृष कन्या, मकर का वैश्य वर्ण है मिथुन तुला, कुंभ का शूद्र वर्ण है वर से कन्या का वर्ण उत्तम होना ठीक नहीं है ॥ २२ ॥

अवश्य कहते हैं—

(छं) हित्वा मृगेंद्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः ॥ सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यन्यत् ॥२३॥

वर्णचक्रम् ।

मेष	सिंह	धन	वर्ण	क्षत्रि
मीन	कर्क	वृश्चि.	वर्ण	ब्राह्म
वृषभ	कन्या	मकर	वर्ण	वैस्य
मिथु	तुला	कुम्भ	वर्ण	शूद्र

टीका–सिंह को छोड़कर सब राशि नर राशि (३।६।७) के बस में हैं और जलचर राशि (४।१०।११।१२) भक्ष्य हैं और वृश्चिक को छोड़कर सब सिंह के बस में हैं और सब वश्यावश्य का प्रकार मनुष्यों के व्यवहार से जान लेना चाहिये ।।२३।।

अब तारा कूट कहते हैं—

(छं अ) कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि ॥ गणयेन्नभिः वहृत शेष त्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥२४॥

चतुष्पद	२।	॥	१	०	२
मनुष्य	२।	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
बनचर	०	०	२	२	०
कीट	१	०	१	०	२

टीका-कन्या के नक्षत्र से बर के नक्षत्र तक गिनै और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनै और उसमें ९ का भाग देय भाग देने से जो (३।५।७) ये वचैं तो फल अशुभ है ।।२४।।

अब योनि कहते हैं ।

(छं शा) अश्विन्यंबुपयोर्हयोनिगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः

सिंहो वस्जपादभयोः समुदितो याम्यांत्ययोः कुँजरः

मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णांबुनोर्वानरः
स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चांद्राब्जयोन्योरहिः ॥२५॥
ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरंग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोःथ मघायोन्योस्तथैवोंदुरुः ॥
व्याघ्रो द्वीशभचित्र योरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयोर्योनिः
पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ॥२६॥

टीका—अश्विनी शतभिषा की घोड़ा योनि होतो है स्वाती, और हस्त की महिष योनि होती है धनिष्ठा और पूर्वा भाद्रपद की सिंह, भरणी रेवती की हस्तियोनि पुष्य कृत्तिका की मैढ़ायोनि श्रवण पूर्वाषाढ़ की बन्दरयोनि उत्तराषाढ अभिजित की नकुलयोनि, रोहिणी, मृगशिर को सर्पयोनिज्येष्ठा अनुराधा का हरिणयोनि मूलआर्द्रा को कुत्तायोनि पुनर्वसुआश्लेषाकीमार्जार योनि यघा पूर्वाफाल्गुनी की मूषकयोनि विशाखा चित्रा को व्याघयोनि उत्तराषाढ उत्तराभाद्रपद को गौ यौनि होती है जो दोनों को एक योनिहोय तौ उत्तम है और जो बैर होय तौ नेष्ट है योनि के श्लोकों में एक एक चरण में दो दो योनि कही है उनका आपस में बैर जानना जैसेपहिले चरण में घोड़ा और महिष योनि कही है इन दोनों का आपस में बैर होता है इसी प्रकार हर एक चरण में समझना चाहिए ॥२५॥२६॥

यह मैत्री कहते हैं–

(छ.शा.)मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनःशुक्रार्कजौ बैरिणौ
सौम्यश्चास्य समौ विधोर्बुधरवी मित्रे नचास्य द्विषत् ।
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चंद्रेज्यसूर्या बुधः
शत्रुःशुक्रशनी समौच शशभृत्सूनोः सिताहस्करे ॥२७॥

मित्रे चास्यरिपुः शशी गुरु-
शनिक्ष्माजाः समा गीष्पतेः
मित्राण्यर्ककुजेंदवो बुधसितौ-
शत्रूसमः सूर्यजः ॥ मित्रेसौम्य-
शनी कुवेः शशिरवीशत्रु
कुजेज्यौ समौ ॥ मित्रे शुक्र-
बुधौ शनेः शशिरविक्ष्माजा
दिषोन्यः समः ॥२८॥

ग्रह मैत्री गुणाः।

कन्या	पति						
	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सू.	५	५	५	३	५	०	०
चं.	५	५	४	५	४	४	४
मं.	५	४	५	०	५	३	३
बु.	५	१	०	५	०	५	४
वृ.	५	४	५	०	५	०	३
शु.	०	०	३	५	०	५	५
श.	०	०	०	४	३	५	५

टीका—सूर्य के मंल, गुरु, चन्द्र ये मित्र हैं शुक्र शनि शत्रु हैं चन्द्रमा सम है चन्द्रमा के बुध सूर्य मित्र हैं इसका कोई शत्रु नहीं है वाक के ग्रह चन्द्रमा के सम हैं॥ मङ्गल के चन्द्रमा, गुरु सूर्य ये मित्र हैं बुध शत्रु हैं शुक्र शनि समान हैं बुध के शुक्र और मित्र हैं चन्द्रमा शत्रु हैं शनैश्चर, गुरु मंगल ये समान हैं वृहस्पति के। सूर्य मंगल दोनों चन्द्रमा मित्र है बुध शुक्र शत्रु है और शनि सत है शुक्र के शनि बुध मित्र हैं वृहस्पति और मंगल समान है सूर्य और चन्द्रमा शत्रु हैं शनिके शुक्रऔर बुध मित्र हैं चन्द्र सूर्य मङ्गल शत्र हैं गुरु सम है॥२८॥

ग्रहमैत्रीगुणचक्रम

वधू	वर						
	र	चं	मं	बु	ब	शु	श
र	५	५	५	३	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥।	॥
म	५	४	५	॥।	५	३	॥
बु	४	१	॥।	५	॥।	५	४
वृ	५	४	५	॥।	५	॥।	३
शु	०	॥।	३	५	॥।	५	५
शा	०	॥।	॥।	४	२	५	५

गण कूट कहते हैं—

(छं.व.) रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिव-
स्विंद्रमूलवरुणानल-
तक्षराधाः॥ पूर्वोत्तरा-
त्रयविधातयमेशभानि-
मैत्रादितींदुहरिपौष्णमरुल्लघूनि २९

गणगुणचक्रम

वधू	वर		
	दे.	म.	रा.
दे.	६	५	१
म.	६	६	०
रा.	१	०	६

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु	बृ	शु	श.
मित्र	चं. मं. गु.	र. बु.	गु र चं.	र. शु.	र. चं मं.	बु श.	बु शु.
सम.	बु.	मं. गुशुश	४ शु. श.	मंगु श.	श.	मं गु.	गु.
शत्रु	शु. श.	०	बु.	च.	बु. शु.	र. सो.	र. च मं

टीका—मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका चित्रा विषाखा इनका राक्षस गण होता है तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा रोहिणी, भरणी, आर्द्रा इनका मनुष्य गण होता है अनुराधा पुनर्वसु मृगशिर, श्रवण रेवती, स्वाती, अश्विनी हस्त, पुष्य, इनका देवता गण होता है ॥२९॥

(छं. मा.) निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्यद्वैरमेकांततोत्र ॥ ३० ॥

टीका—जो वर कन्या का एक ही गण होय तो बहुत प्रीति होय देवता और मनुष्यों में मध्यम प्रीति होती है एक का मनुष्य गण होय और एक का राक्षस होय तौ मृत्यु होय एक का राक्षस और एक का देवता गण होय तो आपस में बैर रहता है ॥३०॥

राशि कूट कहते हैं।

(छं. अ.) मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ॥
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत ॥ ३१ ॥

टीका—जो दोनों की छठी आठकी राशि होय तौ मृत्यु जानना और जो वर कन्या की नमी पांचमी राशि होय तौ सन्तान की हानि होय और दूसरी बारहमी राशि होय तौ द्रव्य का कष्ट होता है, और जो इससे अलग होय तौ सुख होता है ॥३१॥

अब दुष्ट भकूट का परिहार कहते हैं।

(छं. शा. वि.) प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-

थी राशीश्वरसौहृदेपि गदितो नाडय़ृक्षशुद्धिर्यदा ॥
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखितेनाडय़ृक्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावेनिरुक्तो बुधै : ॥३२॥

टीका-दुष्ट भकूट होय तौ वर और कन्या को राशिका स्वामी एक होने पर विवाह उचित है राशि के स्वामियों में मित्रता होय तौ भी दुष्ट भकूट का दोष नहीं है परन्तु नाडी एक न होनी चाहिए यदि दोनों की एक नाड़ी होय तो विवाह नहीं करना चाहिए यदि अन्य नक्षत्रों के नवांशक के स्वामियों की मित्रता होय तो भी भकूट का दोष नहीं है नाड़ी अलग २ हाने पर विवाह कर लेना चाहिए राशिवशता हौय तो भी विवाह कर लेना चाहिए जो राशिवता न होय तौ तारा की शुद्धि से विवाह कर लेना चाहिए तुष्ट भकूट के ५ परिहार हैं एक तो स्वामी का एक होना, दूसरा स्वामियों में मित्रता, तोसरा नवांशक के स्वामियों की मित्रता, चौथा तारा की शुद्धि पांचवा राशि वशता ये परिहार हैं ॥३॥

(छं.शा.) मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ-
द्वंद्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः ॥
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं
खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूतम् ॥ ३३ ॥

टीका—जो वर कन्या के राशि स्वामियों की मित्रता होय तौ अथवा नवांशक पतियों की मित्रता होय तो गणों का दोष नहीं है जो राशि स्वामियों में शत्रुता होय तो अच्छे भकूट को नष्ट कर देता है और जो ग्रहों में प्रीति होय तो दुष्ट भकूट नष्ट होता है ॥३३॥

अब नाड़ीकूट कहते हैं।

(छं.स्र.) ज्येष्ठारौद्रार्यमांभः पतिभयुगयुगं
दास्रभं चैकनाडीं पुष्येंदुत्वाष्ट्रयि-
त्रांतकवसुजलभं योनिबुध्न्यं च

कन्या नाडी		वर		
		आ	म	अं
	आ	०	५	५
	म	५	०	५
	अ	५	५	०

मध्या ॥ वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभंचापरास्याद्द्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यांहि मृत्युः ॥३४॥

नाड़ी गुणचक्रम्

वर \ कन्या	आ	म.	अं
आ	०	८	८
म.	८	०	८०
अं.	८	८	

टोका–ज्येष्ठा, मूल उत्तराफाल्गुनी हस्त आर्द्रा पुनर्वसु शतभिषा पूर्वाभाद्रपद अश्विनी इनकी आदि नाड़ी होती है पुष्य, मृगशिराचित्राअनुराधा भरणी धनिष्ठा पूर्वाषाढ़ा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा भाद्रपद इनमें जन्म लेने से मध्य नाड़ो होती है स्वाती विशाखा कृत्तिका रोहिणी आश्लेषामघाउत्तराषाढा श्रवण रेवती इनमें जन्म होने से अन्त्य नाड़ो होती है जो स्त्री पुरुष का एक नाड़ी में विवाह होय तो शुभ नही है और जो मध्यनाड़ीमें विवाह होय तो मृत्यु होती है ॥३४॥

वर्गकूट कहते हैं

[छं.आ.] अकचटतपयशवर्गाः खकेशमार्जारसिंहशुनां ॥
सर्पाखुमृगावीनां निजपंचवैरिणामष्टौ ॥ ३५ ॥

अवर्ग का गरुड़ वर्ग है कवर्ग का बिलाव वर्ग है चवर्ग का सिंह वर्ग टवर्ग का कुत्ता तवर्ग का सर्प वर्ग पवर्ग का मूषक वर्ग यवर्ग का मृग वर्ग शवर्ग का मेढा वर्ग होता है ये अपने से पांच में २ बैरी होतेहैं जैसे अवर्ग का गरुड़ वर्ग और उससे पांचवें तवर्गहै उसका सर्प वर्ग है इन दोनों में आास में वैर है ॥ ३५ ॥

ताराचक्रम्

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

नक्षत्र राशि के एक होने का विचार ।

(छं.शा.) राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्येराशियुग्मं तथैव।।नाडीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्॥३६॥

टीका-दोनों की राशि तौ एक होय और नक्षत्र अलग २ होंय अथवा वर कन्या का नक्षत्र एक होय और राशि अलग२होयतौ गण और नाड़ी का दोष नहीं है और जो दोनों का नक्षत्र एकही होय और चरण अलग २ होय तौ भी वहां शुभ है दोष नहीं होता ॥३६॥

राशि और नवांशक स्वामी

(छं.म.) कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रजाः
कविभौमजीवशनिसौरयो गुरुः
इह राशिपाः क्रियमृगास्योतलिके-
दुमतो नवांशविधिरुच्यते बुधैः ॥३७॥

टीका-मङ्गल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध , शुक्र, मङ्गल, गुरु, शनि, गुरु ये क्रम से मेषादिक राशियों के स्वामी हैं और मेष मकर, तुला, कर्क, इनसे नवांशक देखे जाते हैं जैसे मेष में पहिले मेष का नवांश रहेगा वृष में पहिले मकर का रहेगा इसी प्रकार समझ लेना ॥३७।

होरा की विधि-

(छं.श.) समग्रहमध्ये शशिरविहोरा ।
विषमभमध्ये रविशशिनोः सा ॥३८॥

टीका-सम राशि में प्रथम चन्द्रमा की होरा होतो हैं दूसरी सूर्य की और बिषम राशि में पहिली सूर्य को और दूसरी सूर्य कीं १५ अंश को होरा होती है ॥३८॥

त्रिशांश और द्रेष्काण-

(छं.ब.) शक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य बाण-
शैलाष्टपंचविशिखा समराशिमध्ये ॥
त्रिंशांशिको विषमभे विपरीतमस्मा-

द्द्रेष्काणकाः प्रथमपंचनवाधिपानाम् ॥३९॥

टीका–सम राशि में प्रथम ५ अँश का स्वामी शुक्र है फिर सात अंश का स्वामी बुध है फिर ८ अंश का स्वामी गुरु है फिर ५ अंश का स्वामी शुक्र है फिर ५ अंश का स्वामी मंगल है और विषम राशि में विपरीत समझना द्रेष्काण १० अंश का होता है प्रथम द्रेष्काण में अपनी राशि होती है दसरे में पांचमी और तीसरी में नमी राशि होती है ॥३९॥

अब द्वादशाँश कहते हैं।

छं.व.) स्याद्द्वादशांश इह राशित एव गेहं
होराथ दृक्कनवमांशकसूर्यभागाः ॥
त्रिशांशकश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः
सौम्यैः शुभं भवति चाशुभमेव पापैः ॥४०॥

टीका—द्वादशांश अपनी राशि से ही जानना यह २॥ अँश का होता है मेष में २॥ अँश तक मेष का द्वादशांश होता है और ५ अंश तक वृष का इसी प्रकार जानना गेह, होरा, द्रेष्काण, नवमाँश, द्वादशांश, त्रिशांश, इसी को षड्वर्ग कहते हैं ये जो सौम्य ग्रहों के होंय या सौम्य ग्रहों से मुक्त होय तौ फल शुभ होता है और पाप ग्रहों के होंय या उनसे युक्त होंय तौ अशुभ जानने ॥४०॥

पूर्वमध्यापरभागी नक्षत्र-

[छं.इं.] पौष्णेशशाक्राद्रससूर्यनंदाः पूर्वार्धमध्यापरभाग-
युग्मम् ॥ भर्ता प्रियः प्राग्युजिभे स्त्रियाः स्यान्म-
ध्येद्वयोः प्रेमपरे प्रिया स्त्री ॥४१॥

टीका-रेवती से ६ नक्षत्र पूर्वार्द्ध योगी होते हैं आर्द्रा से १२ नक्षत्र मध्यभाग योगी होते हैं ज्येष्ठा से ९ नक्षत्र पर भाग के होते हैं इनका फल यह है कि पूर्वार्द्ध के नक्षत्रों में जो समागम होय तौ स्त्री को पति प्यारा होता है और मध्य भाग के नक्षत्रों में होय तौ परस्पर प्रीति होती है और पर भाग के नक्षत्रों

में होय तो पुरुष को स्त्री प्यारी होती है ।।४१।।

स्वामी के नक्षत्र से सेवक आदि का नक्षत्र पूर्व होय

उसका फल-

(छं.व.) सेव्वाधमर्णयुवतीनगरादिभं चेत
पूर्वं हि भृत्यधनिभर्तृपुरादिसद्भात् ।।
सेवाविनाशधननाशनभर्तृनाश
ग्रामादिसौख्यहदिदं क्रमशः प्रदिष्टम् ।। ४२ ।।

टीका-यदि सेवक, धनी पति, शहर या ग्राम इनके नक्षत्रों से स्वामी, ऋणी, स्त्री नगर इनका नक्षत्र पूर्व होय तौ क्रम से सेवा का नाशधन नाश इत्यादि फल जानने जैसे सेवक के नक्षत्र से स्वामी का नक्षत्र प्रथम होय तौ सेवा बिगड़ जाय धनी के नक्षत्र से ऋणी का नक्षत्र पूर्व होने से धन का नाश होता है पति के नक्षत्र से स्त्री का पूव होय तौ पतिका नाश नगर के नक्षत्र से लेनेवाले का नक्षत्र पूर्व होय तौ सुख नहीं होय ।।४२।।

गंडान्त दोष-

(छं.शा.) ज्येष्ठापौष्णभसार्पभांत्यघटिकायुग्मं च मूलाश्विनी-
पित्र्यादौ घटिकाद्वयं निगदितं तद्भस्य गंडांतकम् ।।
कर्काल्यंडजभांततोऽर्धघटिका सिंहाश्वमेषादिगा पूर्णां-
ताद्घटिकात्मकं त्वशुभदं नंदातिथेश्चादिमम् ।।४३।।

ज्येष्ठा, रेवती, आश्लेषा, इनके अन्त की २ घड़ी मूल अश्विन मघा के आदि की २ घड़ी इनकी नक्षत्र गंडान्त संज्ञा है कर्क, वृश्चिक, मीन की अन्त्य की आधी घड़ी सिंह, धन मेष की आदि की आधी घड़ी लग्न गंडान्त होती है पूर्ण तिथि की अन्त की १ घड़ी और नन्दा तिथि के आदि की १ घड़ी तिथि गंडान्त होती है ये विवाहादि शुभ कार्यो में वर्जित हैं ।।४३।।

कर्तरी दोष—

(छं.अ.) लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा ॥
कर्तरीनाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ ४४॥

टीका—यदि लग्न से बारहमें और दूसरे घरमें मार्गी और वक्री पापग्रह बैठे हेंय अर्थात मार्गी पापग्र १२ में घर में होय और वक्री पाप ग्रह लग्न से दूसरे घर में होय तो कर्तरी दोष होता है मृत्यु दारिद्र और शोक को देने वाला होता है ॥४४॥

(छं.अ.) चंद्रेसूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभम् ॥
सौख्यं सापत्न्यवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ॥४५॥

टीका—यदि चन्द्रमा सूर्यादि ग्रहों से युक्त होय तौ दारिद्र्य आदि फल होता है जैसे चन्द्रमा सूर्य के संग में होय तौ दारिद्र्य होय मङ्गल के संग होय तौ मरण होता है बुध युक्त चन्द्रमा होय तौ शुभ गुरु के संग में चन्द्रमा होय तौ सौख्य शुक्र के संग चन्द्रमा होय तौ सापन्त्य शनि के संग चन्द्रमा होय तौ वैराग्य राहु के संग होने से कलह औरकेतुके संग चन्द्रमा होय तो दरिद्रता होनी है और जो चन्द्रमा दो पापग्रहों के संग में होय तो मृत्यु होती है ॥४५॥

अष्टम लग्न का दोष और अपवाद—

(छं.अ.) जन्मलग्नभयोर्मृत्युराशौ नेष्टः करग्रहः ॥
एकाधिपत्ये राशीशेमैत्रे वा नैव दोषकृत् ॥४६॥

टीका—यदि जन्म लग्न और जन्मराशि विवाह की लग्न से अष्टम होय तो विवाह नेष्ट है और जो विवाह की लग्न का और जन्मराशि और जन्म लग्न का स्वामो एक ही होय अथवा स्वामियों में मित्रता होय तो दोष नहीं है ॥४६॥

(छं. उ.) मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियोऽष्टमं

लग्नं यदा नाष्टमगेहदोषकृत् ॥

अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा वधू-

र्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ॥ ४७ ॥

टीका--यदि मीन, बृष, कर्क, वृश्चिक, मकर, कन्या ये राशि विवाह लग्न से अष्टम होंय तौ अष्टम घर का दोष नहीं होता परस्पर मित्रहोने के कारण दोष नहीं होता इस लग्न में विवाह होने से पुत्र आयु औरसुख मिलता है ॥ ४७ ॥

(छं.कु.) मृतिभवनांशो यदि च विलग्ने

तदधिपतिर्वा न शुभकरः स्यात् ॥

व्ययभवनं वा भवति तदंश-

स्तदाधिपतिर्वा कलहकरः स्यात् ॥४८॥

टीका-जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टम घर के लग्नका नवांश विवाह करना शुभ नहीं है अथवा जन्म राशि और जन्म लग्न से जो बारहमी राशि है उसका नवांश या उसका स्वामी विवाह लग्नमेंहोयतौ कलहकारक होता है ॥ ४८ ॥

अब विष घड़ी दोष कहते हैं ॥

(छं.इ.) खरामतों ३० त्यादितिवन्हिपित्र्यभे

खवेदतः ४० के रदत ३२श्च सार्पभे ॥

खबाणतो ५० श्वे धृतितो १८ र्यमांबुपे

कृते २० र्भगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ ४९ ॥

मनोर्द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे

कुपक्षतः २१ शैवकरेष्टि तोजभे ॥

युगाश्विनो २४ बुध्न्यभतोऽपपाम्पभे

खचंद्रतो १० मित्रभवासवश्रुतौ ॥ ५० ॥

मूलेंगबाण ५६ द्विषनाडिकाः कृता ४
वर्ज्याः शुभेऽशो विषनाडिका ध्रुवाः
विनिघ्ना भभोगेन खतर्क ६० भाजिताः
स्फुटा भवेयुर्बिषानाडिकास्तथा ॥५१॥

टीका-रेवती पुनर्वसु, कृत्तिका, मघा इन नक्षत्रों मैं ३० घड़ी के पीछे चार घड़ी विषघटी होती है रोहिणी में ४० घड़ी के पीछे ४घड़ी अश्लेषा में ३२ घड़ी के पीछे ४ घड़ी अश्विनी नक्षत्र ५० घड़ी के पीछे ४ घड़ी उत्तराफाल्गुनी और शतभिषा से १८ घड़ी के पीछे ४ घड़ पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढ़ा, पुष्य नक्षत्र से २० घड़ी के पीछे विशाखा,स्वाती, मृग, ज्येष्ठा इनसे १४ घड़ी के पीछे आर्द्रा हस्त से २१ घड़ी पीछे पूर्वाभाद्र पद से १६ घड़ी पीछे उत्ताराभाद्रपद स्वाती भरणी से २४ घड़ी पीछे और अनुराधा, धनिष्ठा श्रवण नक्षत्रों से १० घड़ी पीछे मूल से ५६ घड़ी पीछे ४ घड़ी विषनाड़ी होती हैं ये शुभ कार्य में वर्जित है विषनाड़ी के ध्रुवाक को भुभोग से गुणा करे और ६० का भाग देय तौ विष नाड़ी स्पष्ट होती है ॥४६॥५०॥५१॥

नक्षत्रविषघटिकाः ।

अ.	भ.	कृ.	रो	मृ.	आ.	पु.	पु.	आश्ले.
५०	१४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२
म.	पू.	उ.	ह	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.
३०	२०	१८	२१	२०	१४	१४	१०	१४
मू.	पू.षा	उ.षा	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	र.
५६	२४	२०	१०	१८	१८	१६	१४	३०

तिथिविषघटिकाः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	ति.
१५	५	८	७	७	११	८	८	७	१०	३	१३	१४	७	अ.	०	घ.

वारविषघटिकाः ।

सु	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वा.	०७
२०	२	१२	१०	७	५	२५	०	०।०

दिन के १५ मुहूर्त

(छं. मा.) गिरिशभुजमित्राः पित्र्यवस्वंबुविश्वे-
भिजिदथ च विधातापींद्र इन्द्रानलौच ॥
निर्ऋतिरुदकनाथोप्यर्यमाथो भगः स्युः
क्रमश इह मुहूर्ता वासरे वाणचन्द्राः ॥५२॥

टीका—दिन के प्रथम मुहूर्त के स्वामी शिव दूसरे के सर्प तीसरे के मित्र चौथे के पितर पांचमे के स्वामी बसु छठे के स्वामी जल सातमे के विश्वदेवा आठमें का अभिजित नौमै का स्वामी ब्रह्मा दशमे का स्वामी इन्द्र ११ में का इन्द्राग्नि १२ में का निर्ऋति १३ में का वरुण १४ में का अर्यमा १५ का स्वामी भगदेवता होता है। मुहूर्त क्रम से दिन में होते हैं ॥५२॥

रात्रि के १५ मुहूर्त कहते हैं।

(छं. अ.) शिवोजपादादष्टौ स्युर्भेशा आदितिजीवकौ ॥
विष्णवर्कत्वष्टमरुतो मुहूर्ता निशि कीर्तिताः॥५३॥

टीका—रात्रि के प्रथम मुहूर्त के स्वामी शिव दूसरे के स्वामी अज चरण तीसरे के स्वामी अहिर्बुध्न्य चौथे का स्वामी पूषा पांचमे का स्वामी अश्विनीकुमार छठे का यम सातमें का अग्नि आठमे का ब्रह्मा नमे का चंद्रमा दशमे का अदिति ११ मे का बृहस्पति १२ मे का विष्णु १३ वें का स्वामी सूर्य १४ मे का त्वष्टा १५ का स्वामी मरुतये रात्रिके १५ मुहर्त कहे हैं जो कार्य जिस नक्षत्र में कहा है वह उसके स्वामी के मुहूर्त में कर लेना चाहिये ॥५३॥

विवाह मुहूर्त कहते हैं।

विवा	आ	भा.	अ.	०	म.	ध.	पूषा.	उ.षा	अ	रा.	ज्ये	वि	मू.	श.	उ. फा.	पू फा
मुहूर्त	१	२	३	०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
रात्रि	आ	पू. भा	उ. भा.	रे.	अश्वि	भ.	कृ	रो.	मृ	पु.	पु.	श्र	ह	चि	स्वा.	
मुहूर्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	

निषिद्ध मुहूर्त कहते हैं ।

(छं.भु.) रवावर्यमाब्राह्मरक्षश्च सोमे
कुजे वन्हिपित्र्ये बुधे चाभिजित्स्यात् ॥
गुरौ तोयरक्षौ भृगौ ब्राह्मपित्र्ये
शनावीशसार्पौ मुहूर्ता निषिद्धाः ॥५४॥

टीका–रविवार को अर्यमा सोमवार को ब्राह्म, रक्ष मुहूर्त मंगल को ११।४ मुहूर्त बुध को ८ मुहूर्त अभिजित् गुरुवार को ६।१२ मुहूर्त शुक्र को ८।४ मुहूत शनिवार को १।२ मुहूर्त निषिद्ध हैं ॥५४॥

वासर मुहूर्ताः ।

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
उ.फा	मू	म	अभि	मू	रा	आ
०	रो	क्रु	०	पू षा	म	आ

वेध रहित विवाह नक्षत्र ।

(छं.प्र.) निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्र्यपित्र्य-
ब्राह्मांत्योत्तरपवनैः शुभो विवाहः ॥
रिक्तामारहिततिथौ शुभेन्हि वैश्व-
प्रांत्यांघ्रिः श्रुतितिभि भागतोऽभिजित् स्यात् ॥५५॥

टीका–मृगशिर, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रोहिणी तीनों उत्तरा स्वाती इन नक्षत्रों पर यदि वेधन होय तो विवाह शुभ है रिक्ता और अमावास्या को छोड़कर शुभ बार में विवाह करें उत्तराषाढ़ का पिछला चरण और श्रवण का पिछला चरण अभिजित मुहूर्त होता है। विवाह से लेकर चतुर्थ कर्म तक पितृ श्राद्ध आदि न होना चाहिये ॥५५॥

अब पंच शलाका का वेध कहते हैं ।

(छं.शा.) वेधोऽन्यो न्यमसौ विरिंच्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयो-

विंश्वे द्धोर्हरिपित्र्ययोग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः
स्वातीवारुणयोर्भ वेन्निरृतिभादित्योस्तथोपांत्ययोः
खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्यो र्वा तृतीयद्वयोः ॥५६॥

पंचशलाकाचक्रम्

टीका—पंच शलाका में रोहिणी और अभिजित का बेध होता है भरणी और अनुराधा का उत्तराषाढ़ और मृगशिर का श्रवण और मघा का हस्त और उत्तराभाद्र पद का स्वाती और शतभिषाका मूल्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रों पर ग्रह होय तौ परस्पर वेध होता है यदि ग्रह नक्षत्र के चतुर्थ चरण पर होय तौ पर नक्षत्र के प्रथम चरण पर बेध जानना और जो ग्रह तीसरे चरण पर होय तौ दूसरे चरण का वेध जानना और जो ग्रह दूसरे चरण पर होय तौ तीसरे चरण का बेध जानना और जो ग्रह नक्षत्र के प्रथम चरण पर होय तौ चौथे चरण का वेध जानना रवि और मंगल का बेध अशुभ होता है ॥ ५६ ॥
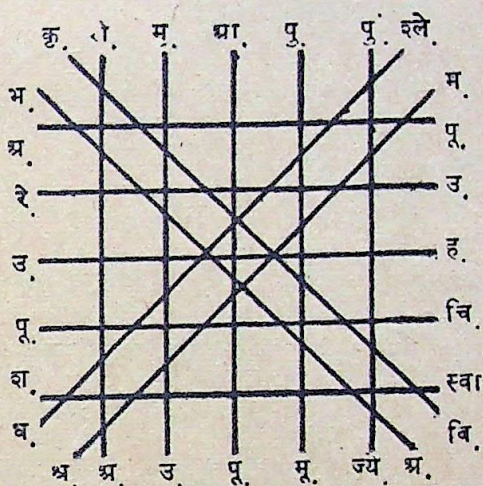
अथ सप्तमशलाकाचक्र कहते हैं,

(शा.वि.) शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमद्वेंबसु
द्वीशेवैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे मिथः ॥
हस्तोपांतिमभे विधातृविधिभे मूलादिती त्वाष्टभे
जाप्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धे कुभृद्रेखिके ॥७५॥

टीका—ज्येष्ठा और पुष्य का बेध होता है शतभिषा, और स्वाती का पूर्वा और आर्द्रा, रेवती और उत्तरा फाल्गुनी, धनिष्ठा और चित्रों उत्तराषाढ़ा और मृग शिर आश्विनी और उत्तरा फाल्गुनी, आश्लेषा अनुराधा और हस्त उत्तराभाद्रपद रोहिणी

और अभिजितमूल और पुर्नवसु चित्रा और पूर्वीभाद्रा का भरणी और मघा कृत्तिका और श्रवण इन नक्षत्रों पर ग्रह स्थित होय तो उनका परस्पर बेध है इसका फल यह है कि विवाह लग्न में चन्द्रमा किसी ग्रह से विद्ध होय तो कन्या विधवा होती है ॥५८॥

शप्तशलाकाचक्रम् ।

क्रूराक्रान्त नक्षत्रों का अपवाद ।

(छं. अ.) ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि
क्रूरमुक्तादिकानि च ॥
भुक्त्वा चंद्रेण भुक्तानि
शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥५८

टीका–जो नक्षत्र क्रूरग्रहों से विद्ध होय और क्रूर ग्रह जिन को भोग चुके होय और वे चन्द्रमा ने भोगकर छोड़ दिये होंय तो उनको शुभ कार्यों में ग्रहण कर लेना चाहिये ॥५८॥

लत्ता दोष कहते हैं ।

(छं. व.) ज्ञराहुपूर्णेंदुसिताः स्वपृष्ठेभं सप्तगोजातिसिरैर्मितंहि। संलत्तयंतेर्कशनीज्यभौमाः सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात् ॥५६॥

टीका—बुध, राहु, पूर्णचद्र, शुक्र ये जिस नक्षत्र पर स्थिति होय उससे सातमे नवमे बाईसमे और पांचमे नक्षत्र को क्रम से लात मारते हैं अर्थात् बुध सातमें को राहु नवमें को पूर्णचन्द्रमा २२ में को और शुक्र ५ में को अपने वर्तमान नक्षत्र से पिछाड़ी वाले को लात मारता है इसी प्रकार सूर्य अपने वर्तमान नक्षत्र से अगाड़ी के १२ वे नक्षत्र को शनि ८ में नक्षत्र को वृहस्पति छठे नक्षत्र को मङ्गल तीसरे आगे के नक्षत्र को लात मारता है ॥ ५६ ।

पात दोष कहते हैं ।

(छं. आ.) हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगंड शूलायोगानाम् ॥
अंते यन्नक्षत्र पातेन निपातितं तत्स्यात् ॥६०॥

टीका—हर्षणयोग, वैधृति, साध्य, व्यतीपात गंड, शूल इन योगों के बीतने के समय का जो नक्षत्र है वह पात से पतित होता है ॥६०॥

क्रान्ति साम्य दोष ।

[छं. शा.] पंचास्याजौ गोमृगौ तौलिकुंभौ
कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे
तत्रान्योन्यं चंद्रभान्वोर्निरुक्तं
क्रांतेः साम्यं नो शुभं मंगलेषु ॥ ६१ ॥

सिंह, मेष, बृष, मकर, तुला, कुंभ, कन्या, मीन, कर्क, बृश्चिक, धन, मिथुन इन राशियों ?र सूर्य चन्द्रमा का जो क्रान्ति साम्य है (एक लकीर पर जो स्थित होता है वह सब शुभ कार्यों में वर्जित कहा है ॥६१॥

क्रांति साम्य ।

एकार्गल दोषक कहते हैं—

[छं. इं.] व्याघातगंडव्यतिपातपूर्वेशू
लांत्यवज्रे परिघातिगंडे ॥
एकार्गलाख्योह्यभिजित्समेतो
दोषः शशा चेद्विषमर्क्षगोर्कात् ॥६२॥

टीका—व्याघात, गंड व्यतीपात आदि अशुभ योग शूल वज्र, वैधृति, परिघ, अतिगंड ये योग जिस दिन होंय उस दिन सूर्य के नक्षत्र से अभिजित समेत चन्द्रमा के नक्षत्र को गिनै यदि सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा का नक्षत्र बिषम होय तो एकार्गल दोष होता है और जो सम होय तो नहीं होता ॥६२॥

उपग्रह दोष कहते हैं—

(छ.इ.) शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्य स्थितिधृतिश्च प्रकृतेश्च पंच उपग्रहाः सूर्यभतोब्जताराः शुभा न देशे कुरुवाल्हिकानाम् ॥६३॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से जो चन्द्रमा का नक्षत्र पांचमां, आठमां, दशमां, चौदहमां, सातमां, उन्नीसमां, पन्द्रहमां १८ वां इक्कीसवां २२ वां २३ वां २४ वां होय तो उपग्रह होता है यह दोष कुरुवाल्हिक देश में ही वर्जित है और जगह नहीं ॥६३॥

पात उपग्रह का अपवाद और अर्द्धयाम—

(अ. ष्ट.) पातोपग्रहलत्तासु नेष्टों घ्रिः खटेपत्समः ॥
वारस्त्रिघ्नोष्टभिस्तष्टः सैकः स्यादर्धयामकः ॥६४॥

टीका—पात, उपग्रह, लत्ता, इनमें ग्रह के चरण के समान नक्षत्र का चरण अशुभ होता है अर्थात् पात में और उपग्रह में सूर्य जिस चरण पर होय वोही चरण नक्षत्र का अशुभ होता है और नहीं लत्ता दोष में लत्ता करने वाले जिस चरण पर होय वोही चरण वर्जित है और नहीं बार को तिगुना करै आठ का भाग देय जो शेष बचै उसमें १ जोड़ देय वह अर्द्धयाम होता है ये सब दिन में ही अशुभ होते हैं रात्रि में नहीं ॥६४॥

(छं. अ.) शक्रार्कदिग्वसुरसाग्न्याश्विनः कुलिका रवेः ॥
रात्रौ निरेका तिथ्यंशा शनौ चात्याउ निंदितः ॥६५॥

सूर्यादि वारों में १४। १२। १०। ८। ६। ४। २ ये मुहूर्त कुलिक संज्ञक होते हैं, अर्थात् दिनमान में पन्द्रह का भाग देने से जो दण्डपल लब्ध हों उनको मुहूर्त कहते हैं। ऐसे पन्द्रह मुहूर्त एक दिन में होते हैं। उनमें रविवार को चौदहवां, सोमवार को बारहवां, मङ्गल को दसवां, बुध को आठवां, बृहस्पति को छठा, शुक्र को चौथा, शनैश्चर को दूसरा मुहूर्त्त कुलिकसंज्ञक होता है। यही सब मुहूर्त्त एक हीन होकर इन्हीं दिनों की रात्रि में कुलिक होते हैं अर्थात रविवार की रात्रि में तेरहवां, सोमवार की रात्रि में ग्यारहवां, मंगलवार की रात्रि में नवां, बुध की रात्रि में सातवां, बृहस्पति की रात्रि में पांचवां, शुक्र की रात्रि में तीसरा, शनैश्चर की रात्रि में पहिला तथा पन्द्रहवां भी मुहूर्त कुलिकसंज्ञक होता है। ये मुहूर्त विवाहादि शुभ कार्यों में अशुभ होते हैं ॥६५॥

दग्धातिथि

चापान्त्यगे गोघटगे पतङ्गे कर्काजगे स्त्रीमिथुने स्थिते च।
सिंहालिगे नक्रधटे समाःस्युस्तिथ्यो द्वितीयाप्रमुखाश्च दग्धाः॥

धनु-मीनादि राशियों में सूर्य के स्थित रहते द्वितीयादि सम तिथियां दग्धसंज्ञक होती हैं, अर्थात् धनु, और मीन राशि में सूर्य के स्थिति रहते द्वितीया, बृष और कुम्भ राशि के सूर्य के रहते चतुर्थी, कर्क और मेष राशि में सूय के रहते षष्ठी, कन्या और मिथुन राशि में सूर्य के रहते अष्ठमी, सिंह और बृश्चिक राशि में सूर्य के रहते दशमी तथा मकर और तुला राशि में सूर्य के रहते द्वादशी तिथि दग्धा होती है। दग्धा तिथि में विवाहादि शुभ कार्य न करना चाहिए ॥६६॥

दग्धातिथिचक्

धनु-मीन	वृष कुम्भ	कर्क मेष	कन्या मिथुन	सिंह बृश्चिक	मकर तुला	संक्रांति
२	४	६	८	१०	१२	तिथिदग्धा

जामित्र दोष

लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगे खेटे न स्यादिह परिणयनम्।

किंवा बाणाशुगमितलवगे जामित्रं स्य।दशुभकरमिदम् ॥६७॥

विवाह की लग्न से अथवा चन्द्रमा से सातवें स्थान में यदि कोई ग्रह स्थित हो तो जामित्र दोष होता है। जामित्र दोष में विवाह करना चाहिए। लग्न और चन्द्रमा जिस नवांश में हो उससे पचनवें नवांश में यदि कोई ग्रह स्थित हो तो, और कोई ग्रह जिस नवांश में स्थिति हो उससे पचनवें नवांश में यदि लग्न या चन्द्रमा हो तो भी जामित्र दोष होता है। यह जामित्र दोष विवाहादि शुभ कार्यों में अति अशुभकारक होता है ॥६७॥

दोषों का निवाहरण

उपग्रहर्क्ष कुरुबाह्लिकेषु कलिंगबंगेषु च पातितं भम् ।
सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।६९।

कुरु और बाहलीक, इन पश्चिम के देशों में उपग्रह दोषयुक्त नक्षत्र का, कलिङ्ग और बङ्ग, इन पूर्व के देशों में पात दोश का, सौराष्ट्र और शाल्व, इन पश्चिम के देशों में लत्ता दोषयुक्त नक्षत्र का और पंचाशलाकादि चक्र द्वारा ग्रहों से बेधे हुए नक्षत्र का सब देशों में त्याग करना चाहिए ।६९।

दश दोष

शशाङ्कसूर्यर्क्षयुतेर्भशेषं ख भूयुगाङ्गानि दशेशतिथ्यः ।
नागेन्दवोङ्केन्दुमिता नखाश्चेद्भवन्ति चैते दशयोगसंज्ञाः॥७०॥

अश्विनी से लेकर सूर्य और चन्द्रमा के नक्षत्र तक अलग-अलग गिने। फिर उन दोनों संख्याओं को जोड़कर उसमें सत्ताइस का भाग देने से यदि शून्य, एक, चार, छः, दस, ग्यारह, पन्द्रह, अठारह, उन्नीस, बीस ये अंक बाकी बचें तो दोषी होते हैं, उस नक्षत्र में विवाह शुभ नहीं होता। उदाहरण-यथा उत्तराषाढ़ में चन्द्रमा और अनुराधा नक्षत्र में सूर्यस्थित है। अश्विनी से चन्द्रमा के नक्षत्र की इक्कीस संख्या और सूर्य के नक्षत्र की सत्रह संख्या हुई। इन दोनों का जोड़ अड़तीस हुआ। इसमें सत्ताइस का भाग दिया तो बाकी ग्यारह बचे। उक्त रीति से यह अंक दोषी है, इसलिए उत्तराषाढ़ नक्षत्र में विवाह शुभ नहीं है। ये दश अंक गिनाये गये हैं, इसलिए इनका दशयोग नाम पड़ गया है ॥ ७० ॥

नागेंदवोर्कैंदुमिता नखाश्चेद्भवंति चै
ते दशयोगसंज्ञाः ॥७०॥

टीका—सूर्य और चन्द्रमा के नक्षत्र संख्या को जोड़ देय २७ का भाग देय भाग देने से यदि ०।१।४।६।१०।११।१५।१८।१९।२० इनमें कोई अंक बाकी बचै तो दस दोष समझें ॥७०॥

(छं.शा.) वाताभ्राग्निमहीपचोरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षति-
योगांके दलिते समे मनुयुतेऽथौजे तु सैकेधिते भं दास्रा-
दथ संमितास्तु मनुभी रेखाः क्रमातसंलिखे द्वेधोस्मिन्
ग्रहचन्द्रयोर्न शुभदःस्यादेकरेखास्थयोः ॥७१॥

टीका जो शून्य बचै तो वायु का दोष होय जो १ बचै तौ मेघ से भय होय ४ बचें तौ अग्नि भय ६ बचें तौ राज भय १० बचौं तौ चोरभय ११ बचौं तौ मरण १५ बचें तौ रोग १८ बचें तौ वज्रपात १९ बचौं तौ कलह २० बचें तौ हानि होतो है ॥ योगांक जो शून्यादिक हैं वो यदि सम होय तौ आधा करै और १४ जोड़ देय और जो ऊनें होय तौ १ जोड़कर आधा करे फिर अश्विनी नक्षत्र से गिनै वही नक्षत्र होगा फिर १४ रेखा तिरछी बनावै फिर जो नक्षत्र आया होय उससे लेकर अभिजित समेत२८ नक्षत्र लिखै जो ग्रह जिस नक्षत्र पर होय उसको वहां स्थापन करै दिन के नक्षत्र पर चन्द्रमा धरै जो चन्द्रमा का किसी ग्रह के वेध से वेध हो जाय तौ अशुभ है ॥७१॥

॥ अब बाण दोष कहते हैं ॥

(छं.शा.) लग्नेनाढ्यायाततिथ्योंकतष्टा
शेषे नागद्व्यब्धितर्कैंदुसंख्ये ॥
रोगो वन्ही राजचौरौ च मृत्यु
र्बाण श्चायं दीक्षिणात्यप्रसिद्धः ॥७२॥

टीका-गत तिथियों के अंक को लग्न में जोड़ देय फिर उसमें ९ काभाग देय भाग देने से जो ८।२।४।६।१ शेष बचैं जो क्रम से रोगादिक बाणजानने ८ जैसे बचैं तो रोगवाण होता है २ बचैं तौ अग्निवाण ४ बचैं तौ राजवण ६ बचैं तौ चौरवाण १ बचैं तौ मृत्युवाण योग होता है यह दक्षिण में प्रसिद्ध है और जगह नहीं इसमें तिथि का गणना शुक्ल प्रतिपदा से गिननी ॥७२॥

(छं.मा.) रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रांतियातां-
शकमिति रथतष्टांकैर्यदा पंच शेषाः ॥
रुगनलनृपचौरा मत्युसंज्ञश्च बाणो
नवहृतशरशेषे शेषकैक्ये सशल्यः ॥७३॥

टीका-स्पष्ट सूर्य के अंशों को ५ जगह रक्खै उनमें पहिले में ६ दूसरे में ३ तीसरे १ चौथे में ८ पांच में ४ जोड़ देय फिर अंकों में अलग २ नौ का भाग देय भाग देने से जो पहिले में ५ शेष बचौं तौ रोग वाण होता है और जो दूसरे में ५ शेष बचौं तौ अग्नि वाण और तीसरेमें शेष बचौं तो राज वाण और चौथे में ५ शेष रहें तौ चौरवाण और जो पांचमें ५ शेष रहें तो मृत्युवाण होता है इनका फल नामानुसार जानना इसे प्राच्यवाण कहते हैं बाण दो प्रकार का होता है एक काष्ठशल्यवाण दूसरा लोहशल्य वाण तोसरा वाण काष्ठ शल्य हैं अब इसके अपवाद बाद के लिए लोहशल्य वाण को कहते हैं पहिले रक्खे निरयन संक्रान्ति के अंशों में छै आदि अंक जोड़ कर अलग २ नौ का भाग देय जो पांचौ जगह अलग २ शेष बचे हैं उन सबको जोड़कर एक पिंड बनावैं उसमें ९ का भाग देय जो ५ शेष रहें तो लोह शल्प होता है और जो कोई दूसरा अंक बचे तो सामान्य दोष है लोहशल्य त्रिवाहादिक में वर्जित हैं ॥७३॥

	मे.	वृ.	मि	क.	मि	क.	तु.	वृ.	ध.	म	कु.	मी	
रो.	७	७	६	५	४	३	३	६	८	६	७	६	रोगबाण
	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१८	१७	१५	१६	१५	मेंनिपि
बा.	२६	२५	२४	२३	२२/२१	२१/३०	२०/२९	२७	२६	१४	२५	२०	द्धतिथि
अ.	२	११	९	८	७	६	५	४	३	२	१०	९	अ. बा. मे
	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१६	१८	निषिद्ध.
बा.	२९	२८	२७	२६	२५	२२/२४	२२	२२	२१	२९	२८	२७	ति.
रा.	४	३	२	१०	९	१७	७	६	२	०	३	२	रो. बा. मे.
	२२	२१	२०	१९	१७	२६	१६	१५	१४	१३	१२	१०	निषिद्धति
बा.	१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	३०	२९	
चौ	६	५	४	३	२	१०	९	८	७	६	५	५	चौ बा.
	५	१४	१३	२९	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	निषिद्ध
बा.	२४	२३	२३	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२३	तिथि
मृ.	१	९	८	७	६	५	४	३	१	१०	९	८	मृ. बा. मे.
	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	२९	१८	१७	नि ति.
बा.	२८	१७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	२८	२७	२६	
								३०	२९				

वाण का परिहार—

(छं. शा.) रात्रौ चोररुजौ दिवा नरपतिर्वन्हिः सदा संध्ययो-
र्मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि, मृतिर्भौम्मेग्निचोरौ रवौ ॥
रोगोथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे वर्ज्याश्च
क्रमतो बुधै रुगनलक्ष्मापालचोरामृतिः ॥७४॥

टीका—चोरबाण रात्रि में दिवस में राजबाण वर्जित है अग्निवाणसदा वर्जित है मृत्युवाण दोनों संध्याओं में वर्जित है इसी प्रकार शनिवार को राज बाण, बुध को मृत्युवाण मङ्गल को अग्निवाण और चोरवाणवर्जितहै रविवार को रोगबाण वर्जित है इसी प्रकार उपनयन में रोगबाण छप्पर डालने में अग्निबाण राज सेवामें राजबाण यात्रा में चोरबाण औरविवाहमें मृत्यु वाण ये क्रम से वर्जित है ॥७४॥

ग्रहों की दृष्टि—

(ज. उ.) त्र्याशं त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं
पश्यन्ति खेटोश्चरणाभिवृद्ध्या ॥

मन्दो गुरुर्भूमिसुतः परे च
क्रमेण संपूर्णदृशो भवंति ॥७५॥

टीका–ग्रह जहां बैठा होय वहां से तीसरे और दशम घर को १ पाद दृष्टि से देखता है और नवम पंचम घर पर दो चरण दृष्टि होती है और चौथे आठ में स्थान पर ३ चरण दृष्टि होती है और सप्तम घर परपूर्णदृष्टि होती है और शनि की तीसरे दशमें स्थान पर पूर्ण दृष्टि होतीहै बृहस्पति की नवम पंचम घर पूर्ण दृष्टि होती है और मंगल की चौथे आठमें स्थान पर पूर्ण दृष्टि होती है ॥७५॥

अब लग्न शुद्धि कहते हैं—

(छं.शि.) यदा लग्नांशेशो लवमथ तनुं पश्यति युतो
भवेद्वायं वोढुः शुभफलमनल्पं रचयति ॥
लवद्यूनस्वामी लवमदनभं लग्नमदनं
प्रपश्येद्वा वध्वाः शुभमितरथा ज्ञेयमशुभम् ॥७६॥

(छं.भु.) लवेशो लवं लग्नपो लग्नगेहं
प्रपश्येन्मिथो वा शुभं स्याद्वरस्य ॥
लवद्यूनपोशंद्युनं लग्नपोस्तं
मिथो वेक्षते स्याच्छुभं कन्यकायाः ॥७७॥

(छं.मा.) लवपतिशुभमित्रं वीक्षतेंशं तनुं वा
परिणयनकरस्य स्याच्छुभं शास्त्रदृष्टम् ॥
मदनलवपमित्रं सौम्यमंश द्युनं वा
तनुमदनगृहं चे द्वीक्षते शर्म्म वध्वाः ॥७८॥

टीका–यदि लग्न का स्वामी और नवांशक का स्वामी इन को देखता होय अथवा लग्न और नवांशक में बैठा होय तो वर

के लिये शुभ फल देता है नवांशक से सप्तम नवांशक का स्वामी नवांशक से सप्तम राशि को देखता होय अथवा उसमें बैठा होय अथवा लग्न से सप्तम भाव को देखता होय या उसमें बैठा होय तौ बधु के लिये अत्यन्त शुभ फल देनेवाला होता है और जो इससे विपरीत होय तौ अशुभ फल देता है ॥७६॥

टीका-लग्न के नवांशक स्वामी नवांशन को देखता होय और लग्न का स्वामी लग्न को देखता होय तौ वर को शुभ होता है अथवा आपस में एक दूसरे को देखते होंय तौ भी वर को शुभ फल होता है इसी प्रकार नवांशक से सप्तम नव मांश का स्वामी नवांशक से सप्तम घर को देखता होय और लग्नेश लग्न से सप्तम घर को देखता होय अथवा परस्परएकदूसरे को देखते होंय तौ कन्या के लिये शुभ फल होता है ॥७७॥

टीका-लग्न के नवमांश पति का कोई शुभ ग्रह मित्र होय और वह नवमांश अथवा लग्न को देखता होय तौ विवाह करनेवाले शास्त्रोक्त शुभ फल होता है इसी प्रकार सप्तम घर के नवांशक के स्वामी का मित्र सौम्यग्रह होय और वह लग्न के नवांशक में सप्तम नवांशक पर उसकी दृष्टि होय अथवा लग्न से सप्तम घर को देखता होय तौ स्त्री के लिये शुभ फल होता है ॥७८॥

(छं.मं.) विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान्
दिवसांस्त्यजेदितरसंक्रमेष्वहि ॥
घटिकास्तु षोडश शुभक्रियाविधौ
परतोऽपि पूर्वमपि संत्यजेद्बुधः ॥७९॥

टीका-विषुव (मेष, तुला) अयन (कर्क मकर,) इन चार संक्रांतियों में एक दिन पहिला और एक दिन आगे का और दिन वह जिस दिन संक्रान्ति होय ये शुभ कार्य में वर्जित हैं और बाकी ८ संक्रान्तियों में १६ घड़ी पहिली और १६ घड़ी पिछली शुभ कार्य में वर्जित है ॥७९॥

अब ग्रहों को घड़ियों का नियम कहते हैं–

(छं.अ.) देवञ्यं कर्तवोष्टाष्टौ नाड्योंकाः खनृपाः क्रमात् ॥
वर्ज्याः संक्रमणेर्कादेः प्रायोर्कस्यातिनिंदिताः ॥८०॥

टीका–सूर्य से लेकर ग्रहों को संक्रान्ति में कम से कम ३३।२।९।६।८८।९।१६० इतनी घड़ी वर्जित हैं जैसे सूर्य को संक्रांति की आगे पीछे की मिलाकर ३३ घड़ी वर्जित है चन्द्रमा की २ घड़ी मंगल की ९ घड़ी बुध की ६ घड़ी गुरु की संक्रान्ति को ८८ घड़ी शुक्र की ९ घड़ी शनि की १६० घड़ी शुभ कार्य में वर्जित है। प्रायः करके सूर्य की तौ बहुत ही निन्दित हैं ॥८०॥

पंगु अन्ध आदि संज्ञा–

(छं.उ.) घस्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ
रात्रौ च सिंहाजवृषा दिवांधाः ॥
कन्यानृयुक्कर्कटका निशांधा
दिने घटोऽन्त्यो निशि पंगुसंज्ञः ॥८१॥

टीका–दिन में तौ तुला और वृश्चिक बधिर लग्न हैं रात्रि में मकर और धन ये बधिर लग्न हैं सिह मेष वृष ये लग्न तौ दिन में अन्धीं हैं कन्या मिथुन कर्क ये रात्रि में अंधी हैं दिन में तौ कुम्भ रात्रि में मीन ये पंगु लग्न हैं ॥८१॥

दूसरे मत से पंगु संज्ञा–

वधिरा धन्वितुलालयोऽपराह्णे
मिथुनं कर्कटकोंगना निशांधाः ॥
दिवसांधा हरिगोक्रियास्तुकुब्जा
मृगकुंभांतिमभानि संध्ययोर्हि ॥८२॥

टीका–अपराराह समय में धन, तुला, वृश्चिक ये वधिर हैं मिथुन, कर्क, कन्या ये रात में अंधी लग्न हैं सिंह, वृष, मेष ये दिन

में अन्धी हैं मकर कुंभ मीन ये दोनों संध्याओं में कुवड़ी लग्न हैं ।।८२।।

इनका फल कहते हैं—

(छं.प्र.) दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवांधलग्ने
वैधव्यं शिशुमरणं निशान्धलग्ने ॥
पंग्वंगे निखिलधनानि नाश
मीयुःसर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ॥ ८३ ॥

टीका–वधिर लग्न में जो विवाह करै दरिद्री होय दिवांध लग्न में करै तो स्त्री विधवा होय निशाध लग्न में विवाह होने से बचे मरजाते हैं पंगु लग्न में विवाह होने से धन का नाश होता है यदिलग्नके स्वामीदृष्टि होय तौ दोष नहीं होता ।।८३।।

अब नवांशक का फल कहवे हैं ।

(छं.चि.) कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवे झषगे वा ॥
यर्हि भवेदुपयामस्तर्हि सती खलु कन्या ।।८४।।

टीका—धन, तुला कन्या मिथुन, मीन इन राशियों के नवांशक में विवाह होने से कन्या पतिव्रता होती है ।।८४।।

(छं. श्रीः) अन्त्यनवांशे न च परिणेया
काचन वर्गोत्तममिह हित्वा ॥
नो चरलग्ने चरलवयोगं
तौलिमृगस्थे शशभृति कुर्यात् ॥ ८५ ॥

टीका–विवाह के जो लग्न कहे हैं उनके अन्त्य नवांशक में विवाह न करे यदि वर्गोत्तम होय तौ दोष नहीं है जो तुला और मकर का चन्द्रमा होय तो चर राशियों के चर नवांशक में विवाह न करे ।।८५।।

लग्न भंग होने का योग ।

(छं.उ.जा.) व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये
भृगुस्तनौ चंद्रखला न शस्ताः ॥
लग्नेट् कविग्लौश्च रिपो मृतौ ग्लौ-
र्लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥८६॥

बारहमें घर में शनि होय दशमें घरमें मंगल होय तीसरे घरमें शुक्र होय और लग्न में चन्द्रमा और पाप ग्रह होय तौ भी शुभ नहीं है लग्नेश शुक्र और ये छटे या अष्टम घरमें होय तौ भी विवाह अशुभ है लग्ननेश शुभग्रह और मंगल इनमें से कोई ग्रह सप्तम घर में होंय तो अशभ है ॥ ८६ ॥

रेखा देने वाले ग्रह बतलाते हैं ।

(छं.वसं.) त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोर्कपुत्रा
स्त्र्यायारिगः क्षितिसुतो द्विगुणायगोब्जः ॥
सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरु सितोष्ट
त्रिद्यूनषट्व्यतगृहान्परिहृत्य शस्ताः ॥८७॥

टीका-विवाह लग्न से ३।११।८।६ इन घरों में सूर्य केतु राहु शनि ये चारों ग्रह होंय विवाह लग्न से ३।६।११ घरमें मंगल होय और २।३।११ इन घरों मे चन्द्रमा होय तौ भी शुभ फल होता है बुध और बृहस्पति ७।१२।८ इन घरों को छोड़ कर और स्थानों में होय तौ शुभ हैं औरशुक्र ८।३।७।६।१२ इन घरों को छोड़ कर और घरमें होय तौ शुभ है ॥८७॥

कर्तरी आदि दोषों का अपवाह ।

(छं. शा.) पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी
दोषो नैव सितारिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोपि न ॥
भौमस्त रिपुनीचगे नहि भवेद्भौमोष्टमो दोषकृत्

नीचे नीचनवांशके शशिनि रिः
फाष्टारिदोषोपि न ॥८८॥

टीका—कर्तरी योग करने वाले जो पाप ग्रह हैं वे अपने शत्रु के घर में होंय नीच के होंय अथवा अस्त होय तो कर्तरी दोष नहीं होता है विवाह लग्न से शुक्र का छठे घर में बैठना निषिद्ध कहा है परन्तु शत्रु की राशि का होय अथवा नीच का होय तौ छठे बैठने का दोष नहीं है इसी प्रकार विवाह लग्न से अष्टम मङ्गलका होना निषिद्ध कहा है परन्तु मङ्गल अस्त होय शत्रु की राशि का होय अथवा नीच का होय तौ अष्टम बैठने का दोष नहीं है इसी प्रकार चन्द्रमा का विवाह लग्न से बारह में आठ में छठे घर में बैठना निषिद्ध है पर नीच अथवा नीच नवांशक का होय तौ दोष नहीं है ॥८८॥

अनेक दोषों का परिहार कहते हैं।

(छं. व.) अब्दायनर्तुतिथिमासभपक्षदग्ध
तिथ्यंधकाणबधिरांगमुखाश्च दोषाः ॥
नश्यंति विद्गुरुसितेष्विह केन्द्र कोणे
तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः ॥८९॥

टीका—वर्ष का दोष, अयन का दोष, ऋतु का दोष, तिथि दोष, मास दोष, नक्षत्र दोष, पक्ष दोष, पंगु अन्ध काण वधिर आदि दोष बुध, गुरु और शुक्र के केन्द्र त्रिकोण में होने से दूर होजाते हैं इसी प्रकार पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा जिस नवांशक में होय वह नवांशक का दोष भी बुधगुरु शुक्र के केन्द्र त्रिकोण में होने से दूर हो जाता है ॥८९॥

अब सारे दोषों का परिहार कहते हैं।

(छं. शा.) केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा
लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा ॥

सर्वे दोषा नाशमायांति चन्द्रे
लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः ॥९०॥

टीका—वृहस्पति केन्द्र और त्रिकोण में होय अथवा सूर्य ११ में घर में होय अथवा चन्द्रमा लग्न में या अपने वर्गोत्तन का होय तौ सब दोष नष्ट हो जाते हैं इसी प्रकार चन्द्रमा लाभ में होय तौ दुष्ट मुहूर्तों के दोष पाप ग्रहों के नवांशक के दोष दूर हो जाते हैं ॥९०॥

सम्पूर्ण दोषों का एक ही परिहार।

(छं.शि.) त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः ॥
भवेदाये केन्द्रेऽगप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहनइव तूलं शमयति ॥९१॥

टीका-बुध त्रिकोण में अथवा केन्द्र में सप्तम को छोड़कर बैठा होय तौ सौ दोषों को हरता है और जो शुक्र इन स्थानों में होय तौ २०० दोषोंको दूर करता है और जो वृहस्पति केन्द्र त्रिकोण में होय तौ लाख दोषों को दूर करता है विवाह लग्न का स्वामी अथवा नवांशक का स्वाती ग्यारहमें घर में अथवा केन्द्र में होय तौ दोषों को दूर करता है अग्नि जैसे रुई को जला देता है ॥९१॥

लग्न के विंशोपका कहते हैं।

(छं.अ.) द्वौ द्वौ ज्ञभृग्वोः पंचेंदौ रवौ सार्द्धत्रयो गुरौ ॥
रामा मंदागुकेत्वारे सार्द्धैकं विशोपकाः ॥९२॥

टीका-आयाष्टषट्सु इस श्लोक के अनुसार जो बुध और शुक्रभकु स्थान में वैठे होंय तौ दो दो विश्वे जानने अर्थात दो बुध के और दो शुक्र के चन्द्रमा के ५ विश्वे सूर्य के ३॥ विश्वे वृहस्पति के ३ विश्वे शनि के १॥ विश्वे राहु के १॥ विश्वे और केतु के १॥ विश्वे और मङ्गल के १॥ विश्वे इस प्रकार ग्रहों के विश्वे होते हैं सब ग्रहों के विश्वे जोड़ लेयजोदश

विश्वे से कम आयें तौ लग्न निर्बल होता है और जो १५कें भीतर होयतौ मध्यम और अधिक होंय तो उत्तम फल होता है ॥६२॥

श्वसुर आदि ग्रहों का विचार।

(छं.उ.) श्वश्रूः सितोर्कः श्वशुरस्तनुस्तनु-
जामित्रपः स्याद्दयिता मनः शशी ॥
एतद्बलं संप्रतिभाव्य तांत्रिक-
स्तेषां सुखं संप्रवदेद्विवाहतः ॥६३॥

टीका—शुक्र तौ सास है और सूर्य श्वसुर होता है और लग्न अपना शरीर होता है सप्तमेश स्त्री होता है चन्द्रमा मन होता है ज्योतिषी शुक्र आदि ग्रहों का वल देख सास आदि का सुख कहै ॥६३॥

नीच जाति के विवाह का मुहूर्त।

(छं.म.) कृष्णेपक्षे सौरिकुजार्केपि च वारे वर्ज्ये नक्षत्रे यदि वा स्यात् करपीडा ॥ संकीर्णानां तर्हि सुतायुर्धनलाभप्रीति प्राप्त्यै सा भवतीह स्थितिरेषा ॥६४॥

टीका—नीच जाति कोलो चमार आदि का विवाह कृष्णपक्ष में शनि और मङ्गलवार में और वर्जित नक्षत्र में व्याघात और शूल योगों में यदि विवाह होय तौ पुत्रधन को प्राप्ति और द्रव्य का लाभ और प्रीति होती है ॥६४॥

गान्धर्व आदि विवाह।

(छं.अ.) गांधर्वादिविवाहेर्काद्वेद ४ नेत्र २ गुणे ३ दवः ॥
१ कु १ युगां ४ ग। ६ ग्नि ३ भू १ रामा ३ स्विप-
धाम शुभाः शुभाः ॥६५॥

टीका—गान्धवादि विवाहों में सूर्य के नक्षत्र से विचार करै। जिस नक्षत्र पर सूर्य होय उससे ४ नक्षत्र अशुभ होते हैं उससे आगे के दो

नक्षत्र शुभ होते हैं फिर ३ नक्षत्र अशुभ फिर १ शुभ फिर १ अशुभ फिर ४ नक्षत्र शुभ उससे आगे ६ नक्षत्र अशुभ फिर ३ शुभ १ नक्षत्र अशुभ फिर ३ नक्षत्र शुभ होते हैं ये क्रम से त्रिपदी (भामर में) शुभऔर अशुभ जानने ॥८५॥

विवाह से पहिले जो काम किये जाते हैं उनका वचार

(छं.पृ.) विधोर्बलमवेक्ष्य वा दलनकंडनं वारकं।
गृहांगणविभूषणान्यथ च वेदिकामंडपान् ॥
विवाहविहितोड्भिर्विरचयेत्तथोद्वाहतो।
न पूर्वमिदमाम्चरेत्रिनवषरिमते वासरे ॥८६॥

टीका जो विवाह के लिये मूँग आदि दलै या कूटना फटना आदि करै तौ वर कन्या का चन्द्रवल देख लेय घर के ऊपर सफेदी करवावै या मण्डप का आरम्भ करैं तो चक्र शुद्धि देखकर आरम्भ करैं और विवाह में जो नक्षत्र कहे हैं उन्हीं में इनका आरम्भ करै किन्तु जो विवाह का दिन है उससे पहिले तीसरा छटा या नवमा दिन न होय अर्थात् विवाहसे पहिले तीसरे छठै या नौमे दिन उक्त कार्य न करै ॥८६॥

बिवाह की वेदी कहतेहैं ।

(छं.शा.) हस्तोच्छ्राया वेदहस्तैः समंता-
त्तुल्या बेदी सद्मनो वामभागे ॥
युग्मे घस्रे षष्ठहाने च पंच।
सप्ताहेः स्यान्मंडपोद्वासनं सत् ॥८७॥

टीका–कन्या के हाथ से १ हाथ ऊँची और चार हाथ लम्बी चौडी बनवावै यह वेदी अपने घर के बांई तरफ बनवावै और विवाह के पश्चात छटे दिन को छोड़कर सम दिनों में अथवा विवाह से पांचमे सातमे दिन विवाह के मण्डप का विसर्जन शुभ है ॥८७॥

तेल चढ़ाने की संख्या।

मेषादिराशिजवधूवरयोर्वटाश्च तैलादिलापनविधौ कथितात्र संख्या ॥ शैला दिशः शरदिगत्ननगाद्रिबाणबाणात्तबाणगिरयो विबुधैस्तु कैश्चित् ॥९८॥

टीका—मेषादि राशि में जन्मे हुए वर कन्या के तैल लगाने में क्रम से यह संख्या है मेष राशि वाले के ७ वृष राशिवाले के १० मिथुन के ५ कर्क की १० सिंह की ५ कन्या की ७ तुला की ७ वृश्चिक की ५ धन की ५ मकर की ५ कुम्भ की ५ और मीन राशि वाले के ७ तेल लगानेके कहे हैं ॥९८॥

विवाह मंडप में खंभ गाढ़ना।

(छं.इं.) सूर्येंगनासिंहघटेषु शैवे
स्तंभोलिको दंडमृगेषु वायौ ॥
मीनाजकुम्भे निर्ऋतो विवाहे
स्थाप्योग्निकोणे वृषयुग्मकर्के ॥९९॥

टीका—कन्या सिंह और तुलाके सूर्य में तो ईशान कोण में विवाहका स्तंभ गाढ़ै वृश्चिक धन और मकर के सूर्य मे वायु कोण से स्तंभ स्थापन करै मीन मेष और कुम्भ के सूर्य में नैर्ऋत्य कोण में वृष मिथुन औरकर्क के सूर्य में अग्नि कोण में स्थापन करै ॥९९॥

गोधुलिकी प्रशंसा।

(छं.मं.) नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिंता
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा ॥
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
गोधूलिःसा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ।१००।

टीका—गोधुलि लग्नमें न तो नक्षत्र के विचार की आवश्यकता है

तिथि और करण का भी देखना भी आवश्य नहीं है न नक्षत्रकी चिन्ता है न इसमें बार और नवांशक की विधि है न मूहूर्त की चर्चाहै न इसमें योग है न अष्टम घर की शुद्धि है न जामित्र दोष है वह मुनियोंने गोधुलिकही है वह सब कार्यों में शुभ है ॥१००॥

ऋतु के अनुसार गो धुलि ।

(छं.ज.) पिंडीभूते दिनकृति हेमंततौं स्यादर्धास्ते तपसमये गोधूलिः ॥ संपूर्णाम्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ॥१०१॥

टीका-हैमन्त ऋतु में जब सूर्य लाल पिंड के समान होजाय तब गोधूलि होती है और गर्मी के दिनों में जब सूर्य आधा अस्त हो जाय तब गोधूलि होती है और वर्षा काल में जब सूर्य संपूर्ण अस्तहोजायतबगोधूलि होती है इस प्रकार तीन प्रकार से देखी जाती है सब शुभ कार्यों में ग्रहण करनी चाहिए ॥१०१॥

गोधूलि समय में वर्जित दोष ।

(छं.द.) अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के लग्नान्मृत्यौ रिपुभवने लग्ने चेन्दौ ॥ कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमे वोढुर्ला-भे धनसहजे चन्द्रे सौख्यं ॥१०२॥

टीका-गुरुवार को सूर्य अस्त होने पर गोधलि होती है और शनिवार को जब तक सूर्य दीखता रहै तबतक गोधूलि होती है विवाह लग्न सेंछटे आठमें और लग्न में चन्द्रमा होयतौ कन्या का नाश होता है लग्न में सातमें आठमें, मंगल होय तौ वर का नाश होता है ग्यारह में दूसरे, या तीसरे घर में चन्द्रमा होयतौ सुख मिलता है ॥१०२॥

सूर्य की गति कहते हैं ।

(छं.इं.) मेषादिगेऽर्केष्टशरा ५८ नगाचाः ५७

सप्तेषवः ५७ सप्तशरा ५७ गजाचाः ५८॥

गोत्ताः ५६ खतर्का ६० कुरसाः ६१ कुतर्काः ६१
क्वगानि ६१ षष्टि ६० र्नवपंच ५६ भुक्तिः ॥१०३॥

टीका—मेष के सूर्य में ५८ कला की सूर्या की गति होती है वृषके सूर्या के ५७ मिथुन में ५७ कर्क में ५७ सिह में ५८ कन्या में ५६ तुला में ६० वृश्चिक में ६१ कुंभ में ६० मीन में ५६ कला की सूर्य की गति होती है ॥१०३॥

सूर्य स्पष्ट कहते हैं।

(अ. ष्टु.) संक्रांतियातघस्राद्यैर्गतिर्निघ्नी खषट्हृता ॥
लब्धेनांशादिना योज्यं यातर्क्षं स्पष्टभास्करः ॥१०४॥

टीका-जिस दिन का सूर्य स्पष्ट करना होय उस समय तक सूर्य की संक्रान्ति के जितने दिन घड़ी पल वीते होय उसको सूर्य की गति से गुणा करै ६० का भाग देय जो लब्ध अंशादिक आवें उनमें सूर्य की गतिराशि जोड़ देय तो सूर्य स्पष्ट होता है ॥१०४॥

लग्न की विधि-

(छं. अ.) तनोरिष्टांशकात्पूर्वं नवांशा दशसंगुणाः ॥
रामाप्ता लब्धमंशाद्यं तनोर्वर्गादिसाधने ॥१०५॥

टीका-विवाह के लिये जो लग्न निश्चय किया होय उस लग्न के जिस नवांशक में विवाह निश्चय हुआ होय उस नवांशक से पहिले जितने नवांशक बीते होय उनको १० से गुणा करै और उनमें ३ का भाग देय अंशादिक लब्ध आवै वह लगन का भुक्त होता है ये षड्वर्ग आदि में काम आता है ॥१०५॥

अर्काल्लग्नात्सायनाद्भोग्यभुक्तै
र्भागैर्निघ्नात् स्वोदयात् खाग्निभक्तात् ॥
भोग्यं भुक्तं चांतरालोदयाढ्यं
षष्ठ्याभक्तं स्वेष्टनाड्यो भवंतु ॥१०६

टीका-सायन सूर्य के जो भुक्त भोग्य अंश हैं उनको उन

को स्वोदय से गुणा करै उसमें ३० का भाग देय यह क्रिया दो जगह करनी चाहिए एक जगह स्वोदय को भुक्त अंशों को गुणा करै और ३० का भाग देय और एक जगह भोग्य अंशों को गुणा करके ३० का भाग देय तो वे भुक्त और भोग्य फल होते हैं फिर उन दोनों भुक्त भोग्य फलों को जोड़ देय जो अंक आवै उसमें सायन लग्न तथा सूर्य के अन्तराल उदयों के पल जोड़ देय फिर उसमें ६० का भाग देय तो सूर्योदय से लेकर इष्ट घड़ी और पल होते हैं ।।१०६।।

इष्ट लाने का दूसरा प्रकार—

[छं.शा.] चेल्लग्नार्कौ सायनावेकराशौ
तद्विश्लेषघ्नोदयः खाग्निभक्तः ।।
स्वेष्टः कार्यो लग्नमूनं यदार्कात्
रात्रौः शेषेर्कात्सषड्भंन्निशायाम् ।। १०७ ।।

टीका—जो लग्न और सायन सूर्य एक राशि में होंय तौ लग्न का और सूर्य का अन्तर कर लेय और उसको स्वोदय से गुणा कर और ३०का भाग देय जो लब्ध आवै तो वह इष्ट काल होता है और जो लग्न सूर्य से कम होय तो समान सूर्य में ६ राशि जोड़ कर क्रिया करै ।।१०७।।

विवाहादि कार्यों में वर्जित दोष ।

[छं.शा.वि.] उत्पातान्सह पातदग्धतिथिभिर्दुष्टाश्च योगांस्तथा
चंद्रेज्योशनसामथास्तमयनंतिथ्याः क्षयद्धींतथा ।।
गंडातं च सविष्टिसंक्रमदिनं तन्वंशापास्तं तथा
तन्वंशेशविधूनथाष्टरिपुगान् पापस्य वर्गांस्तथा
सेंदुक्रूरखगोदयांशमुदयास्ताशुद्धिचण्डायुधान् ।।
खार्जूरं दशयोगयोगसहितं जामित्रलत्ताव्यधम् ।।
बाणोपग्रहपापकर्तरि तथा तिथ्यृक्षवारात्थितं

दुष्टं योगमथार्घयामकुलिकाद्यान्वारदोषानपि ॥१०९॥
क्रूराक्रांतिविमुक्तभं ग्रहणभं यत्क्रूरगंतव्यभं
त्रेधोत्पातहतं च केतुहतभं संध्योदितं भं तथा ॥
तद्वच्च ग्रहभिन्नयुद्धगतभं सर्वानिमान्संत्यजेत्
उद्वाहे शुभकर्मसु ग्रहकृतांल्लग्नस्य दोषानपि ॥११०॥
इति मुहूर्तचिंतामणौ अनंतसुतरामबिरचिते विवाहप्रकरणं
समाप्तम् ।

टीका—पातदोष दग्ध तिथियों से दुष्ट योग चन्द्र,गुरु, शुक्र का अस्त तिथि की वृद्धि और क्षय गन्डान्त, भद्रा संक्रान्ति लग्न के स्वामी और नवांशक स्वामी का अस्त, लग्नेश और नवांशेशका चन्द्रमा के सङ्ग छठे आठमें घर में बैठना, पाप ग्रहों के षड्वर्ग ग्रहों के षड्वर्ग ॥१०८॥चंद्रमा और क्रूर ग्रहों के लगन और नवांशक उदय अस्त की अशुद्धि, चंडायुध, खार्जूर दशयोग योग सहित, जामित्र, लत्ता, वेध, बाण, उपग्रह, पाप-कर्तरी, तिथि नक्षत्र, वारोत्थ दुष्ट योग अर्धयाम, कुलिक, आदिवार दोष पापाक्रान्त नक्षत्र, पाप युक्त नक्षत्र, ग्रहण का नक्षत्र, क्रूरग्रह जिस पर जाने वाला होय ऐसा नक्षत्र तीन प्रकार के उत्पात का नक्षत्र, केतु के उदय का नक्षत्र सूर्य के अस्त समय में-जिस नक्षत्र का क्षितिज के ऊपर उदय होता है उससे चौदहमा नक्षत्र, ग्रह से भिन्न नक्षत्र युद्ध का नक्षत्र इन सब दोषों को और ग्रह के कारण से भये जो लग्न के दोषहैंवे विवाह में और शुभ कार्यों में वर्जित है ॥१०९॥११०॥

इति श्री मुहूर्तचिन्तामणौ भाषाटीका यां षष्ठं विवाह
प्रकरणम् समाप्तम् ।

———

अथ सप्तम् बधू प्रवेश प्रकरणम् ।

(छं.ये) समाद्रिपंचकदिने विवाहद्वधूप्रवेशोऽष्टिदिनांतराले ॥

शुभः परस्ताद्विषमाद्बमासदिने त्ववर्षात्परतोयथेष्टम् ॥१॥

टीका—विवाह होने के अनन्तर १६ दिवस के बीच में सम दिनों २। ४। ६। १०। १२। १६। में और विषम ७। ५। ९ दिन में बधू प्रवेश शुभ है यदि किसी कारण से १६ दिन व्यतीत होगये होंय तौ विषम वर्ष १। ३। ५। में और विषम मास में और विषम दिन में बधू प्रवेश शुभ है और जो ५ वर्ष बीत गये होंय तौ अपनी इच्छानुसार बधू प्रवेश करना चाहिये ॥ १ ॥

बधू प्रवेश का मुहूर्त ।

(छं.अ.) ध्रु वक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमगानिले ॥
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ॥२॥

क (तीनों उत्तरा, रोहिणी) क्षिप्रसंज्ञक (अश्विनी, पुष्य, हस्त,) मृदु संज्ञक (चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, और स्वाती इनमें बधू प्रवेश शुभ है और कुछ आचार्यों के मत से रिक्ता तथि, मंगल और रविवार का निषेध है ॥ २ ॥

(छं.इ.) ज्येष्ठे पतिज्येष्ठमथाधिके पतिं हन्त्यादिमे भर्तृगृहे वधूः शुचौ ॥ श्वश्रूं सहस्ये श्वशुरं क्षये तनुं ताते मधौ तातगृहे विवाहतः ॥३॥

विवाह के अनन्तर स्त्री जो पहिले ज्येष्ठ में पति के घर रहे तो ज्येष्ठ को मारती है और विवाह के पीछे अधिक मास में पति के घर निवास करे तो पति को नष्ट करती है और जो आषाढ़ में पति केघररहै तो सास को मारती है और जो ले पौष में रहै तौ ससुर को मारतीहै और जो विवाह के अनन्तर क्षय मास में पति के घर रहै तौ अपने देह को नष्ट करती है और जो विवाह के अनन्तर चैत्र में

अपने पिता के यहां रहै तौ पिता को मारतो है ॥३॥
इति श्रीमुहूर्त चिन्तामणौ चतुर्वेद घनश्यामलाल कृत भाषा
टीकायां वधू प्रमेश प्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथद्विरागम प्रकरणम ॥

(छं.पं.) चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ रवीज्यशुद्धियो
गतः शुभग्रहस्य वासरे । नृयुग्ममीनकन्यकातृलावृषे
विलग्नके द्विरागमं लघुध्रुवे चरे स्त्रपे मृदूडुनि ॥१॥

टीका—ऊनेवर्ष १।३।५ में और कुम्भ, वृश्चिक, मेषके सूर्य में सूर्य, और वृहस्पति की शुद्धि होनेपरशुभ वार होने पर मिथुन मीन कन्यातुला वर्ष, ये लग्न होंय और ये लग्न शुभग्रह से दृष्टि अथवा युक्त होय लघु (अश्विनी, पुष्य, हस्त, ध्रुव संज्ञक [रोहिणी तीनों उत्तरा] चरसंज्ञक [श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा,पुनर्वसु , स्वाती] मूल, मृदु संज्ञक [मृगशिर चित्रा, रेवती अनुराधा]इन नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ है ॥१॥

संमुख शुक्र का विचार ।

(छं.प्र.) दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्याद्गच्छेयुर्नहि शि-
शुगर्भिणीनवोढाः ॥ बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नबोढा
चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा ॥२॥

टीका—शुक्र जो संमुख या दाहिना होय तः बालक गर्भिणी और नवोढ़ी (नवीन वधू) इनको नहीं जानना चाहिये औरजो कोई शुक्र सामने या दाहिने होने पर चला जाय यदि बालक जाय तौ वह मरजाय औरजो नईबहू जा[illegible] तौ वह बांझ हो जाय गर्भिणी तो उसका गर्भ नष्टहोजायऔर फिर गर्भ न रहै ॥२॥

संमुख शुक्रका अपवाद ।

(छं.प्र.) नगरप्रवेशविषयादयुपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्र-

योः ॥ नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्नहि ॥३॥

टीका-नगर के प्रवेश करने में अथवा देश में कोई दुर्भिक्ष आदिउपद्रव होगया तब, अथवा बरात जानेमें, देवता और तीर्थ की यात्रामें, राज से पीड़ा होने पर, और वधू प्रवेश में संमुख शुक्र का दोष नहीं होता ॥३॥

[छं.इं.] ।पत्र्ये गृहे चेत् कुचपुष्पसंभवः स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः ॥ भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकस्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥४॥

टीका-यदि पिताके घरमें कुचोत्पत्ति, और मासिक धर्म होजायतौ स्त्री के लिये शुक्रके समुख और दाहिने होनेका दोष नहो है इसो प्रकार भृगु, अंगिरा, वत्स- बशिष्ट, कश्यप, अत्रि भरद्वाज इन ऋषियों के गोत्रमें जो पैदा हुए हैं उनको भी सन्मुख या दक्षिण शुक्रका दोष नहीं है ॥४॥

इति श्री मुहूर्त चिन्तामणौ अष्टम् प्रकरम्
समाप्तम् शभस्तु ।

अथाग्न्याधान प्रकरणम् ।

[छं. व. ति.] स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगे दिनेशे मिश्रधुवांत्य शशिशक्रसुरेज्यधिष्ण्यैः॥रिक्तासु नो शशिकुजेज्यभृगौ न नीचे नागस्तंगते न विजिते न च शत्रुगेहे ॥१॥

टीका—उत्तरायण सूर्य होय और मिश्र (कृत्तिका विशाखा) ध्रुव (तीनों उत्तरा रोहिणी) रेवती, मृगशिर ज्येष्ठा, पुष्य,ये नक्षत्र हो रिक्ता से वर्जित होय और चंद्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र इन ग्रहों में से न कोई नीचका होय न अस्त होय, न शत्रु की राशि पर होय तौ अग्न्याधान शुभ होता है ॥१॥

अग्न्याधान में लग्न शुद्धि।

(छं.व.ति.) नो कर्कनक्रझषकुंभनवांशलग्ने नोऽब्जे तनौरविश
शीज्यकुजे त्रिकोणे ॥ केंद्रर्त्तषट्भवनगे च परैस्त्रिलाभ-
षट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ॥ २ ॥

टीका कर्क, मकर, मीन, कुम्भ, इनमें से कोई लग्न न होय और न इनका नवामांश होय और चन्द्रमा लग्न में न होय और सूर्य, चंद्र मंगल वृहस्पति, ये त्रिकोणमें, केन्द्र में अथवा ६ । ३ घर में होंय और बाकीके ग्रह ३ ११ । ६ । १० इनमें होय और अष्टम घर शुद्ध होय तो ऐसे लग्न में अग्न्याधान शुभ होता है ॥२॥

याग कतृत्व योग कहते हैं-

(छं.अ.) चापे जीवे तनुस्थे वा मेंषे भौमेंबरे द्युने ॥
षट्त्र्यायेब्जे रवौ वा स्याज्जाताग्निर्यजति ध्रुवम् ॥३॥
इति दैवज्ञानंतसुतदै० रामविरचिते मु० चिं० म०
अग्न्याधानंनाम नवमंप्रकरणं समाप्तम् ।

टीका-गुरु धन राशिके होकर लग्न में बैठे होंय मंगल मेष में होय अथवा लग्न से सप्तमया दशम होय चन्द्रमा लग्न से छठे, तीसरे या ग्यारह में घरमें होय या सूर्य छटे, तीसरे ग्यारह में घर में होंय इस लग्नमें जो अग्नि उत्पन्न होय तो अवश्य यज्ञ होगा ॥३॥

इति श्री मुहूर्त चिन्तामणौ भाषा टीकायां नवमं अग्न्या
धानं प्रकरण समाप्तम् ॥

अब राज्याभिषेक प्रकररण प्रारंभ होता है ॥

(छं.इ.) राजाभिषेकःशुभ उत्तरायणे गुर्विंदुशुक्रैरुदितैर्बला
न्वितैः भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नो चैत्ररिक्तारनि-

शामलिम्लुचे ॥१॥

टीका–उत्तरायण सूर्य में गुरु, शुक्र, चन्द्रमा इनका उदय होय और ये बलवान होय मंगल, सूर्य लग्नेश, दशपति, और जन्म लग्न का स्वामी ये बलवान होंय तो राज्याभिषेक शुभ है चैत्र मास, रिक्ता तिथि, मङ्गल वार, मलमास इनमें राज्याभिषेक का निषेध है ॥१॥

नक्षत्र और लग्न कहते हैं ॥

(छं.इ.व) शाक्रश्रवः क्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदये वोपचये शुभे तनौ ॥ पापैस्त्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः केंद्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः ॥२॥

टीका–ज्येष्ठा, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, मृगशिर, रेवती, अनुराधा तीनों उत्तरा, रोहिणी, इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक उत्तमहोताहै शीर्षोदय (मिथुन, कन्या, तुला वृश्चिक कुंभ) लग्न होय अपनी जन्म राशि अथवा जन्म लग्न से उपचय ३।६।१०।११ स्थान में अथवा लग्न में शुभ ग्रह होंय वा शुभ ग्रह को दृष्टि होय पाप ग्रह लग्न से ३।६।११ घर में होंय और शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में और ११।१२ घरमें होंय तौ राज्याभिषैक का लग्न उत्तम होता है ॥२॥

अब पाप ग्रहों के वैठने का फल कहते हैं ।

(छं.इं.व.) पापैस्तनौ रुङ्निधने मृतिः सुते पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ॥ स्यात्खेऽलसो भ्रष्टपदो द्युनांबुगैः सर्वं शुभं केन्द्रगतैः शुभग्रहैः ॥३॥

टीका–लग्न में पाप ग्रह होने से रोग होता है अष्टम में पापग्रह होय तौ मृत्यु होय पंचम में पापग्रह होने से सन्तान को पीड़ा होय दूसरे और बारह में घर में पाप ग्रह होय तो दरिद्र होय दशम में पाप ग्रह होय तौ आलसी सप्तम और चतुर्थ में पाप ग्रह होय तौ स्थान से भ्रष्ट होय और केन्द्र में शुभ होंय तो सब फल शुभ होता है पाप ग्रह का दोष नहीं होता है ॥३॥

अब राजा के वास्ते स्थिर संपत्ति का योग कहते हैं।

(छं.भुजं) गुरुर्लग्नकोणे कुजेऽरौ सितः खे
स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ॥
तृतीयायगौरिसूर्यौ खबंध्वो-गु
रुश्चेद्धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥४॥
इति श्रीमुहूर्तचिंतामणौ अनंतसुतरामाविरचितायां राज्या-
भिषेकप्रकरणम् दशमं समाप्तम् ॥१०॥

टीका—लग्न में अथवा त्रिकोण में गुरु होय छटे में मङ्गल होय दशम में शुक्र होय और तीसरे घर में शनि और ग्यारह में घर में सूर्य होय दशम में और चौथे घर में गुरु होय तो राजा की पृथ्वी स्थिर रहती है और सदा लक्ष्मी से सुख मिलता है ॥४॥

इति श्री मुहूर्त चिन्तामणौ भाषा टीकायां दशम राज्याभिषेक
प्रकरणम् समाप्तम् शुभंभुयात्।

अथ यात्राप्रकरणम् लिख्यते ।

(छं.प्र.) यात्रायां प्रविदितजन्मना नृपाणां दातव्यं दिवसम-
बुद्धजन्मानां च ॥ प्रश्नाद्यैरुदय निमित्तमूलभूतैर्विज्ञाते
ह्य शुभशुभे बुधः प्रदाद्यात् ॥१॥

टीका—जिनका जन्म पत्र है उनका शुभाशुभ दशाका फल देखकर फिर उन राजाओं को मुहूर्त यात्रा को बताना चाहिए और जिनको जन्म पत्र नहीं होय उनका प्रश्नादिक से शुभाशुभ निश्चय करके यात्राका मुहूर्त पंडितों को देना चाहिए ये मुहूर्त राजाओं के लिये कहे गये हैं परन्तु सर्व साधारण को भी इसी के अनुसार मुहूर्त देना चाहिए ॥

प्रश्न लग्न का विचार ।

[छं.द्रु.] जननराशितनू यदि लग्नगे तदधिपौ यदि वा तत एव वा ।। त्रिरिपुखायगृहं यदि वोदयो विजय एवभवेद्वसुधापतेः ॥ २ ॥

टीका–यात्रा का जब प्रश्न करैं उस समय जन्म लग्न अथवा जन्म राशि प्रश्न लग्न में होय अथवा जन्म लग्न और जन्म राशि के स्वामी प्रश्न लग्न में वर्तमान होंय अथवा जन्म राशि और जन्म लग्न से प्रश्न लग्न दशमी, तीसरी, ग्यारहवीं राशि हौंय तौ प्रनकरने वाले का विजय अवश्य होता है ।।२।।

पुनः पृच्छालग्न का विचार ।

[छं. मं.] रिपुजन्मलग्नभमथाधिपौ तयौस्ततएववोपचयसद्मचेद्भवेत् ।। हिबुके द्युनेऽथ शुभवर्ग कस्ततौ यदिं मस्तकोदयगृहं तता जयः ।।३।।

टीका–प्रश्न लग्न से चतुर्थ या सप्तम घर में शत्रु का जन्म लग्न और जन्म राशि होय अथवा शत्रु की जन्म लग्न और राशि के स्वामी प्रश्न लग्न से चौथे सातमें स्थान में होय अथवा शत्रु की जन्म राशि और जन्म लग्न से तीसरे छटे ग्यारह में दशमे स्थान में से कोई स्थान प्रश्न लग्न से चतुर्थ घर में होय अथवा लग्न में शुभ ग्रह का षड्वर्ग होय अथवा प्रश्न लग्न शीर्षोदय राशि होय तौ पूछने वाले का अवश्य जय होता है ।।३।।

और भी प्रश्न लग्न का विचार कहते हैं ।

[छं. तो] यदि पृच्छितनो वसुधा रुचिरा शुभवस्तु यदि श्रुतिदर्शनगम् ।। यदि पृच्छिति चादरतश्च शुभग्रहदृष्टयुतं चरलग्नमपि ।।४।।

टीका–जिस समय प्रश्न करैं उस समय सुन्दर पृथ्वी दिखाई देय और कोई सुन्दर वस्तु सुनाई पड़ै या सुन्दर वस्तु दिखाई

देय तो अवश्य जय होता हैं अथवा आदर पूर्वक प्रश्न करे और चर लग्न शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होय तो भी जय होता है ॥४॥

सामान्य अशुभ फल दायक प्रश्न ।

(छं.मा.) विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टेथ चंद्रे मृतिभमदनसंस्थे लग्नगे भास्करेपि ॥ हिबुकनिधनहोराद्युनगे वापि पापे सपदि भवति भंगः प्रश्नकर्तुस्तदानीम् ॥ ५ ॥

टीका–प्रश्न लग्न में चन्द्रमा अथवा मङ्गल होय और शनि की दृष्टि होय तो उसकी हार होती है अथवा चन्द्रमा ८।७। घर में होय और लग्न में सूर्य होय तो भी पराजय होता है पाप ग्रह लग्न से ४।७।८।१ इन स्थानों में होय तो भी भंग होता हैं ॥५॥

प्रश्न से ही यात्रा की दिशा का ज्ञान ।

(छं.भु.) त्रिकोणे कुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवाद्यदैकोऽपिवानो गमो- कच्छिशी वा ॥ बलीयांस्तु मध्ये तयोर्यो ग्रहः स्यात् स्वकीयां दिशं प्रत्युतासौ नयेच्च ॥ ६ ॥

टीका–प्रश्न लग्न में मंगल से त्रिकोण में शनि, शुक्र, वृहस्पति, शनि ये होंय अथवा इनमें से कोई ग्रह होय अथवा सूर्य से त्रिकोण में चन्द्रमा होय तो वह मनुष्य अपनी चाही हुई दिशा को नहीं जाता है उन पूर्वोक्त ग्रहों में से जो वली होगा उसको दिशा को वह जायगा ॥६॥

(छं.म.) प्रश्ने गम्यदिगीशात्खेटः पंचमगो यः ।
सोभूयाब्दलयुक्तः स्वामाशां नयतेसौ ॥ ७ ॥

टीका–प्रश्न लग्न के समय जिस दिशा का मनोरथ किया है उस दिशा का स्वामी जहां स्थित होय उससे पंचम घर में जो ग्रह

बलिष्ठ होकर बैठा होय वह अपनी दिशा को ले जाता है ॥७॥

यात्रा का मुख्य काल कहते हैं।

(छं.भु.) धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता शनिज्ञोशनोराशिगे चैव मध्या ॥ रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽति दीर्घाजनुः पंचसप्तत्रितारारश्च नेष्टाः ॥८॥

टीका–धन, मेष, सिंह के सूर्य में यात्रा शुभ होता है और मकर, कुम्भ कन्या, मिथुन, तुला, वृष इन राशियों के सूर्य में यात्रा मध्यम है कर्क मीन और वृश्चिक के सूर्य में लम्बी यात्रा होती है अर्थात् बहुत दिनों में लौट कर आना होता है जन्म तारा प्रत्यरि तारा, वधतारा विपत्तारा ये यात्रा के समय में नष्ट होती हैं ॥८॥

तिथि नक्षत्रों की शुद्धि कहते हैं।

(छं.भू.) न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्या तिथिः पूर्णिमा भा न रिक्ता ॥ हयादित्यमित्रेंदुजीवांत्यहस्तश्रवोवासवैरेच यात्रा प्रशस्ता ॥६॥

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्ला प्रतिपदा, पूर्णिमा, अमाव या रिक्ता तिथि ये यात्रा में वर्जित हैं अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिर पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा इनमें यात्रा शुभ है ॥६॥

बार शूल और नक्षत्र शूल।

(छं. भू.) न पूर्वदिशि शक्रभे न विधुसौरिवारे तथा।
न चाजपदभे गुरौ यमदिशीनदैत्येज्ययोः ॥
न पाशि दिशिधातृभे कुजबुधेर्यमर्क्षे तथा।
न सोम्यककुभि व्रजेत्स्वजयजीवितार्थीबुधः ॥१०॥

टीका–ज्येष्ठा नक्षत्र, सोमवार शनिवार इनमें बुद्धि मान

मनुष्य पूर्व को न जाय, पूर्वा भाद्र पद नक्षत्र और गुरुवार को दक्षिण में न
जाय इसी प्रकार रविवार, शुक्रवार और रोहिणी नक्षत्र इनमें पश्चिम में न
जाय मंगलवार बुधवार उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र इनमें जो अपने जय और
जीवन की इच्छा करै वह उत्तर दिशा को न जाय ॥१०॥

पूर्वाण्हादि समय का निश्चय ।

(छं. शा.) पूर्वाण्हे ध्रुवमिश्रभैर्न नृपतेर्यात्रा न मध्यान्ह के
तीक्ष्णाख्यैरपराण्हके न लघुभैर्नो पूर्वरात्रे तथा ॥
मित्राख्यैर्न च मध्यरात्रिसमये चोग्रैस्तथा नो चरै
रात्र्यंतेहरिहस्तपुष्यशशिभिःस्यात्सर्वकालेशुभा ॥११॥

टीका-ध्रुव संज्ञक और मिश्र संज्ञक नक्षत्रों में राजा को पूर्वाण्ह काल में यात्रा न करनी चाहिए और तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्रों में अपराण्ह में न करनी चाहिए लघु संज्ञक नक्षत्रों में पूर्व रात्रि में यात्रा न करै मित्र संज्ञक नक्षत्रों में मध्य रात्रि में न करै उग्र संज्ञक नक्षत्रों में रात्रि के अन्त में न करै श्रवण, हस्त, पुष्य, मृगशिर इनमें हमेशा यात्रा शुभ है ॥११॥

नक्षत्रों की वर्जित घड़ी ।

[छं. इं. वं] पूर्वाग्निपित्र्यंतकतारकाणां भूपक्रुत्यग्रतुरंगमाः
स्युः ॥ स्वातीविशाखेंद्रभुजंगमानां नाड्यो निषिद्धा
मनुसंमिताश्च ॥१२॥

टीका–तीनों पूर्वा की आदि की १६ घडी वर्जित हैं कृत्तिका की आदि की २१ घड़ी वर्जित हैं मघा की ११ घड़ी वर्जित हैं भरणी की आदि की ७ घड़ी वर्जित हैं स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इनकी १४ घड़ी वर्जित हैं ॥१२॥

मतान्तर से वर्जित घड़ी बतलाते हैं ।

(छं.इं.व.) पूर्वार्द्र[...]मघानिलानां त्यजेद्धिचित्राहियमोच

राद्र्धम् ॥ नृपः समस्तां गमने जयार्थी स्वातीं
मघां चोशनसो मतेन ॥ १३ ॥

टीका–अपने विजय की अभिलाषा करने वाला राजा कृत्तिका मघा स्वाती इनका पूर्वार्द्ध त्यागदे चित्रा आश्लेषां भरणी इनका उत्तरार्द्ध छोड़ देय शुक्राचार्य के मत से स्वाती और ये सम्पूर्ण ही वर्जित हैं ॥१३॥

नक्षत्रों की जीव पक्ष आदि संज्ञा ।

(चं.भु.प्र.) तमोभुक्ततारा: स्मृता विश्वसंख्या: शुभो जीवपक्षो
मृतश्चापि भोग्या: ॥ तदाक्रांतभं कर्तरीसंज्ञमुक्तं
ततोऽचेदुसंख्य भवेद्ग्रस्तनाम ॥ १४ ॥

टीका–राहु से भोगे हुए जो १३ नक्षत्र हैं उनकी जीव पक्ष संज्ञा है और राहु के जो भोग्य १३ अंश हैं उनकी मृत संज्ञा है जिस नक्षत्र पर राहु है उसकी कर्तरी संज्ञा है राहु के नक्षत्र से १५ वां जो नक्षत्र है उसकी ग्रस्त संज्ञा है इनमें १३ नक्षत्र जो जीव पक्ष संज्ञक हैं वे शुभ हैं और सब अशुभ हैं ॥१४॥

जीव पक्षादि नक्षत्रों का फल ।

(चं.शा.वि.) मर्तंडे मृतपक्षगे हिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा
यात्रा स्याद्विपरीतगे क्षयकरी द्वौ जीवपक्षे शुभा ॥
ग्रस्तर्क्षं नृतपक्षतः शुभकरं ग्रस्तात्तथा कर्तरी यायी-
दुःस्थितिमान् रविर्जयकरो तौ द्वौ तयोर्जीवगौ ॥१५॥

टीका–सूर्य तो मृत पक्ष नक्षत्र पर होय और चन्द्रमा जीव पक्ष नक्षत्र पर होय तब यात्रा शुभ है और जो इससे उलटा होय तो यात्रा क्षय करने वाली होती है सूर्य चन्द्रमा ये दोनों जो जीव पक्ष पर होय तो भी यात्रा शुभ है मृत पक्ष की अपेक्षा ग्रस्तर्थ शुभ है और ग्रस्तर्थ से कर्तरी शुभ है पापी राजा का स्वामी चन्द्रमा स्थायी का स्वामी सूर्य है जो सूर्य चन्द्रमा दोनों जीव पक्ष

पर होय तो दोनों का जय होता है और जो दोनों मृत पक्ष पर होय तो दोनों की हार होती है ॥१५॥

कुला कुलादि योग और फल कहते हैं।

[छं.वि] स्वात्यंतकाहिवसुपौष्णकरानुराधादित्यन्ध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाःस्युः ॥ सूर्येंदुमंदगुरवश्च कुलाकुलाख्यो मूलांबुपेशविधिभं दशषट्द्वितिथ्यः ॥१६॥

टीका—स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक और विषम १।३।५।७।९।११।१३।१५ तिथि और रवि चन्द्र, शनि, गुरु ये वार इन सबको लग अलग अकुल सज्ञा है और बुधवार मूल, शतभिषा, आर्द्रा, अभिजित ये नक्षत्र और १०।६।२ तिथि इनकी अलग २ कुल संज्ञा है ॥१६॥

(छं. शा. विं.) पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोर्काष्टद्विवेदैर्मिताः
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले
संधिःस्यादुभयोः कुलाकुलगणेभूमीशयोर्युध्यतोः॥१७॥

तीनों पूर्वा: अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा ज्येष्टा, चित्रा, ये नक्षत्र शुक्र और मङ्गलवार ।१२।८।१४।४ ये तिथि इनकी कुल संज्ञा है इसका फल यह है कि अकुल में जो पापी यात्रा करे तो उसकी विजय होती है और कुल संज्ञक में यात्रा करने से स्थायी का जय होता है कुलाकुल संज्ञक में समर होने से दोनों की सन्धि हो जाती है ॥१७॥

मार्ग में राहु चक्र बतलाते हैं।

(छं. स्रे.) स्युधर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्रारयथार्थे
याम्याजांघ्रींद्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे
वान्ह्याद्र्यांबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभमाख्यानिमोक्षेथ-

रोहिण्याप्ये द्वत्यर्त्तविश्वार्यमभदिनकरर्त्ताणि पथ्यादिराहौ ॥१८॥

मार्ग राहु चक्रम्

ध.	अ	का.	मो.
अ.	भ.	.	रो.
पु	पू.भा.	।.	उ.षा.
श्रा.	म.	पु.	मृ.
वि.	स्वा.	चि.	पु.षा.
अ.	ज्ये.	मू.	उ.फा.
ध.	श्र.	अ.	ह.
श.	पु.	उ.	रे.

टोका—अश्विनो, पुष्य, आश्लेषा, धनिष्ठा शतभिषा, विशाखा, इन नक्षत्रों को धर्म के खाने में स्थापित करैं भरणो, पूर्वाभाद्रपद ज्येष्ठा, श्रवण पुनर्वसु, मघा, स्वाती इनको अर्थ में रक्खे कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तरा भाद्रपद चित्रा, मूल, अभिजित, पूर्वाफाल्गुनी इनको काम में स्थापित करै रोहिणी पूर्वाषाढ़ मृगशिरा रेवतो, उत्तराषाढ़ उत्तराफाल्गुनी, हस्त इनको मोक्ष में रक्खे नाम पथिराहु है ॥१८॥

राहु चक्र का फल।

(छं. स्र. धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी वित्तगे धर्ममोक्ष
स्थितिः शस्यते ॥ कामगे धर्ममोक्षार्थगःशोभनो
मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते ॥१९॥

टोका—सूर्य धर्म मार्ग में होय और चन्द्रमा वित्त में या मोक्ष में होय तो प्रदेश जाने वाले को चन्द्रमा शुभ होता है अथवा अर्थ स्थान में सूर्य होय धर्म और मोक्ष में चन्द्रमा होय तो भी यात्री के लिये शुभ है अथवा काम में सूर्य होय धर्म मोक्ष में चन्द्रमा होय तो भी शुभ है अथवा मोक्ष मार्ग में सूर्य होय और धर्म में चन्द्रमा होय तो भी श्रेष्ठ है ॥१९॥

तिथि चक्र बतलाते हैं।

(छं. शा.) पौषे पक्षत्यादिका द्वादशैवं तिथ्यो माघादौ द्विती-
यादिकास्ताः ॥ कामाचिस्रः स्युस्तृतीयादिवच्च याने
प्राच्यादौ फलं तत्रवक्ष्ये ॥२०॥ सौख्यं क्लेशो भीति-

र्थागमश्च शून्य नैःस्वनिःस्वतामिश्रता च ॥ द्रव्य-क्लेशौ दुःखमिष्टाप्तिरर्थो लाभः सौख्यं मंगलं वित्त-लाभः ॥ २१ ॥ लाभोद्रव्याप्तिर्धनंसौख्यमुक्तंभीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च लाभःकष्टोद्रव्यलाभः सुखं च कष्टो सौख्यं क्लेशलाभौसुखं च ॥२२॥ सौख्यं लाभः कार्य-सिद्धिश्चकष्टः क्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थो धनंचामृत्युर्ला-भो द्रव्यलाभौचशून्यं शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यंतमष्टम

टीका--पौष में प्रतिपदा से लेकर १२ तिथि एक कोष्ठक में लिखे माघ में द्वितीया से लेकर १२ तिथि लिखै फाल्गुन ३ से लेकर १२ तिथि लिखै इसी प्रकार बारह महीनों में लिखै शेष तेरह से लेकर जो तिथि हैं उनको तृतीयादिक की तरह समझै जैसे १३ को तृतीया की तरह समझै चौदश को चौथ की तरह अमावस्या को पूर्णिमा की तरह जाने इन तिथियों का पूर्वादिक में जो फल होता है उसको आगे कहैंगे ॥२०॥ उसका फल यह है कि पौष की प्रतिपदा को पूर्व यात्रा करने से सुख दक्षिण में क्लेश पश्चिम में भय उत्तर में यात्रा करने से धन मिलता है पौष की द्वितोया को पूर्व में शून्य दक्षिण में निर्धनता पश्चिम में निर्धनता उत्तर में मिश्रता फल है पूर्व में तोज हैं द्रव्य क्लेश दक्षिण में दुःख पश्चिम में मनोरथ की प्राप्ति उत्तर में अर्थ ये फल पौष की चौथ को पूर्व मेंलाभ दक्षिण में सुख पश्चिम में मङ्गल उत्तर में धन लाभ होता ॥२१॥ पचमी को पूर्व में लाभ दक्षिण में द्रव्याप्ति पश्चिम में धन उत्तर में सौख्य फल है पौष की ६ को पूर्व में भय दक्षिण में लाभ पश्चिम में मृत्यु उत्तर में अर्थागम फल है पौष की सप्तमी को पूर्व में क्लेश लाभ दक्षिण में कष्ट पश्चिम में द्रव्यलाभ उत्तर में सुख फल होता है अष्टमी को पूर्व में कष्ट दक्षिण में सौख्य, पश्चिम में क्लेश लाभ उत्तर में सुख फल होता है ॥ २२ ॥ नवमी पूर्व में सौख्य

दक्षिण में लाभ पश्चिम में कार्य सिद्ध उत्तर में कष्ट फल होता है पौष को दशमी को पूर्व में क्लेश दक्षिण में कष्ट से कार्य सिद्धि पश्चिम में अर्थ उत्तर में धन प्राप्ति फल है पौष की ११ को यात्रा करने से पूर्व में मृत्यु, दक्षिण में लाभ पश्चिम में द्रव्यलाभ, उत्तर में शून्य फल है और द्वादशी को पूर्व में शून्य, दक्षिण में सौख्य पश्चिम में मृत्यु उत्तर में अत्यन्त कष्ट ये फल हैं इसी प्रकार हर महीने में तिथियों का फल जान लेना आगे चक्र में स्पष्ट कर दिया है ॥२३॥

पौ.	मा	फा	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा	भा	आ	का	मा	पूर्वा.	दक्षिण	पश्चिमा	उत्तरा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भातिः	अर्थागमः
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यं	नैःख्य	नाःख्य	मिश्रता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्ले	दुःख	इष्टिप्ति	अर्थ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्यं	मंगलं	धनलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभः	द प्रा	धनं	सौख्यं
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भातिः	लाभः	मृत्युः	अर्थागमः
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभः	कष्टमद्र	व्यलाभ	सुखं
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टं	सौख्यं:	क्लेशलाभ	खं
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्यं:	लाभः	का. सि.	कष्टम
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेशाः	क सि	अर्थ	धनं
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मत्युः	लाभः	द्रव्यलाभः	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य	मत्युः	अत्यंकष्टः

यात्रा के लिये अंग निकालने की विधि ।

(छं.व.ति) तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा ।
स्थानत्रयेऽत्र वियति प्रथमेऽतिदुःखी ॥
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात् ।
स्थानत्रयंकयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ॥ २४ ॥

टीका—यात्रा का मुहूर्त जिस दिन होय उस दिन के तिथि बार नक्षत्रों का योग कर उस योग को जगह रक्खे उसमें क्रम से ७।८।३ का भाग देय भाग देने से जो पहिले अंक में अशून्य आवे तो यात्रा करने वाले को दुःख होता है बीच में शून्य आवे तो धन का नाश अंत्य शून्य आवै तो मृत्यु फल है यदि तीनों जगह अंक शेष रहे तो सौख्य जय होवे हैं तिथि

शेष रहे तौ सौख्य जय होते हैं तिथि की गणनो शुक्ला प्रतिपदा से करनो चाहिए ॥२४॥

मंडल भ्रमण नामक दोष ॥

(छं.प्र.) रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिता द्व्यगा ॥ महाडलो न शस्यते त्रिषिग्मिता भ्रमो भवेत् ॥२५॥

टीका–जिस नक्षत्र पर सूर्य होय उससे चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने फिर उसमें सातका भाग देय भाग देनेसेजो२ या ७शेष बचेतो महाडलयोग होता है ये अशुभ है और जो ७ या ६ बचै तो भ्रमण नाम का योग होता है ये भी अशुभ हैं ॥२५॥

हिंवर योग कहते हैं।

(छं.उ.) शशाकभं सूर्यभतोत्र गरायं पत्तादितिथ्या दिनवास-रेण ॥ युतं नवाप्तं नएशेषकं चेतस्याद्हिंवरं तद्ग-मनेतिशस्तम् ॥२६॥

टीका–सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने शुक्ला प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गिनने से जो अंक होय उसे जोड़ देय बार का अंक जोड़ उसमें ९ का भाग देय जो ७ बाकी बचैं तो हिंवर नामक योग होता है यह यात्रा में बहुत श्रेष्ठ होता है ॥२६॥

घात चन्द्रमा कहते हैं।

(छं.शा.) भूपंचाङ्कद्व्यंगदिग्वन्हिसप्तवेदाष्टे शार्काश्च घाता-ख्यचन्द्रः मेषादीनां राजसेवाविवादे यात्रायुद्धाद्ये चनान्यत्र वर्ज्यः ॥२७॥

टीका–मेष राशि वाले का पहिला बृष राशि का पांचवा मिथुन वाले को नमां कर्क राशि वाले को दूसरा सिंह वाले को छठा कन्या वाले को १० मां तुला वाले को तीसरा वृश्चिक राशि वाले को सातमां धन राशि वाले को चौथा मकर राशि वालेको आठवां कुम्भ राशि वालेको दशमां मीनराशि

वाले को बारहवां चन्द्रमा घातक होता है वह राजा की नौकरी में मुकदमा में यात्रा में युद्धादिक में वर्जित हैं और जगह वर्जित नहीं है ॥२७॥

घात तिथि कहते हैं।

(छं.उ.) गोस्त्रीभ तितिथिस्तु पूर्णा भद्रा युक्कर्कटनृकेथ नंदा। कोर्प्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता जया धनुः कुम्भहरौ न शस्ताः ॥२८॥

टीका—जिस मनुष्य को वृष, कन्या, मीन राशि है उसके लिये पूर्णा तिथि घातक होती है मिथुन और कर्क राशि वाले को भद्रा तिथि घातक हैं वृश्चिक और मेष राशि वाले को नन्दातिथि घातक है मकर और कुम्भ राशि वाले को रिक्ता धनु, कुम्भ, सिंह राशि वाले को जय तिथि घातक है ये यात्रा में वर्जित है ॥२८॥

घातवार कहते हैं।

(छं.शा.) नक्रे भौमो गोहरि स्त्रीषु मंदश्चन्द्रो द्वंद्वेऽर्कोऽजभे ज्ञश्च कर्के ॥ शुक्रः कोदंडालिमीनेषु कुम्भे जूके जीवो घातवारा न शस्ताः ॥२९॥

टीका—जिसकी मकर राशि है उसको मंगल वार वृष, सिंह, कन्या राशि वाले को सोमवार मेष राशि वाले को रविवार कर्क वाले को बुधवार ९। ८। १२ राशि वाले मनुष्य को गुरुवार ये घातक हैं ये यात्रा में शुभ नहीं है ॥२९॥

घात नक्षत्र कहते हैं।

(छं.अ.) मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यंबुपांत्यभम् ॥ याम्यब्राह्मेशसार्पं च मेषादेर्घातभं न सत् ॥३०॥

टीका—मघा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल- श्रवण, शतभिषा, रेवती, भरणी, आश्लेषा, रोहिणी, आर्द्रा ये नक्षत्र मेषादि राशिवालों को क्रम से घातक हैं ये भी अशुभ हैं ॥३०॥

नवभूम्यः शिववन्हयो-
त्वविश्वेर्कक्रुताः
शक्ररसास्तुरं-
गतिथ्यः ॥ द्वि-
दिशोमावसबश्च
पूर्वतः स्युः स्ति-
थयः वामगा न शस्ताः ॥३१॥

तिथि नक्षत्र वार घात चक्रम् ।

०	०	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
चं	घा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	घात	र	श	चं	बु	श	श	वृ	शु	शु	मं	वृ	शु
क्षन	घात	म	ह	स्वा	म	मू	श्र	शं	रे	भ	रो	आ	श्ले
ति	घात	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

घात नक्षत्र कहते हैं ।

टीका—नवमी और प्रतिप्रदा को पूर्व में योगिनी होती हैं ११।३ अग्नि कोण में ५।१३ को दक्षिण में १२।४ को नैऋत्य में १४।६ को पस्चिम में ७।१५ को वायव्य में दोज दशमी को उत्तर में ३०।८ को ईशान में यौगिनी होती है इनमें यात्रा वर्जित है ॥३१॥

घात लग्न कहते हैं ।

(छं.अ.) भूमिंव्यब्ध्यद्रिदिक्सूर्यागाष्टांकेशाग्नि सायकाः ॥
मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥३२॥

टीका—मेष राशिवाले को मेष लग्न घातक होता है वृष राशि वालेको वृष, मिथुन वाले को कर्क लग्न कर्क राशि वालेको तुला लग्न सिंह राशि वाले को मकर लग्न कन्या राशि वाले को मीन लग्न तुला को कन्या लग्न वृस्चिक वाले को वृश्चिक लग्न धन राशि वाले को धन लग्न मकर राशि को कुंभ राशि वाले को मिथुन लग्न मीन रासि वाले को सिंह लग्न घातक है सो यात्रा में वृजित है ॥३२॥

काल पाश का वर्णन करते हैं ।

(छं.शा.)कौबेरीतोवैपरीत्येनकालोवारेर्काद्ये संमुखे तस्यपाशः ॥
रात्रावेतोवैपरीत्येन गण्यो यात्रायुद्धे संमुखे वर्जनीयौ ॥३३॥

टीका—सूर्यादिक वारों में उत्तर दिशा से लेकर उलटी चाल से काल

का वास होता है और उसके सामने की तरफ पाश होता है जैसे रविवार को उत्तर में सोमवार को वायुकोण में मंगल को पश्चिम में बुधवार को नैऋत्य में वृहस्पति को दक्षिण में शुक्रको अग्निकोण में शनिवार को पूर्व में काल का निवास होता है और सन्मुख दिशा में पाश होता है जैसे रविवार को उत्तर में काल होता है और दक्षिण में पाश होगा ॥३३॥

परिघ दंड कहते हैं ।

(छं.अ.) भानि स्थाप्यान्यग्धिदिक्षु सप्त सप्तानलर्क्षतः । वायव्याग्नेय दिक्संस्थं परिघं न विलंघयेत् ३३

कालपाश

वार	र	चं	मं	बु	वृ	शु	श
काल	उ	वा	प	नै	द	अ	पू
पाश	द	आ	प	ई	उ	उ	प

टीका—कृत्तिका से लेकर सात २ नक्षत्र चारों दिशाओंमें लिखै वायव्य औरअग्निकोणका परिघ है उसका उल्लंधन न करै ॥३४॥
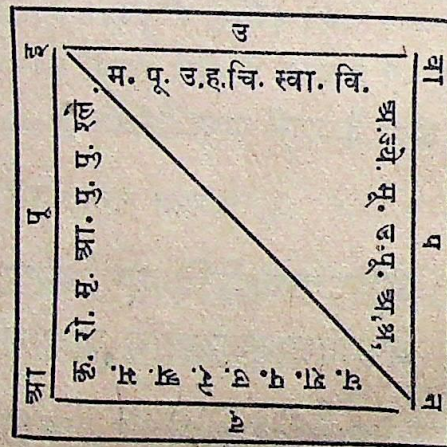
अब इस परिघ का अपवाद कहते हैं ।

(छं.व.) अग्नेर्दिशं नृप इत्ययांत्पुरुहूतदिग्भैरेवं प्रदक्षिणगता विदिसोथ कृत्ये ॥ आवश्यकेपि परिघं प्रविलंध्य गच्छे च्छूलं विहाय यदि दिक्तनुशुद्धिरस्त ॥३४॥

टीका–जो राजा अग्नि कोण में जाना चाहै तो पूर्व दिशा के जो कृत्तिकादिक नक्षत्र है उनमें यात्रा करै इसी प्रकार दक्षिण के मघा आदि नक्षत्रों में नैऋत्य कोण की यात्रा करै पश्चिमके नक्षत्रों में वायव्य की यात्रा करै और उत्तर के नक्षत्रों में ईशान की तरफ यात्रा करै आवश्यक

कार्य में दिक् लग्नों की शुद्धि देखकर दिशाशूल को छोड़कर और परिघ दंड का उल्लघन करके यात्रा करनी चाहिये ॥३४॥

सर्व दिग्गमन नक्षत्र कहते हैं।

(इं.व.) मैत्रार्कपुष्याश्विनिभैर्निरुक्ता यात्रा शुभा सर्व दिशासु तज्ज्ञैः॥ वक्रीग्रहः केंद्रगतोस्य वर्गो लग्ने दिनं चास्य गमे निषिद्धम् ॥३५॥

टीका-अनुराधा, हस्त, पुष्य, अस्विनी इन नक्षत्रों में ज्योतिषियों ने सब दिशाओं में जाना श्रेष्ठ कहा है यदि बक्री ग्रह केन्द्र मे होय अथवा बक्री का षड्वर्ग में होय तौ उस लग्न में यात्रा वर्जित है और बक्री के वार में भी यात्रा निषिद्ध है ॥३५॥

अयन शुद्धि कहते हैं।

(छं.इं.व.) सौम्यायने सूर्यविधू तदोत्तरां
प्राचीं व्रजेत्तौ यदि दक्षिणायने ॥
प्रत्यग्यमाशां च तयोर्दिवानिशं
भिन्नायनत्वेथ वधोन्यथा भवेत् ॥३६॥

टीका-जो सूर्य चन्द्रमा उत्तरायण होंयतौ उत्तर दिशा और पूर्व दिशा में गमन करै और सूर्य चन्द्रमा दक्षिणायन गत होंय तौ दक्षिण और पश्चिम में गमन करै और दोनों के अयन अलग २ होंय तौ उस अयन के अनुसार उसी दिशा में यात्रा करै जैसे सूर्य दक्षिणायन गत होय तौ दक्षिण की यात्रा करै और दिन में करै यदि चन्द्रमा के अनुसार गमन करै तौ रात्रि में गमन करै और जो इससे विपरीत करै तौ उसकी मृत्यु होय ॥३६॥

सन्मुख शुक्र का दोष।

(छं.उ.जा.) उदेति यस्यां दिशि यत्र याति
गोलभ्रमाद्वाथ कुकुब्धसंधे ॥

त्रिधोच्ययं संमुख एव शुक्रो
यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् ॥३७॥

टीका–तीन प्रकारटीका से शुक्र सन्मुखहोता है एक तौ जिस दिशा में उसका उदय है वह दिशा यात्रा का सन्मुख होगी दूसरे दक्षिण उत्तार गोल के भ्रमण से जैसे जो उत्तार गोलमें भ्रमण होय तौ उत्तार में सन्मुख रहेगा और जो दक्षिण गोल भ्रमण होय तौ दक्षिण में सन्मुख होता है तीसरे जो नक्षत्र दिशाओं के कहे हैं उन पर शुक्र होयतौ उसी दिशा में यात्रा करने वाले को सन्मुख होता है इन सब में बलवान पक्ष वही है जिस दिशा में शुक्र का उदय होय उसमें यात्रा न करे ॥३७॥

शुक्र के वक्र और अस्त का फल ।

(छं.उ.) वक्रास्तनीचोपगते भृगोः सुते
राजा व्रजम् याति वशं हि विद्वपाम्
बुधोनुकूलो यदि तत्र संचलन्
रिपून् जयेन्नैव जयः प्रतीन्दुजे ॥३८॥

टीक–यदि शुक्र वक्री हो जाय अथवा अस्त होय नीच का होय ऐसे अवसर पर यात्रा करने वाला राजा शत्रुओंके वश में पड़ जाता है और यदि बुद्ध शुद्ध होय अर्थात् पीछे होय तो यात्रा करने वाला शत्रुओं को जीतता है यदि बुध सामने होय तौ जीत नहीं होती है ॥३८॥

सन्मुख शुक्र का अपवाद ।

(छं.अ.) यावच्चन्द्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये पादे शुक्रोन्धो न दुष्टोग्र दक्षे ॥ मध्ये मार्ग भार्गवास्ते च राजा तावत्तिष्ठेत्संमुखत्वेपि तस्य ॥३९॥

टीका–जब तक चन्द्रमा रेवती से लेकर कृत्तिका के प्रथम चरण तक रहे तब तक शुक्र अन्धा रहता है उसमें यात्रा करने से

संमुख और दाहिने शुक्र का दोष नहां होता और जो यात्राकरने के पीछे मार्ग में हा शुक्र अस्त होजाय या सम्मुख होय जाय तौ राजा को वहीं ठहरना चाहिए जब शुद्ध होजाय जब वहां से आगे बढ़े ॥३६॥

अशुभ लग्न कहते हैं।

(छं.अ.) कुंभकुंभांशको त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥४०॥

टीका–यात्रा में कुम्भ लग्न और कुम्भ का नवांशक ये बुद्धिमानों को त्यागने योग्य हैं क्योंकि इनमें यात्रा करने वाले राजा के धन का नाश पद २ में होता है ॥४०॥

(छं.मं.) अथ मीनलग्न उत वा तदंशके चलितस्य वक्रमिह वर्त्म जायते ॥ जनिलग्नजन्मभपती शुभग्रहौ भव-
तस्तदा तदुद्ये शुभो गमः ॥४१॥

टीका–मीन लग्न और मीन के नवमांशक में जो यात्रा करता है उसका मार्ग टेढ़ा होता हे किन्तु जन्म लग्न और जन्म राशि के स्वामी शुभ ग्रह होंय और यात्रा के लग्न में स्थित होंय तौ यात्रा शुभ है ॥४१॥

लग्न का और भी अनिष्ट कहते हैं।

(छं.र.) जन्मराशितनुतोऽष्टमऽथवा स्वारिभाच्च रिपुभे तनुस्थिते।
लग्नगा तदधिपा वदाथवा स्युर्गतंहि नृपतेर्मृतिप्रदम् ॥४२॥

टीका–यात्रा की जो लग्न है वह यदि अपनी जन्म राशि वा जन्म लग्न से अष्ठम राशि की होवे अथवा शत्रुकी जन्म राशि से छटी होय अथवा अपनी जन्म राशि और जन्म लग्न जो अष्टमेष है और शत्रु को जन्म राशि और जन्म से जो छटे घर का मालिक है उनमें से कोई ग्रह यात्रा के लग्न में स्थित होय तौ मृत्यु का देने वाला है ॥४२॥

शुभ लग्न कहते हैं ।

(छं शा.) लग्ने चंद्रे वापि वर्गोत्तमस्थे
यात्रा प्रोक्ता वांछितार्थैकदात्री ॥
अंभोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं
नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ॥४३॥

टीका–मीन और कुम्भ लग्न के सिवाय और कोई लग्न होय और वह लग्न अपने वर्गोत्तम में होय अथवा चन्द्रमा अपने वर्गोत्तम में होय तौ यात्रा वांछित फल को देने वाली होतो हैं जलचर लग्न होय अथवा जलचर राशिकर नवांशक होय तौ नौका की यात्रा सब सिद्धियों को देने वाली होती है ॥४३॥

दिशाओं के अनुसार राशियों का फल ।

(छं.इं.व.) दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता
यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ॥
हानि विनाशं रिपुतो भयं च
कुर्यातथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ॥४४॥

टीका–पूर्वादि दिशाओं में द्वारलग्न कहते हैं मेष, सिंह, धन ये लग्न पूर्वादिग् द्वार है वृष, कन्या, मकर, ये दक्षिण दिग्द्वार लग्न है ३।७।११ ये पश्चिम दिग्द्वार लग्न है कर्क, वृश्चिक, मीन, ये उत्तर दिग्द्वार हैं जो दिगद्वार लग्न में यात्रा करे तो धन और जय के देने वाली हैं और जो दिन प्रति लोभ लग्न में यात्रा करे तो हानि, विनाश और शत्रु से भय होता है

शुभ लग्न बताते हैं ।

(छं.व.ति.) राशिः स्वजन्मसमये शुभसंयुतो यो
यः स्वारिभान्निधनगोऽपि च वेशिसञ्ज्ञ ॥
लग्नोपगः स गमने जयदोऽथ भूप-
योगैर्गमो विजयदो मुनिभिः प्रदिष्ट ॥४५॥

टीका–जो राशि अपने जन्म समय में शुभ ग्रह से युक्त होय अथवा जो राशि शत्रु का जन्म राशि वा जन्म लग्न से अष्टम होय और वहराशि जो यात्र की लग्न होय तो उस में गमन करने से विजय होतो है अथवा सूर्यकान्त राशि से जो दूसरी राशि है उसकी वेशि संज्ञा हैं उसमें यात्रा करने से विजय होती है अथवा जातक में कहे हुए राज योग में यात्राकरना भी विजय का देनेवाला है मुनियों ने कहा है ॥४५॥

दिशाओं के स्वामी कहते हैं–

(छं.उ.जा.) सूर्यः सितो भूमिसुतोऽथ राहुः
शनिः शशी ज्ञश्च वृहस्पतिश्च ॥
प्राच्यादितो दिक्षु विदिक्षु चापि
दिशामधीशाः क्रमतः प्रदिष्टाः ॥४६॥

टीका–पूर्व दिशाका स्वामी सूर्य है अग्निकोण का शुक्र स्वामी है दक्षिण का मंगल नैर्ऋत्यकोण का राहु पश्चिम का स्वामी शनिवायुकोण का चन्द्रमा उत्तर का बुध और ईना का स्वामी वृहस्पति होता है ये पूर्वादिक दिशा और विदिशाओं के स्वामी क्रम से कहे गये हैं ॥४६॥

अब इनका प्रयोजन कहते हैं ।

[छं.त.] केंद्रे दिगधीशे गच्छेदवनीशः ॥
लालाटिनि तस्मिन्नेयादरिसेनाम् ॥४७॥

टीका–जो दिशा का स्वामी केन्द्र में स्थित होय तौ राजा को उस दिशा में यात्रा करना उचित है और जो दिशा का स्वासी ललाटीहोय तौ यात्रा न करै यदि शत्रु की सेना में जाय तौ हानि होती है ॥४७॥

लालाटिक योग कहते हैं ।

(छं.शा.) प्राच्यादौ तरणिस्तनौ भृगुसुतौ लाभव्यये भूसुतः
कर्मस्थोय तमो नवाष्टमगृहे शौरिस्तथा सप्तमे ॥

चंद्र शत्रुगृहात्मजेऽपि च बुधः पातालगो गीष्पति-
वित्तभ्रातृगृहे विलग्नसदनाल्लालाटिकाः कीर्तिका ॥४८॥

टीका—सूर्य में यात्रा करनेवाले को लग्न में सूर्य होय तौ लालाटिक योग होता है इसी प्रकार ११।१२ घर में शत्रु होय तौ अग्निकोणमें यात्रा करनेवाले को ललाटिक योग होता है दशम घरमें मंगल दक्षिणके यात्रोंको लालाटिक योग करता है और राहु ८।९ घरमें होने से नैऋत्य में लालाटिक योग कारक है चन्द्रमा ६।५ घरमें स्थित होने से बायु कोण में लालाटिक योग कारक है बुध सप्तम होने से उत्तरमें लालाटिक योग कारक है लग्क से २।३ घर वृहस्पति ईशान में लालाटिक करताहै ये पूर्वा दिक दिशा में क्रम से लालाटिक कहते हैं ॥४८॥

पर्युषित योग कहते हैं।

(छं.अ.) मृगे गत्वा शिवे स्थित्वापादितौ गच्छञ्जयेदिपून ॥
मैत्रे प्रस्थाय शाक्रेहि स्थित्वा मूले ब्रजंस्तथा ॥ ४९ ॥

(छं.इं.व.) प्रस्थाय हस्तेऽनिलतत्त्वधिष्ण्ये
स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद्द्विदैवे ॥
वस्वंत्यपुष्ये निजसीम्नि चैक-
रात्रोषितः क्ष्मां लभतेऽवनीशः ॥५०॥

टीका—मृगशिर नक्षत्र में यात्रा करके आर्द्रा नक्षत्र में किसी के यहां निवास करके और पुनर्वसु में यात्रा कर देय तो वह शत्रुओंको जीतलेता है इसी प्रकार अनुराधा में यात्रा करके पुनर्वसु में बीच में ठहरकर पुष्य में यात्रा करैं तौ उसका विजय होता है ॥४९॥ हस्त में प्रस्थान करै चित्रा स्वाती में ठहर कर विशाखा में यात्रा करे और धनिष्ठा रेवती पुष्य में प्रस्थान करके अपनी सीमा मे एक रात्रि रहकर फिर चलैं तौ राजा को भूमि मिलती है ॥५०॥

॥ समय बल कहते हैं ॥

(छं.ग्र.) उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना ॥
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाऽभिजित् ।५१

टीका—उषः काल में पूर्व को न जाय और गोधूलि में पश्चिम को न जाय आधी रात में उत्तर को न जाय और मध्यान्ह में दक्षिण को न जाय ॥ ५१॥

लग्नादि भावों की संज्ञा ।

[छं.ग्र.] लग्नाद्भावाः क्रमादेह १ कोश२धानुष्क३वाहनम्॥४॥
मंत्रोरि ५ गार्गा ७ आयु ७ श्च हृद् ९ व्यापार १०
गम ११ व्यथाः १२ ॥ ५२ ॥

टीका—लग्न से लेकर १२ भावों को क्रम से ये संज्ञा हैं जैसे लग्न की संज्ञा की देह द्वितीय की कोश, तृतीय का धानुष्क, चतुर्थ को वाहन पंचम की मन्त्र षष्ठ की अरि सप्तम को आयु नवम को हृद दशमकी व्यापार एकादश की लाभ द्वादश की व्यथायें संज्ञा हैं ॥५२॥

यात्रा लग्न की शुद्धि कहते हैं ।

[छं.शा.] केंद्रे कोणे सौम्यखेटाः शुभाः स्युर्याने पापास्त्र्या-
यषट्खेषु चन्द्रः ॥ नेष्टो लग्नात्सारिरंध्रे शनिः खेस्ते
शुक्रो लग्नेशनगांत्यारिरंध्रे ॥५३॥

टीका—शुभ ग्रह जो केन्द्र त्रिकोण में होंय तौ शुभ हैं और पाप ग्रह यात्रा की लग्न से ३।६।११।१० घर में शुभ हैं और चन्द्रमा लग्न में छटे आठमें या बारहमें घर में होंय तौ नेष्ठ है दशम में शनि नेष्ठ है शुक्र ७घर में नेष्ट है और ९।१२।६।८ इनमें लग्नेश अशुभ है ॥५३॥

योगों के फल कहते हैं ।

(छं.पा.) योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपि भूदेवानाम् ॥
चौराणामपि शुभशकुनैरुक्ता भवति महतां दपि मनु-

जानाम् ॥५४॥

टीका–राजाओं को योगों से सिद्धि होती है ब्राह्मणों को नक्षत्रों से सिद्ध होती है चोरों को शकुन से सिद्धि होती है और मनुष्यों को मुहूर्तसे सिद्ध होती है ॥ ५४ ॥

योग यात्रा कहते हैं।

(छं.म.) सहजे रविर्दशमभे शशी तथा शनिमंगलो रिपुगृहे सितः सुते ॥ हिबुके बुधो गुरुरपिपीह लग्नगः सजय त्यरीन्प्रचलितोऽचिरान्नृपः ॥५५॥

टीका–यात्रा का लग्न से ३ सूर्य और १० में चन्द्रमा छठे घर मेंशनि मंगल पंचम में शुक्र चौथे बुध लग्न में गुरु होंय तौ उस लग्न में गमन करने वाला राजा जल्दी शत्रुओं को जीत लेता है ॥५५॥

और योग कहते हैं।

(छं.गा.) भ्रातरि सौरिर्भूमिसुतो वैरिणि लग्ने देवगुरुः ॥ आयगतेर्के शत्रुजयश्चेदनुकूलो दैत्यगुरुः ॥५६॥

टीका–यात्रा की लग्न से तीसरे घर में शनि होय छठे में मंगल लग्न में वृहस्पति ग्यारह में सूर्य होय और शुक्र पीछे होय तौ ऐसे लग्न मेंचलने से शत्रुओं को जीतता है ॥५६॥

और योग कहते हैं।

(छं.गा.) तनौ जीव इंदुर्मृतौ वैरिगोर्कः प्रयातो महीन्द्रो जयत्येव शत्रून् ॥५७॥

टीका–लग्न वृहस्पति अष्टम में चन्द्रमा छठे घर में सूर्य हो[illegible]सियोग में यात्रा करने वाला विजय प्रा[illegible] करता है ॥५७॥

और यो[illegible] कहते हैं।

(छं.प.) लग्नगतः स्याद्वपुराधाः लाभधनस्थः शेषन

भोगैः ॥५८॥

टीक—लग्न में बृहस्पति होय और शेष ग्रह ग्यारह में और दूसरे में होय तो अवश्य जय होता है ॥५८॥

दूसरा यात्रा का योग कहते हैं ।

(छं.पं.) द्यूने चंद्रे समुदयगेर्के जीवे शुक्रे विदि धनसंस्थे ॥
ईदृग्योगे चलति नरेशो जेता शत्रून् गरुड इवाहीन् ॥५९

टीका—यात्रा के लग्न से सप्तम घरमें चन्द्रमा होय लग्न में सूर्य - होय द्वितीय घर में गुरु शुक्र बुध होय ऐसे योग में जो यात्रा करै तौ वह गरुड़ जैसे सर्पों को ऐसे शत्रुओं को जीत लेता है ॥५९॥

और योग कहते हैं ।

(छं.चि.) वित्तगतः शशिपुत्रो भ्रातरि वासरनाथः ॥ लग्नगतो भृगुपुत्रः स्युः शलभा इव सर्वे ॥६०॥

टीका—बुध तौ द्वितीय घर में होय सूर्य तीसरे घर में होय ऐसे लग्न में यात्रा करने से शत्रु नष्ट होते हैं जैसे अग्नि में गिर कर टीढ़ी नष्ट हो जाती है ॥६०॥

और भी योग बतलाते हैं ।

(छं.गा.) उदये रविर्यदि सौरिरगः शशी दशमेपि
वसुधापतिर्यदि याति रिपुवाहिनी वशमेपि ॥६१॥

टीका—यदि सूर्य यात्रा के लग्न में होय छटे में शनि दशम घर में चन्द्रमा होय ऐसे लग्न में जो यात्रा करै तौ शत्रु की सेना को वश में कर लेता है ॥६१॥

दूसरा योग कहते हैं ॥

(छं.ज.) तनौ शनिकुजौ रविर्दशमभे बुधो भृगुसुतोऽपि लाभ-
दशमे ॥ त्रिलाभरिपुभेषु भूसुतशनीगुरुज्ञभृगुजा
स्तथा नतयुताः ॥६२॥

टीका—लग्न में तौ शनि और मंगल होय दशम में सूर्य होय ग्यारह घर में बुध और शुक्र होंय मङ्गल और शनी ३। ६। ११ घर में होंय वृहस्पति, शुक्र, ये बलवान होंय ऐसे योग में यात्रा करने वाले का विजय होता है ॥६२॥

और योग कहते हैं।

(छं.गा.) समुदयगे विबुधगुरौ मदनगते हिमकिरणे॥ हिबुकगतौ बुधभृगुजौ सहजगताः खलखचराः ॥ ६३ ॥

टीका—वृहस्पति लग्न में होय चन्द्रमा सप्तम घर में होय बुधशुक्रचौथे घर में होंय पाप ग्रह तीसरे घर में होय ऐसे योग में गमन करनेसेविजय होता है ॥६३॥

दूसरा योग कहते हैं।

(छं. सु.] त्रिदशगुरुस्तनुगो मदने हिमकिरणो रविरायगतः॥ सितशशि जावपि कर्मगतौ रविसुतभूमिसुतौसहजौ॥६४

टीका—यात्रा के लग्न में गुरु होय चन्द्रमा सप्तम घर में होंय सूर्य ग्यारहमें घरमें होय शुक्र बुध दशम घरमें होंय शनि और मङ्गल तीसरेघर में होंय ऐसे योग में यात्रा श्रेष्ठ है ॥६४॥

और भी योग कहते हैं॥

(छं.श्री.) देवगुरौ व शशिनि तनुस्थे वासर रिपुभवनस्थे पंचमगेहे हिमकरपुत्रः कर्मणि सौरिः सुहृदि सितश्च।६५।

टीका—लग्न में वृहस्पति या चन्द्रमा होंय सूर्य छटे घरमें होय चंद्रमा पंचम घर में होंय शनि दशममें होय चौथे घर शुक्र होय ऐसे योगमेंचलने से विजय प्राप्त होता है ॥६५॥

और योग भी कहते हैं।

(छं.प्र.) हिमकिरणसुतो बली चेत्तनौ शिदशपतिगुरुर्हि केंद्र स्थितः॥ व्ययगृहसहजारिधर्मस्थितो यदि च भवति निर्बल श्चंद्रमा ॥६६॥

टीका---बलवान बुध तो लग्न में होय और बृहस्पति केन्द्रमें होय और निर्बल चंद्रमा १२। ३। ६। ८ इन घरों में होय ऐसे योग में भोविजय होता है ।।६६।।

दूसरा योग कहते हैं ।

(छं.अ.) अशुभखगैरतवांष्टमदस्थैर्हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः ।।
कविरिह केंद्रगगीष्पतिदृष्टो वसुचयलाभकरः खलुयोगः ।।६७।।

टीका-पापग्रह ६।८।७ भावों में नहीं होय और शुक्र ४।३।११ इन घरों में होय और केन्द्र में बैठे हुए बृहस्पति की उस शुक्र पर दृष्टि होयतो ऐसे योग में यात्रा करने से बहुत धन का लाभ होता है ।।६७।।

जय कारक योग ।

(छं.प्र.) रिपुलग्नकर्महिबुके शशिजेपरिवीक्षिते शुभनभोगमनः ।
व्ययलग्नेमन्मथगृहेषु जयः परिवर्जितेष्वशुभनांमघरैः ।। ६८ ।।

टीका-बुध १ । १० । ६ । ४ इनमें से किसी भावमें स्थित होयऔर शुभग्रहों की उसके ऊपर दृष्टि होय और १२ । १ । ७ इन घरों में कोई पापग्रह नहीं होय तो ऐसे योग में यात्रा से जय होता है ।।६८।।

और भी विजय योग कहते हैं ।।

(छं.मं.) लग्ने यदि जीवः पापा यदि लाभे कर्मण्यपि चेद्राग्हाधिगमस्यात् ।। द्यूने बुधशुक्रौ चंद्रो हिबुके वा तद्वन्फलमुक्तं सर्वेमुतिवर्यैः ।।६९।।

टीका-लग्न में गुरु होय पापग्रह १०।११ घरमें होंय बुध शुक्र सप्तम में होंय चन्द्रमा चौथे में होय तो ऐसे योग में राज्य की प्राप्ति होती है ।।६९।।

।। और भी योग कहते हैं ।

(छं.म.) रिपुतनुनिधने शुक्र[illegible] देवोह्यथ बुधमृगुजौ तुयगे-

हस्तियौ ॥ मदनभवनगश्चन्द्रमा वांबुगः शशिसुतभृगुजांतर्गश्चंद्रमा ॥७०॥

यदि १।६।८ इन घरों में शुक्र, गुरु चन्द्रमा हों १ योग है। बुध और शुक्र चौथे घरमें स्थित होंय यह दूसरा योग है चन्द्रमा सप्तम मेंहोय अथवा बुध शुक्र के बीचमें चन्द्रमा चौथे घरमें होय यह तीसरा योगहैऐसे योग में यात्रा करने से जीत होती है ॥७०॥

॥ बिजय कारक योग ॥

(छं.गा.) सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुं मन्मथारिहिबुकत्रिगृह चेत् ॥ क्रमतोऽरिसोदरखशात्रवहोराहिबुकांयगैगुरुदिनेऽखिलखेटैः ॥७१॥

टीका—लग्न में तो शुक्र होय सप्तम में गुरु छटे में मङ्गल चौथे में बुध तीसरे में शनि होय तो याशी का विजय होता है अथवा गुरुवार के छटे घर में सूर्य तीसरे घरमें चन्द्रमा दशम में मङ्गल छटे में बुध लग्नमें गुरु होय चौथे घरमें शुक्र ग्यारहमें घरमें शनि होय यदि ऐसे योगमें यात्रा करै तौ विजय होता है ॥७१॥

॥ और भी यात्रा के योग कहते हैं ॥

(छ.मं.) सहजे कुजो निधनगश्च भार्गवा मदने बुधो रविररौ तनौ गुरोः ॥ अथ चेत्स्युरीज्यसितभानवो जलत्रिगता हि सौरिरुधिरौ रिपुस्थितौ ॥७२॥

टीका—यात्रा के लग्न से तीसरे घरमें मङ्गल होय अष्टम में शुक्रहोय सप्तम में बुध होय छटे घरमें सूर्य होय लग्नमें गुरुहोय बृहस्पति शुक्रसूर्य चौथे तीसरे घरमें होय शनि और मङ्गल छटे घरमें होय इनयोगमें चलने वाले राजा की जीत होती है ॥७२॥

योग अधियोग योगाधियोग कहते हैं।

(छ.शा.) एको ज्ञेज्यशितेषु पं[illegible] केंद्रेषु योगस्तथाद्वौ चे-

तेष्वधियोग एषु सकला योगाधियोद्धः स्मृतः ॥ योगे क्षेममथाधियोगगमने क्षेमरिपूणां वधं चाथो क्षेमयशोवनीश्च लभते योगाधियोगे व्रजन् ॥७३॥

टीका—यात्रा के लग्न में बुध, गुरु, शुक्र इनमें से एक ही ग्रह जो केन्द्र त्रिकोण में बैठा होय तौ योग कहा जाता है और जो इन में से दो ग्रह होंय तौ अधि योग होता है और जो सब ग्रह बैठे होंय तौ योगाधि योग होता है जो योग में चलैं तौ कल्याण होय अधि योग में चलें तौ कल्याण होय और शत्रुओं का नाश होय जो योगाधि योग में चलै तौ क्षेम यश और पृथ्वी को पाता है ॥ ७३ ॥

विजया दशमी मुहूर्त।

(छं.तो) इषिमासि सिता दशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिया ॥ श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसंधिकरा ॥७४॥

टीका—आश्विनी शुक्ला १० शुभ कार्यों को सिद्ध करनेवाली है उसमें जो श्रवण नक्षत्र आजाय तौ अति उत्तम है इसमें जो राजा यात्रा करै तौ विजय और सन्धि कराने वाली कही है ॥ ७४ ॥

चित्तकी शुद्धि का विचार।

(छं. व.) चेतोनिमित्तशकुनैःखलु सुप्रशस्तैर्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति ॥
सिद्धिर्भवेदथपुनः शकुनादितोपि
चेतोविशुद्धिरधिका न च तां विनेयात् ॥७५॥

टीका—मन की शुद्धि, अंगों का फड़कना और शकुन ये अच्छे होय और लग्न बलवान होय इनको देखकर राजा यात्रा करै तौ कार्य की सिद्धि होती है शकुनादिकों से चित्त की शुद्धि का होना आवश्यकहै जो चित्त में द्विविध होय तौ यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ ७५ ॥

(छं. व.) व्रतबंधनदैवतप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ ॥
नकदापि चलेदकालविद्युद्धनवर्षातुहिनेपि सप्तरात्रम् ७६

अपशकुन कहते हैं।

टीका–यज्ञोपवीत, देवप्रतिष्ठा, विवाह उत्सव, जाता शौच, मृताशौच, इनकी शुद्धि के पहिले कभी नहीं चलना चाहिये कुसमय की विजुली और बादलों का गर्जना वर्षा का होना, बर्फ पड़ना इनमें सात दिन तक यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ ७६ ॥

एक दिन] का यात्रा में मुहूर्त का प्रभाव।

(छं. वं.) महीपतेरेकदिने पुरातपुर यदा भवेतां गमनप्रवेशकौ॥
भवारशूलप्रतिशुक्र योगिनीं विचारयेन्नैव कदापिपंडित ॥७७॥

टीका–जो राजा का एक दिन में ही पुर से गमन और उसी दिन दूसरे पुर में प्रवेश हो जाय तौ नक्षत्रवार शूल सन्मुख शुक्र योगिनी इनका पंडित कभी विचार न करै ॥ ७७ ॥

चाहिए है इस श्लोक में कहते हैं।

(छं. आ.) यद्येकस्मिन् दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशौ स्तः ॥
तर्हि विचार्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ।७८।

टीका–जो एक ही दिन में राजा का यात्रा और प्रवेश होंय तौ बुद्धिमान मनुष्य को प्रवेश का ही विचार करना चाहिये यात्रा का विचार आवश्यक नहीं है ॥ ७८ ॥

नवम दिनका निषेध कहते हैं।

(छं. अ. प्रवेशान्निर्गमं तस्मात्प्रवेशं नवमे तिथौ ॥
नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात्कदाचन ॥ ७९ ॥

टीका–जिस दिन प्रवेश हुआ है उससे नवमी तिथि नवम [illegible] नवम वार में निकलना न चाहिए और जिस दिन निकले उससे नवमी तिथि नवम नक्षत्र में प्रवेश नहीं करे यदि करै तौ उसका फल अशुभ होता है ॥ ७९ ॥

यात्रा के दिन का कर्तव्य ।

(छं. शा.) अग्निं हुत्वा देवतां पूजयित्वा
नत्वा विप्रानर्चयित्वा दिगीशम् ॥
दत्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगीशं
ध्यात्वा चित्ते भूमिपालोधिगच्छेत् ॥८०॥

टीका—अग्नि में होम करके देवताओं का पूजन करके ब्राह्मणों को नमस्कार करके दिशा के स्वामियों का पूजन करके ब्राह्मणों को दान देकर चित्त में दिशा के स्वामियों का ध्यान करके राजाचले।८०।

नक्षत्र दोहद कहते हैं ।

(छं. शा) कुल्माषांस्तिलतंडुलानपि तथा माषांश्च गव्यंदधि
त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ॥
तद्वत्पायसमेव चापपललं मार्गं च शाशं तथा
षाष्टिक्यं च प्रियंग्वपूपमथवा चित्रांडजान् सत्फलम् ८१
कौर्मं सारिकगौधिकं च पललं शल्यं हविष्यं हया-
द्दद्वे स्यात्कृसरान्नमुद्गमपि वा पिष्टं यवानां तथा॥
मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवादध्यन्नभेवं क्रमाद्भक्ष्या
भक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान् भवेराथालोकयेत् ॥८२॥

टीका—जो अश्विनी नक्षत्र होय तौ सावत भीजे हुए उड़द भक्षण करै भरणी में तिलमिश्रित चांवल कृत्तिका में उड़द रोहिणी में गाय का दही मृगशिर में घी आर्द्रा में पुनर्वसु में हिरणी का मांस। पुष्य में हिरण का रुधिर आश्लेषा में खीर मघा में सिकरे का मांस पूर्वा फालगुनी में मृग का मांस उत्तरा फालगुनी में खरगोश का मांस हस्त में साठी के चांवल चित्रा में मालकागुनी स्वाती मालपूवा विशाखा में रंग बिरगे पक्षी

अनुराधा में उत्तम फल ज्येष्ठ में कछुए का मांस मूल में मैना का मांस पूर्वाषाढ़ में गोहपक्षी का मांस उत्तराषाढ़ में सेह का मांस अभिजित् में हविष्य (मूंग चावल) श्रवण में खीचड़ी धनिष्टा में मूंग शतभिषा में जौ का सतुआ पूर्वा भाद्रपद में मछली मिला हुआ अन्न उत्तराभाद्र पद में कई तरह के अन्न रेवती में दही भात इनका भोजन करे इस में भक्ष्य अभक्ष्य का विचार कर लेय जो वस्तु खाने योग्य नहीं होय उसका दर्शनमात्र ही कर लेय ऐसा करने से नक्षत्र का दोष दूर हो जाता है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

दिग्दोहद कहते हैं–

(छं.अ.) आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम् ॥
भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत् ॥८३॥

टीका–पूर्व की यात्रा करै घी दक्षिण की यात्रा में तिल मिला हुआ भात पश्चिम में मछली, और उत्तरा दिशा में दूध खाकर जाय इस प्रकार से पूर्वादिक दिशाओं में जाय इसको दिग्दोहद कहते हैं ॥ ८३ ॥

वार दोहद कहते हैं।

(छं.अ.) रसालां पायसं कांजीं शृतं दुग्धं तथा दधि ॥
पयोऽशृत तिलान्नं च भक्षयेद्वारदोहदम् ॥८४॥

टीका–रविवार को श्रीखंड सोमवार को खीर मंगल को कांजी बुध को गरम दूध गुरुवार को दही शुक्र को कच्चा दूध शनि को तिल मिला अन्न इनको भक्षण करके जाय ये वार दोहद है ॥ ८४ ॥

तिथि दोहद कहते हैं।

(छं.व.) पत्रादितोर्कदलतंदुलवारिसर्पिःश्राणा हविष्यमपि हेम-जलं त्वपूपम् ॥ भुक्त्वा जेत्र द्रुच मंबु च [illegible]मूत्रं यावान्नपायसगुडान्न मृगन्नमुद्गान् ॥८५॥

टीका–प्रतिपदा को आक [illegible] पत्ता द्वितीया को चावल का

जल तीजको घी चौथ को लपसी पंचमी को हविष्य अन्न छटको सुवर्ण काजल सप्तमी को पूआ अष्टमी को बिजौरा नवमी को जल दशमी को गोमूत्र एकादशी को जौका अन्न द्वादशी को खीर त्रयोदशी को गुड़ चौदश को रुधिर पूर्णिमा और अमावस्या को मूँगभात इन को खाकर यात्रा करै तो तिथि का दोष दूर हो जाता है इसको तिथि दोहद कहते हैं ॥ ८५ ॥

यात्रा के समय का कर्तव्य कहते हैं।

(छं.प्र.) उद्धृत्य प्रथमत एव दक्षिणाघ्रिं द्वात्रिंशत्पदमभिगत्य
दिश्ययानम् ॥ आरो हेत्तिलघृतहेमताम्रपात्रं दत्वादौ
गणकवराय च प्रगच्छेत् ॥८६॥

जब यात्रा करै तब ३२ कदम तक अपना दक्षिण पैर आगे रखकर चलै फिर सवारी में चढ़ कर तिल, घृत, सुवर्ण तामेका पात्र उत्तमज्योतिषी ब्राह्मण को देकर फिर चल देय इससे विजय होती है ॥ ८६ ॥

॥ हर एक दिशाकी सवारी कहते हैं ॥

(छं.अ.) प्राच्यां गच्छेद्गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि ॥
दिशिप्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥ ८७ ॥

टीका—यदि पूर्व को यात्रा करनी होय तो राजा हाथीपर बैठकरजाय और दक्षिण का यात्रा होय तो रथमें बैठकर जाय पश्चिम की यात्रा होय तो घोड़े पर बैठे और उत्तर की यात्रा होय तो पालकी में बैठकर जाय ॥ ८७ ॥

॥ यात्रा के समय स्थानका निश्चय ॥

(छं. पा.) देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वास्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ॥
प्राश्य हविष्यं विप्रानुमतः पश्यन् शृण्वन्मंगलमेयात् ८८

टीका—यात्राकरे तब देवस्थान से अथवा गुरुके घरसे वा अपने घर से अथवा मुख्य स्त्री के घर से हविष्य अन्न का भोजन करकैं तिलककराकर ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर मंगल श[illegible] को सुनता हुआ गमन करै ॥ ८८ ॥

॥ प्रस्थान की विधि कहते हैं ॥

(छ.प्र.) कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलंबो भूदेवादिभिरुपवीतमायुधंच ॥ क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥ ८६ ॥

टीका—आवश्यक कार्य से जो चलने में विलंब दीखे और मुहूर्त समीप आगया होय तो मुहूर्त के ठीक समयपर ब्राह्मण आदि के हाथ यज्ञोपवीत, शस्त्र शहद, आमला अथवा जो वस्तु अपने लिये प्रिय हो वह भेज देय ये क्रम से चारौ वर्णो को प्रस्थान है जैसे ब्राह्मण होय तो यज्ञोपवीत को प्रस्थान में रक्खैं क्षत्रीको शस्त्र रखना चाहिये वैश्यको शहत और शूद्र को आमला प्रस्थान में रखना चाहिये ॥ ८६ ॥

॥ प्रस्थानका प्रमाण कहते हैं ॥

(छ.मं.)गेहाद्गृहांतरमपि गमस्तर्हि यात्रेति गर्गःसीम्नःसीमांतरमपिभृगुर्बाणविक्षेपमात्रं ॥ प्रस्थानं स्यादिति कथयतेऽथो भारद्वाज एवं यात्रा कार्या बहिरिहपुरात्स्याद्वसिष्ठो ब्रवीति९०

टीका—गर्गाचार्य का मत है कि एक घर से दूसरे घर तक जानायात्रा है भृगुजी का यह मत है कि एक सीमासे दूसरी सीमातक जाने को यात्रा कहते हैं भारद्वाज का यह मत है कि जितनी दूर जाकर वाण गिरैंवहांतक जाने का नाम हैद्ववशिष्ठजी का यह मत है कि ग्राम के बाहिर जाने को यात्रा कहते हैं ॥ ९० ॥

प्रस्थान का परिणाम कहते हैं ।

(छ.व.) प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पंच केचि[illegible]द्वय-मुशन्ति दशैव चान्ये ॥ संप्रस्थितो य इह मंदिरतः प्रयातो गंतव्यदिक्षु [illegible] प्रयतेन कार्यम्॥ ९१ ॥

टीका—किसी ऋषि का तौ यह मत है कि ५०० धनुष की दूरी पर प्रस्थान रखना चाहिये धनुष चार हाथ का होता है कोई ऋषि कहते हैं कि २०० धनुध की दूरी पर रखना चाहिये कोई ऋषि १० धनुष की दूरी का प्रस्थान कहते हैं अपने घर से जिस दिशा में जाना होय उसमें प्रस्थान करना चाहिये ॥ ९१ ॥

॥ प्रस्थान कितने दिन रह सकता है ॥

(छ.स्र.) प्रस्थानेभूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य नैकत्रतिष्ठे-
त्सामंतःसप्तरात्रं तदितरमनुजः पंचरात्रंथैव॥ ऊर्ध्वंगच्छे
च्छुभाहेऽप्यथ गमनदिनात्सप्तरात्राणिपूर्वं चाशक्तोतद्दि
नेऽसौ रिपुविजयमना मैथुनं नेव कुर्यात् ॥९२॥

टीका—भूमि का पालन करनेवाला राजा प्रस्थान करके दशदिन तक एक जगह न ठहरै और सामान्य छोटा राजा होय वह ७ दिन एक जगह न ठहरै और जो मामूली आदमी होय वह ५ रात्रि एक जगह न ठहरै और जो अधिक दिन हो जाय तौ दूसरा मुहूर्त दिखाकर यात्रा करै जो अपने विजय की इच्छा करे वह यात्रा से ७ दिन पहले मैथुन न करे और जो आवश्यक होय तो एकदिन पहिले मैथुन न करै ॥ ९२ ॥

प्रस्थना के नियम

दुग्धं त्याजं पूर्वमेव त्रिरात्रं क्षौरं त्याज्यं पंचरात्रं
च पूर्वम् ॥ क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिन् वमिश्च त्याज्यं
यत्नाद्भूमिपाले ननूनम् ॥९३॥

अर्थ—यात्रा करने से पहिले ३ रात्रि दूध छोड़कर देय और पांच रात पहि[illegible] क्षौर करना छोड़ देय शहद का खाना तेलकी मालिश और वमनये यात्रा [illegible]दिन वर्जित हैं और राजाओं को अवश्य ही त्याज्य हैं ॥ ९३ ॥

यात्रा के समय निषि[illegible] भोजन ।

[छ.गीति] भुक्त्वा गच्छति य[illegible] चेत्तैलगुडक्षीरपक्वमांसानि ॥

विनिवर्तते स रुग्णः स्त्रीद्विजमवमान्य गच्छतो मरणम् ॥९४॥

टीका-यदि मनुष्य तेल, गुड़, दूध पका हुआ मांस इनको यात्रा के समय खाकर चलै तो वह रोगी होकर लौट आता है और जो स्त्री और ब्राह्मण का अपमान करके जाय उसका मरण होय ॥ ९४ ॥

(छ. व.) यदि माःसुचतुर्ष पौषमासादिषु वृष्टिर्हि भवेदकालवृष्टिः ॥ पशुमर्त्यपदांकिता न यावद्वसुधा स्यान्नहि तावदेव दोषः ॥९५॥

टीका-यदि पौष माघ फाल्गुन चैत्र इन महीनों में वृष्टि होय तौ उसको अकाल वृष्टि कहते हैं पशु मनुष्य इनके पैरों से जब तक पृथ्वी में चिन्ह नहीं होय तब तक दोष नहीं है और जो पैरों के चिन्ह जाय तो वह दोष कारक है अर्थात् थोड़ी बर्षा से कीचड़ होती है उसमें दोष है अच्छी वृष्टि होने से दोष नहीं है ॥ ९५ ॥

अप शकुन की शांति कहते हैं।

(छं.गा.) अल्पायां वृष्टौ दोषोऽल्पो भूयस्यां दोषो भूयान् जीमूतानां निर्घोषे वृष्टौ वा जातायां भूपः ॥ सूर्येन्द्वोर्बिम्बे सौवर्णे कृत्वा विप्रेभ्यो दद्याद्दुः शाकुन्ये साज्यं स्वर्णं दत्वा गच्छेत्स्वेच्छाभिः ॥९६॥

टीका—थोड़ी वृष्टि होने से थोड़ा दोष होता है अधिक वृष्टि में अधिक दोष है बादल गर्जे हों या वर्षा हो चुकी होय ऐसे समय पर दूर जाना आवश्यक होय तौ सुवर्ण के सूर्य चन्द्रमा बनवाकर ब्राह्मणों को देदेवै अथवा और कोई अपशकुन दिखाई पड़े तो घृत और सुवर्ण का दान देकर चलाजाय तौ दोष नहीं होता है ॥ ९६ ॥

अब अच्छे शकुन बताते हैं।

(छ.शा.) विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदुग्धगोसिद्धार्थपद्मांवरंवेश्या-
वाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषं ॥ सद्वाक्यं
कुसुमेक्षुपूर्णकलशश्छत्राणि मृत्कन्यका रत्नोष्णीष-
सितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥ ६७ ॥ आद-
र्शाजनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं शावं रोदवर्जितं
ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ॥ भारद्वाजनृयानवेदनिनदा
मांगल्यगीतांकुशा दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो
घटः स्वानुगः ॥६८॥

टीका—बहुत से ब्राह्मण, घोड़े, हाथी फल अन्न दूध दही गाय सरसों कमल श्वेत वस्त्र बाजा मोर चाय नौला बँधा हुआ पशु मांस, मंगलीक बचन, पुष्प, ईख, भरा हुआ कलश, छत्री, गीला मिट्टी कन्या रत्न, पगड़ी सफेद वैल मदिरा पुत्र समेत स्त्री प्रज्वलित अग्नि ॥ ६७ ॥ वट्टा अंजन धुला हुआ वस्त्र धोवी मछली घी सिंहासन जिसके साथ कोई रोता न होय ऐसा मुर्दा ध्वजा सहत बकरी शस्त्र गोरोचन भारद्वाज (खुटकबढ़ैया) पालकी वेद ध्वनि मांगल्य गीत अंकुश ये जो यात्रा समय दीखें तौ अच्छा फल है और रीता घड़ा अपने पीछे दीखै तौ अच्छा है ॥६८॥

अपशकुन बतलाते हैं।

(छ.शा.) वंध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेंधनक्लीबविट्तलो-
न्मत्तावसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः ॥ नग्ना-
भ्यक्तविमुक्तकेशपतितव्यंगक्षुधार्ता असृक्स्त्रीपुष्पं
सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥६९॥
कार्पासी गुडतक्रपंक [illegible]कुब्जाः कुटुम्बेकलिर्वस्त्रादेः

स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ॥ कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुट् गर्भिणी मुंडार्द्रांबरदुर्वचोंधबधिरोदक्या न दृष्टाः शुभाः ॥१००॥

टीका—बांझ स्त्री चमड़ा तुष (अन्न का छिलका) हड्डी, सर्प नोंन अंगार ईंधन, नपुंसक विष्टा तेल, पागल आदमी, चर्बी, औषधी शत्रु, जटावाला सन्यासी, घास सूखी, बीमार आदमी, नंगा आदमी, तेल लगाये हुए आदमी, बाल खुला हुआ पुरुष, पातकी मनुष्य भूखा, लोहू, स्त्री का रज, किरकैटा अपने स्थान का जलना विलाव का युद्ध छींक का होना ।९९। गेरुआ वस्त्र धारी पुरुष, गुड़, मठा कीचड़ विधवा स्त्री, कुबड़ी स्त्री कुटुम्ब की कवलह वस्त्रादिक गिरना, भैंसों का युद्ध, काला अन्न, कपास, व्यमन होना गधे का रोना, बहुत क्रोध, गर्भवती स्त्री मुड़ा हुआ पुरुष, गीलावस्त्र, खोटे वचन अन्धे वहिरे रजस्वला यात्रा के समय इन्हें दीखना अशुभ है ॥१००॥

॥ और शकुन कहते हैं ॥

(छं.शा.) गोधाजाहकशूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं नो शब्दो न विलोकनं च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः ॥ नद्युतारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे व्यत्ययस्ताः शकुना नृपेक्षणाविध्धे यत्रोदिताः शोभनाः ॥१०१॥

टीका-गोह, जाहक, शूकर, सर्प, शशक इनका नाम लेना शुभ है इनका शब्द और देखना बुरा है बन्दर और रीछ इनका देखना औरसुनना दोनों शुभ हैं परन्तु अपने मुख से नाम लेना शुभ नहीं नदी का उतरना, भय की बात, गृह प्रवेश नष्ट वस्तु का तलाश करना, इन कामों में उलटा समझना जैसे ब्राह्मण आदिको का होना शकुन कहा है वन्ध्या आदिकों का सामने आना यात्रा में अशुभ कहा है उसको यहां उलटा समझना चाहिए ॥ १०१ ॥

॥कोकिल आदिका शकुन कहते हैं ॥

(छ. अ.) वामांगे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला ॥
पिंगला छुच्छुकाः श्रेष्ठाः शिवाः पुरुषसंज्ञिताः ॥१०२॥

टीका—यदि बांई तरफ कोइल छिपकली, पड़ुकिया सूअरिया, रला [पक्षी] पिंगला [पोला रङ्गकी पक्षी] छछूंदर, स्यारनी और पुरुषसंज्ञक [हस कबूतर] आदि यात्रा में होय शुभ है ॥०२ ॥

॥ दक्षिण में शकुन कहते हैं ॥

(छं. अ.) छिक्कारः पिक्कको भासः श्रीकंठो वानरो रुरः ॥
स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभाः ॥१०३॥

टीका—छिक्कार (एक प्रकार का हरिण) पपीहा, मास, श्रीकंठ[पक्षि विशेष] वन्दर (कृष्णामृग) स्त्री संज्ञक पक्षी कौआ, रीछ कुत्ता ये दाहिनी तरफ यात्रा में शुभ है ॥१०३॥

(छं. अ.) प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्राणां मृगपक्षिणः ॥ ओजा
मृगा व्रजंतोऽतिधन्या वामे खरस्वनाः ॥१०४॥

टीका—यात्रा में मृग जाति और पक्षी जाति ये दाहिनोतरफशुभ होते हैं जो मृगऊनी संख्यामें जैसे ३।५।७।९।११ इतने दिखाई दें तो बहुतशुभ हैं और बांई तरफ गधेका क्षब्द होय तो वह भी श्रेष्ठ है ॥१०४॥

(छं. अ.) आद्येपशकुनेस्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ॥ द्विती-
ये षोडशप्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजेत् ॥१०५॥

टीका—पहिले अपशकुन में ग्यारह श्वास ठहर कर चलै दूसरा फिर अपशकुन होय तो १६ श्वास ठहर कर चले तीसरा अपशकुन होयतोकभी न ज[illegible] ॥१०५॥

यात्रा से लौट कर गृह प्रवेश का मुहूर्त ।

(छ. उ.) यात्रानिवृतौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवैः क्षिप्रचरैः

पुनर्गमः ॥ द्वीशेऽनले दारुणभे तथोग्रभे स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात् ॥१०६॥

टीका—यात्रा से लौटकर मृदु संज्ञक (चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती) ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा रोहिणी) इन नक्षत्रों में जो प्रवेश करै तो शुभहै और जो क्षिप्र संज्ञक (अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित) और चर संज्ञक (स्वाती पुनर्वसु श्रवण से तीन) इन नक्षत्रों में जो गृह प्रवेश करे तो फिर यात्रा होती है और जो विशाखा में प्रवेश करे तो स्त्री का नाश कृत्तिकामें प्रवेश करने से घरका नाश दारुण (मूल ज्येष्ठाआर्द्रा आश्लेषा) मेंप्रवेशकरने से पुत्र का नाशउग्रसंज्ञक [तीनों पूर्वा भरणी, मघा] इनमें प्रवेश करनेसेअपना ही नाश होता है ॥१०६॥

यात्रा के दोषों को कहते हैं—

(छं.म.भा.) अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसंमुखसितज्ञदिक्कपाः ॥ भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदंडको युवती रजोप्यशुचितोत्सवादिकम् ॥ १०७ ॥ मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्च सौररविभौमवासराः ॥ अपि वामपृष्ठगविधुस्तथाऽलो वसुपंचकाभिजिदथापि दक्षिणे ॥ १०८ ॥

(छं.स्र.) लग्ने जन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहसहितर्क्षाच्च षष्ठं तदीशा वा लग्ने कुंभमीनर्क्षनबलवतनू चापि पृष्ठोदयं च ॥ पृष्ठोशासंस्थमृक्षं दशमशनिरथो सप्तमे चापि काव्यः केंद्रे वक्राश्च वक्रीग्रहेदिवशविवाहोक्त दोषाश्च नेष्टाः ॥१०९॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ भाषाऽनुवादनिकषे यात्राप्रकरणं समाप्तम् ॥ ११ ॥

टीका-अयन का दोष, नक्षत्र का दोष, मास दोष तिथि, काल, वार इनके दोष दिक शुल संमुख शुक्र, बुध और दिगोश वक्री शुक्र आदि, परिध दंड स्त्री का रजोदर्शन, अपवित्रता जाताशौच, मृताशौच दोपोत्सवादि ॥ १०७ ॥

मृतपक्ष, रिक्तातिथि, द्वादशी, षष्ठी तिथि और इनके ही तुल्य, अष्टमी पूनौ अमावस्या शनि, रवि, भौम, वार वांयां पोठ पीछे का चन्द्रमा अउल योग और दक्षिण की यात्रा में जिनका निषेध है ऐसे अभिजित् मुहूर्त, धनिष्ठादि पंचक ये सब पंचांग दोष हैं अब लग्न के दोष कहते हैं ॥१०८॥

जन्म राशि और जन्म लग्न से अष्टम घर अपनी जन्म राशिसे अष्टमेश और जन्म लग्न से अष्टमेश शत्रु की जन्म राशि से षष्ठेश और शत्रु की जन्म लग्न से षष्ठेश ये जो यात्रा के लग्न में स्थित होय तब दोष होता है कुंभ और मीन लग्न होय यदि ये लग्न न होय तौ कुंभ मीन लग्नों का नवांशक और षष्ठोदय राशि और दिग्विलोम लग्न दशम घर में शनि सप्तम में शुक्र केन्द्र में बाकी ग्रह की वक्री ग्रहों के वार और विवाह में जो दग्धा तिथि और पात आदि दोष हैं ये सब यात्रा में वर्जित हैं ॥१०९॥

इति श्री मुहूर्त चिन्तामणौ भाषा टीकायां यात्रा प्रकरणं

समाप्तम ॥ शुभं भूयात् ॥

द्वादश प्रकरणम्

अथ वास्तु प्रकरणम्-

(छं॰ शा) यद्भं व्द्यंकसुतेशदिङ्मितमासौ ग्रामःशुभो नामभात् स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजैः शेषितम् ॥ काकिण्यस्त्वऽनयोश्च तद्विवरतो यस्याधिकाः सोर्थ दोऽथ द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां हितं पूर्वतः ॥१॥

टीका—किसी ग्राम या नगर में रहने का विचार होय तौ उसका शुभाशुभ कहते हैं ।

जिस नगर में रहना चाहै उसकी राशि अपनी राशि से दूसरी नवीं पांचवीं ग्यारहवीं दशमो होय तौ वह नगर रहने वालेके लिएश्रेष्ठहैअब काकिणी का विचार कहते हैं अपने वर्ग को दुगुना करे दूसरे का वर्ग जोड़ देय और ८ का भाग देय जिस में कम बचै वह श्रेष्ठ होता है औरजिसमें ज्यादा बचै वह धन देनेवाला होता है जैसे किसकी का नाम हरीहरहै और मथुरा में रहना चाहता हैं हरीहर का वर्ग आठवां हैं इसको दूना किया १६ हुए और मथुरा का वर्ग छटा हैं ये जोड़ दिया तो २२हुए इनमें ८ का भाग दिया तौ ६ बचै और मथूरा का वर्ग ६ हैं इसको दूनाकिया१२ हुए और ८ जोड़दिये तौ २० हुए इसमें ८ काभाग दिया ४ बचै तौ मथुरा धनी हुआ क्यों किइसमें ४ बचे हैं और उसमें ६ बचे तौ हरीहर ऋणी हुआ तौ इसका नुकसान रहेगा इसका सार यह है जो नगर की काकिणी अधिक होय तौ रहनेवाले को श्रेष्ठ है । अब द्वारका क्रम कहते हैं जिसका १।४।८ ये ब्राह्मण राशि होंय उसको पूर्व में द्वारमकान का रखना चाहिए और जिसकी वैश्य संज्ञक २।६।१० राशि होंय उसको दक्षिण में घर द्वार रखना चाहिए और शूद्र राशि ३।७।११ वालेपुरुषको पश्चिम में द्वार रखना चाहिए और नृप राशि १।५।३ को उत्तर में द्वार रखना चाहिये ॥१॥

ग्राम निवास में निषिद्धि कहते हैं—

(छं.व.) गोसिंहनक्रमिथुनं निवसेन्न मध्ये ग्रामस्य पूर्वककुभो-लिकर्षांगनाश्च ॥ कर्कोधनुस्तुलभमेषघटाचतद्वद्वर्गाः स्वपंचमपरा बलिनः स्युरैन्द्रया ॥ २ ॥

टीका—ग्राम के ९ भाग कल्पना करने चाहिये उनमें से ग्राम के मध्यमें २।५।१०।३ ये राशि जिसकी होय उसको नहीं बसना चाहिये वृश्चिक राशि वाले को ग्राम के पूर्व में नहीं बसना

चाहिए मीन राशि वाले को अग्नि कोण में कन्या राशि वालेको दक्षिणमें कर्क वाले को नैऋत्य में धन वाले को पश्चिम में तुला वाले को वायव्य में मेष वाले को उत्तर में कुम्भ वाले को ग्राम के ईशान में निवास नहीं करना चाहिए और अ, क, च, ट, त, प, य, श, ये जो वर्ग हैं सो पूर्वादि दिशाओं में क्रम से बलवान होते हैं जैसे अवर्ग पर पूर्व में बली होताहैइस लिये अवर्ग पर जिसका नाम होय उसका पूर्वमें द्वार बनवाना चाहिएकवर्ग वाले को अग्नि कोणमें बनवना चाहिए इसी प्रकार हर एक वर्गकी दिशा होती है और अपने से पांचमां वर्ग शत्रु का होता जैसे अवर्ग से पांचमां तवर्ग है वह शत्रु तवर्ग की दिशा वायव्य है तो अवर्ग वाले का वायव्य में द्वार नहीं बनाना चाहिये ॥२॥

(छं.इं.) एकोनितेष्टर्क्षहुतादितिथ्यो रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ॥ युक्ता घनैश्चापि युता विभक्ताभूपाश्विभिःशेषमितो- हिपिंडः ॥ ३ ॥ स्वेष्टायनक्षत्रभवोथ दैर्घ्यहृत्स्याद्विस्तृ तिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता ॥३॥

टीका—जिस पृथ्वी पर घर बनाया जाता है वहअनेक प्रकार की होतो है सम, विषम, त्रिकोण, चतुष्कोण इत्यादि भेद हैं बर कन्याकी तरह अपने नाम से उस पृथ्वी में लायक देखना योग्य है अपने नाम के नक्षत्र में से १ घटावै जो शेषबचैं उसको १५२ से गुणाकरै फिर जो ध्वजादिक इष्टवस्तु है उसमें से १ घटावै और ८१ से गुणा करै जो गुणनफल आवै उसको पहिले गुणनफल में जोड़ देय और उसमें १७ और जोड़ देय औरउसमें २१ का भाग देय जो शेष बचैं वह पिंड होता है ॥३॥ घर बनाने वाले का जो इष्ट नक्षत्र और इष्ट आवे इनसे बना हुआ जो पिंड उसमें दैर्घ्य का भाग देने से विस्तार होता है और विस्तारका भाग देनेसे दैर्घ्य हो जाता है जैसे उदाहरण [illegible] नामका कोई पुरुष है इसका

अनुराधा नक्षत्र है दूसरा नक्षत्र रोहिणी है यह नक्षत्र संख्या में चौथा है इसमें से १ घटाया ३ रहे इसको १५२ से गुणा किया तो ४५६ हुए अब चाहा हुआ वास्तु हरि है यह तीसरा है इसमें से १ घटाया तौ २ बचे इसको ८१ से गुणा किया तौ १६२ हुए इस अंक को पहिले आये अंक ४५६ से जोड़ दिया तौ ६१८ हुए उसमें १७ जोड़े तब ६३५ हुएइनमें २३६ का भाग दिया तब २०३ रहे यही इष्ट आय और इष्ट नक्षत्रसे उत्पन्न हुआ क्षेत्रफल है इसमें २९ का भाग दिया तौ लब्धि ७ हुए सो विस्तार हुआ और विस्तार ७ का भाग दिया २९ दैर्घ्य हुआ यहां घर के लिए इष्ट वास्तु सहित जो क्षेत्रफल है उसका २१६ से गुणा करके १।२।३। आदि इष्ट है वह जोड़ देने से चाहा हुआ महागृह का क्षेत्रफल हो जाता है ॥३॥

आया ध्वजो धूमहरिश्वगोखरेभध्वांक्षकाः पिण्ड इहाष्टशेषिते ॥४॥

(छं.उ.) ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं कार्यं हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा ॥ प्राच्यां बृषे प्राग्यमयोर्गचेऽथवापश्चादुदक्पूर्वयमे द्विजादितः ॥५॥

टीका—उस क्षेत्र में ८ का भाग देने से जो शेष बचै उसी के अनुसार ध्वज, धूम, हरि, श्व, गो, खर, इभ, ध्वांक्ष नामक आठ आय होते हैं तिनमें ध्वज नामक आय यदि आजाय तो सब दिशाओं में द्वार शुभ है और हरि नामक आय जो आजाय और जो ध्वज नामक आय आजाय तो पूर्व दक्षिण, उतर इन दिशाओं में द्वार बनावे बृषनामक आय में पूर्व में द्वार रक्खै अथवा ब्राह्मण को पश्चिम में क्षत्रिय को उत्तर में वैश्य को पूर्व में शूद्र को दक्षिण में घर का द्वार रखना योग्य है ॥५॥

ग्रहों को बल के अनुसार प्रवेश का फल।

(छं.उ.) गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशोऽर्केंद्वीज्यशुक्रे विबलेस्त नीचे ॥ कर्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे पुरःस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ॥६॥

टीका—सूर्य यदि निर्बल या अस्त होय तो मकान बनाने वाले का नाश होता है और जो चन्द्रमा असंगत निर्बल या नीच का होय मकान के मालिक की स्त्री का नाश होता है और गुरु निर्बल होय तो सुख नहीं मिलता और जो शुक्र निर्बल होय तौ धन का नाश होता है चन्द्र नक्षत्र और वास्तु नक्षत्र सामने होय तो मालिक को उस घर में स्थित नहीं होय और जो चन्द्र नक्षत्र और वास्तु नक्षत्र पृष्ठ गत होय तौ वह मकान खुदता है अर्थात् चोर उनमें ऐंडा लगाते हैं ॥ ६ ॥

अब फल सहित अंश कहते हैं।

(छं.उ.) भं नागतष्टं व्यय ईरितोऽसौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक्स पिंडः ॥ तष्टो गुणैरिन्द्रकृतांतभूपा ह्यंशा भवेयुर्न शुभोंऽतकोऽत्र ॥७॥

टीका—पहिले कही हुई रीति से जो ग्रह का नक्षत्र आया है उसमें ८ का भाग देने से व्यय आता है उस व्यय के अंक में ध्रुव आदि जो नाम हैं उनके अंक जोड़ देय जोड़ने से जो पिंड बनै उसको पहिले पिंड में जोड़ देय फिर उसमें ३ का भाग देवै यदि भाग देने से १ बचै तो इन्द्र नामक अंश होता है २ बचै तौ यम नामक अंश होता है ३ बचै तौ राजा नामक अंश होता है इनमें यम नामक जो अंश है वह अशुभ है ।७।

शाला ध्रुवांकों की विधि।

(छं.उ.) दिक्षु पूर्वादितः शालाध्रुवाभूद्रौ कृता गजाः ॥ शालाध्रुवांकसंयोगः सैको वेश्म ध्रुवादिकम् ॥८॥

टीका—जो पूर्व में द्वार आता होय तो ध्रुवांशक १ होता है

श्रौर जो दक्षिण में बनवाना होय तौ ध्रुवांक १ होता है श्रौर दक्षिण में बनाना होय तौ ध्रुवांक २ होता है पश्चिम में द्वार बनाना होय तो शाला ध्रुवांक ४ होता है उत्तर में बनाना होय तौ ध्रुवांक ८ होते हैं पूर्वादिक् दिशाश्रों में जितने दर्वाजे बनवाने होय उतने ही ध्रु वां को जोड़ फिर उसमें ४ जोड़ देवै तो वह ध्रुवादि संज्ञक गृह होता है ॥८॥

ध्रुव श्रादिकों की श्रक्षर संख्या कहते हैं ।

(छं.श्र.) तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रे नामाक्षर त्रयम् ॥ भूद्व्यब्धी-ष्वंगदिग्वन्हिविश्वेषु द्वौ नगाऽब्धयः ॥९॥

टीका-(दिक्षु पूर्वादि इस श्लोक के श्रनुसार जो घर की ध्रुव श्रादि संज्ञा श्राई है वह जो १५।१२।८।१६।९।११।१४ इनमें से कोई होय तौ गृह का नाम तीन श्रक्षरों का होता है श्रौर जो १।२।४।५।६।१०।३।१३ इनमें से कोई नाम आवै तौ गृह का नाम दो श्रक्षर का होता है श्रौर जो गृह का नाम ७मां होय तौ गृह का नाम ४ श्रक्षर का होता है ॥९।

१६ शाला गृहों के नाम ।

(छं.श्र.) ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकांतमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रं च ॥ रिपुदं वित्तदंनाशं चाक्रंदं विपुलविजयाख्यं स्यात्॥१०।

टीका—ध्रुव, धान्य, जय, नन्द, खर, कान्त, मणोरम, शुमुख, दुर्मुख, उग्र, रिपुद, वित्तदन्त, नाश, श्राक्रन्द, विपुल, विजय ये १६ नाम शाला गृहों के हैं ॥१०॥

[छं.उ.] पिंडे नवांकांगगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण ॥ विभाजिते नगिनगांकसूर्यनार्कतिथ्यृक्षख-भानुभिश्च ॥११॥

[छं.श्र.] श्रायो वारोंशको द्रव्यमृणमृक्षं तिथिर्युतिः ॥ श्रायु-श्चाथ गृहेशर्क्षगृह भैक्यं मृतिप्रदम् ॥१२॥

टीका—पहिले पिंड को ९ जगह रक्खै उसमें प्रथम अंक को

१ से गुणा करै द्वितीय अंक को ९ से तीसरे अंक को ६ से चौथे अँक को ८ से ५ में अंक को ९ से छटे को ८ से ७ में को ८ से आठ में को ४ से नमें को ८ से गुणा करै गुणा किये हुए प्रथम अंक में ८ का भाग देय द्वितीय अंक में ७ का तीसरे में १ का भाग देय चौथे में १२ का पांचवें में ८ का ६ में २७ का ७ में में २५ का ८ मे २७ में नवे में १२० का भाग देय उनमें से प्रथमांक शेष को आय समझै द्वितीयांक शेष को वार समझै तृतीय शेष को अँश समझै चतुर्थ शेष को धन समझै पंचम शेष को ऋण समझै छटे को नक्षत्र समझैं सात में शेष को तिथि समझै आठ में शेष को योग समझैं

आयादि	आ	वा.	अं.	ध.	ऋ	न.	ति.	यु.	आ
गुणक	९	९	६	८	३	८	८	४	८
भाजक	८	७	८	१२	९	१५	२७	२७	१२०

नवमांक शेष को आयु समझै स्वामी और घर का एक नक्षत्र होय तो मृत्यु का देने वाला होता है।

उदाहरण जैसे पिंड २०३ है इसको ९ से गुणा किया तौ १८२७ हुए इसमें ८ का भाग दिया तौ शेष ३ रहे तौ तीसरा सिंह आय हुआ इसी प्रकार और भी समझ लेने विषम वास्तु शुभ होता है समवास्तु अशुभ है ॥११॥१२॥

गृहारंभ में वृषवास्तु चक्र कहते हैं।

(छ·शा·) गेहाद्यारभेऽर्कभाद्वत्सशीर्षरामैर्दाहोवेदभैरग्रपादे ॥ शून्यंवेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैः पृष्ठे श्रीर्युगैर्दक्ष कुक्षौ ॥१३॥ लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो वेदैर्नैःस्व्यं वामकुक्षौ मुखस्थैः ॥ रामैः पीडा सततं वार्कधिष्ण्याद्श्वै रुद्रैर्दिग्भिरुक्त ह्यसत्सत् ॥१४॥

[illegible]–मकान के बनाने में बैल के आकार का चक्र बनावै सूर्य के नक्षत्र से ३ नक्षत्र बैल के सिर पर रक्खै उनका फलदाह है अर्थात् उनमें गृहारंभ करने से आग लगती है उससे आगे के चार नक्षत्रों को बैल के पैर के आगे रक्खै उनका फल

सूर्य है इनमें मकान बनाने से बन्द पड़ा रहता है फिर ४ नक्षत्र पिछलेपैर में रक्खै उनका फल स्थिरता है फिर आगे के ३ नक्षत्र पीठ पर रक्खै उनका फल श्री है इनमें बनवाने से धन मिलता है फिर चार नक्षत्र दाहिनी कूख में रक्खे उनमें लाभ होता है आगे के ३ नक्षत्र पूँछ पर रक्खे उनमें बनवाने के स्वामी का नाश होता है फिर ४ नक्षत्र बांई कूख पर रक्खै इनमें दरिद्र होता है फिर आगे के ३ नक्षत्र मुख पर रक्खै उनका फल पीड़ा है आशय यह है कि सूर्य के नक्षत्र से ७ अशुभ फिर ११ नक्षत्र शुभ हैं फिर १० नक्षत्र अशुभ है ॥१३॥१४॥

अब पूर्वादिक दिशाओं में द्वार का और

सोबड़ के घर का मुहूर्त।

(छ.स्र.) कुम्भेर्के फाल्गुनेप्राग्परमुखगृहं ५ श्रवणे सिंहकर्क्योः
पौषेनक्रे च याम्योत्तरमुखसदनं गेजगेर्के च राधे
मार्गे जूकालिगे स्तध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैं
सूतागेहं त्वदित्यां हरिभविधिभयोस्तत्र शस्तप्रवेशः ॥

टीका—कुम्भ के सूर्य में फाल्गुन में श्रवण में कर्क और सिंह के सूर्य में पौष में मकर के सूर्य में जो घर बनवावै तौ उसका पूर्व या पश्चिममे द्वार रक्खै मेष और वृष के सूर्य में वैशाख में तुला और चिक के सूर्य में मार्ग शीर्ष जो घर बनवावै तौ दक्षिण या उत्तर में द्वार रक्खै तौ शुभ है तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिर रेवती, चित्रा, अनुराधा, [illegible]भषा, स्वाती, घनिष्ठा, हस्त, पुष्य, इन नक्षत्रों में गृहारंभ करना चाहिये पुनर्वसु में सोवड़ का घर बनवाना शुभ है श्रवण या अभिजित में गर्भवती का उसमें प्रवेश करना शुभ है॥ १५॥

अब सौर मास और चन्द्र मासों की एकता कहते हैं।

[छ़. शा.] कैश्चिन्मेषरवौ मधौ बृषभगे ज्येष्ठे शुचौ कर्कटेभाद्रे सिंहगते घटेश्वयुजि चोजेलौ मृगे पौषके ॥ माघे नक्रघटेशुभं निगदितं गेहं तथोर्जे न सत् कन्यायां च तथा धनुष्यति नसत्कृष्णादिमासाद्भवेत् ॥१६॥

टीका–चैत्र में मेष के सूर्य में और ज्येष्ठ में वृष के सूर्य में आषाढ़ में कर्क के सूर्य में भादों में सिंह के सूर्य में आश्विनी में तुला के सूर्य में बृश्चिक का सूर्य होय तौ कार्तिक में मकर का सूर्य होने पर माघमेंघरका बनवाना शुभ है ये कुछ आचार्यों का मत है जो कार्तिक में कन्या के और माघ में धनु के सूर्य होंयतौ मकान का बनाना शुभ नहीं है और महीना कृष्ण पक्ष का पड़वा से लेकर पूनों तक का मानना ॥१६॥

तिथि परत्व से द्वारका निषेध।

(छं.उ.) पूर्णेंदुतः प्राग्वदनं नवम्यादिषूत्तरास्यं त्वथ पाश्चमास्यम् ॥ दर्शादितः शुक्लदले नवम्यादौ दक्षिणास्यं न शुभं बदंति ॥१७॥

टीका–पूर्णिमा से लेकर कृष्णपक्ष की अष्टमी तक पूर्व में द्वारबनाना शुभ नहीं है और कृष्ण नवमी से १४ तक उत्तर में द्वार वनाना शुभ नहींहै और अमावश्या से लेकर अष्टमी तक पश्चिम का द्वार बनवाना श्रेष्ठ नहीहै और शुक्ल पक्ष की नवमी से लेकर चौदश तक दक्षिण की तरफ द्वार बनवाना शुभ नहीं है ॥१७॥

मकान में पचांग शुद्धि कहते हैं।

[छ़.अ.] भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनेगे विपंचके ॥
व्यष्टात्यस्थैः शुभैर्गेहारंभस्त्यायारिगैः खलैः ॥१८॥

टीका–मंगलवार रविवार, रिक्ता तिथ और अमावास्या शुक्ला प्रतिपदा अष्टमी इनको छोड़कर रोगादि पंचक नहीं हो चर संज्ञक लग्न न होय अष्ट द्वादश में शुभ ग्रह न होंय और ३।६।११ इन में पाप ग्रह होंय तो गृहारंभ में शुभ है ॥१८॥

राहु मुख चक्र कहते हैं ।

(छं.इ.) देवालये गेहविधो जलाशये राहोर्मुखं शंभुदिशो विलोमतः ॥ मीनर्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥१९॥

टीका– मन्दिर बनवाना होय तो ईशान से विपरीत मार्ग से मीन राशि से तीन तीन राशियों में राहु का मुख होता है जैसे मीन, मेष, वृष के सूर्य में ईशान में मुख होता है, मिथुन, कर्क, सिंह में वायव्य में कन्या तुला वृश्चिक के सूर्य में नैऋत्य में धन मकर, कुम्भ के सूर्य में अग्नि कोण में राहु का मुख होता है कूआं तालाब आदि के बनाने में मकरकुम्भमीनकेसूर्य में ईशान में मेष वृष मिथुन के सूर्य बायु कोण में कर्क सिंह कन्या कोसूर्य वायव्य में कर्क सिंह कन्या के सूर्य में नैऋत्य में तुला, वृश्चिक, धन के सूर्य में अग्निकोण में राहु का मुख होता है । उससे पिछाड़ी की दिशा में नीम खुदवाना शुभ होता है और मकान के बनाने में सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में ईशान में राहु का मुख होता है वृश्चिक, धन, मकर के सूर्य में वायव्य में राहु का मुख होता है कुम्भ, मीन मेष के सूर्य में नैऋत्य में राहु का मुख होता है वृष मिथुन कर्क के सूर्य में अग्निकोण में मुख होता है उससे पिछाड़ी की दिशा में नीम खुदवाना शुभ होता है जैसे मकान के बनाने में सिंह के सूर्य में ईशान में राहुका मुख होता है उससे पिछाड़ीकी दिशा अग्निकोण है उसमें खुदवाना श्रेष्ठ है ॥ १९ ॥

देवालयादिषु राहुमुखचक्रम् ।

....	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋत्या	आग्नेयां
देवालये कर्तव्ये	११।१२ सू में. रा. मु.	३।४।५ के सू. में. रा. मु.	६।७।८ के. सू. में. रा. मु.	९।१०।११ के. सू. में. रा. मु.
गृहारंभे कर्तव्य	५।६।७ के सू. में. राहु मुख.	८।९।१० के सूर्यो राहु. मुख.	११।१२।१ के. सू. में. रा. मु.	२।३।४ के. सू. में. रा. मु.
जलाशये कर्तव्ये	१०।११।१२ के सू. में. रा मु.	१।२।३ के. सू. में. रा. मु.	४।५।६। के. सूर्यो. में. रा. मु.	७।८।९ के.सू. में. राहु. मु.

घर में कूआ बनाने का फल ।

(छ.शा.) कूपेवास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्य वृद्धिः ॥ सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ॥२०॥

टीका–घर के बीच में कुआ बनाने से धन का नाश होता है ईशान कोण में बनाने से पुष्टि होती है पूर्व में बनाने से ऐश्वर्य बढ़ता है अग्निकोण में बनाने से पुत्र का नाश होता है दक्षिण में बनाने से स्त्री का नाश नैऋत्य में घरमें कूआ बनाने से मृत्यु होती है घरमें पश्चिम में कूआ बनाने से संपत्ति मिलती है वायु कोण में बनाने से शत्रु से पीड़ा उत्तर में बनाने से सुख मिलता है ॥२०॥

उपकरणों का दिशानुसार नियम कहते हैं ।

(छं.शा.) स्नानग्नि पाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः ॥ तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम् ॥२१॥

टीका—घर में पूर्व की तरफ स्नान करने का स्थान बनवाना चाहिये अग्नि कोण में रसोई का घर बनवावै दक्षिण में शयन का घर बनवावै नैऋत्य में शस्त्रालय पश्चिम में भोजन करने का स्थान घरके वायु-कोण में अन्न भरने का स्थान घरके उत्तर में धन का स्थान ईशान में देव स्थान बनवाना शुभ होता है इसी तरह पूर्व और अग्निकोण में दधि मंथन गृह बनवावै अग्निकोण और दक्षिण में घी रखने का स्थान दक्षिण और नैऋत्य में पाखाना पश्चिम और नैऋत्य में विद्याभ्यास पश्चिम और वायु-कोण के बीच में रोने का घर वायव्य और उत्तर में रति का स्थान उत्तर और ईशान में औषधियों का स्थान ईशान और पूर्व में सब वस्तुओं का स्थान बनावावै इस प्रकार गृह निर्माण उत्तम होता है ॥२१॥

घर की आयु कहते हैं ।

(छ. अ.) जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु लग्नारिजामित्रसुखात्रिगेषु ॥ स्थितिः शतं स्याच्छरदां सितार्का रेज्ये तनुत्र्यंगसुते शत द्वे ॥२२॥

टीका—लग्न में गुरु छटे घर में सूर्य सप्तम में बुध चौथे में शुक्र तीसरे में शनि होय तो १०० वर्ष की आयु होती है और लग्न में शुक्र तीसरे में सूर्य छटे में मङ्गल पंचम में गुरु ऐसे लग्न में गृहारंभ करने से २०० वर्ष की मकान की आयु होती है ॥२२॥

(छ.इ.) लग्नबरायेषु भृगुज्ञभानुभिः केंद्रेगुरा वर्षशतायुरालयम् ॥ बधौ गुरुर्व्योम्नि शशी कुजार्कजौ लाभे तदाशीतिसमायुरालयम् ॥२३॥

लग्न दशम एकादश इनमें शुक्र बुध सूर्य ये क्रम से होंय केन्द्र में गुरु होंय तो मकान की आयु १०० वर्ष की होती है चौथे गुरु १० में चन्द्रमा मङ्गल और शनि ११ वें होय तो मकान की आयु ८० वर्ष की होती है ॥२३॥

लक्ष्मी युक्त घर का योग ।

(छं. अ.) स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथवा ॥ शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम् ॥२४॥

टीका-शुक्र उच्च का होकर लग्न में होय अथवा गुरु उच्च का होकर चौथे में होय या उच्च का शनि लाभ में होय ऐसे योग में आरम्भ हुआ घर लक्ष्मी युक्त होता है ॥२४॥

घर के दूसरे के पास जाने का योग

(छं. अ.) द्यूनांबरे यदैकोपि परांशस्थो ग्रहो गृहम् ॥ अब्दांतः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥२५॥

टीका-शत्रु के के नवांशक का होकर एक भी गृह जो सप्तम या दशम में होय तौ वह घर साल भर के बीच में ही दूसरे के पास चला जाता है जो वर्ण का स्वामी निर्बल होय तौ यह योग मिलता है ॥२५॥

नक्षत्र के अनुसार फल कहते हैं ।

(छं. ति.) पुष्यध्रुवेन्दुहरिसर्पजलैः सजीवैस्तद्वासरेण च कृतं सुतराज्यदं स्यात् ॥ द्वीशाश्वितत्त्विवसुपाशिशिवैः सशुक्रैर्वारे सितस्य च गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥२६॥

टीका-पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, श्रवण, आश्लेषा इन नक्षत्रों में और गुरुवार के दिन जो गृहारंभ किया जाय तौ सन्तान और राज्य का देने वाला होता है विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा आर्द्रा इन नक्षत्रों में और शुक्रवार को जो आरंभ किया जाय तो वह धन धान्य देने वाला होता है ॥२६॥

[छं. इं.] सारैः करेजांत्यमघांबुमूलैः कौजेन्हि, वेश्माग्निसुतार्तिदं स्यात् ॥ संज्ञैः कदास्त्रार्यमतक्षहस्तैर्ज्ञस्यैव वारे सुखपुत्रदं स्यात् ॥२७॥

जिस नक्षत्र पर मङ्गल होय वह नक्षत्र हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ा, मूल मङ्गलवार इनमें आरंभ किया घर अग्नि से पीड़ा देता है और पुत्र को पीड़ित करता है जिस नक्षत्र पर बुध होय वह नक्षत्र रोहिणी अश्विनी उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा हस्त इन नक्षत्रों में और बुधबार के दिन गृहारंभ किया जाय तौ सुख और पुत्र का देनेवाला होता है ॥२७।

अशुभ योग कहते हैं।

[छं. शा.] अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलांतकैः ॥
समंदैर्मंदवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥ २८ ॥

टीका—पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाती भरणी, शनियुक्त नक्षत्र और शनिवार इनमें घर बनाने का आरंभ किया होय तौ राक्षस और भूतों से युक्त घर होता है ॥२८॥

फल समेत द्वार चक्र कहते हैं।

[छं.शा.] सूर्यर्क्षाद्युगभैः शिरस्यथफलं लक्ष्मीस्ततः कोणगैर्भै-
र्नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ॥
देहल्यां गुणभैर्मृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः सौख्यं
चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥२९॥

इति दैवज्ञानंतसुतरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणौ
वास्तुप्रकरणं समाप्तम् ॥शुभम॥१२॥

टीका–सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र ऊपर शिर पर रक्खै उसका फल लक्ष्मी है और ८ नक्षत्र कोनों पर रक्खे उनका फल उद्वसनहै अर्थात् उसमें कोई नहीं बसता और ८ नक्षत्र शाखाओं में रक्खै उनका फल सुख है ३ नक्षत्र देहरी में रक्खै उनका फल गृह स्वामी की मृत्यु है उससे आगे

के ४ नक्षत्र, मध्यम में रक्खे उनका फल सुख है बुद्धिमान मनुष्य इस चक्र को देखकर द्वार बनावै ॥२६॥

इति श्री मुहूर्त चिन्तामणौ भाषा टीकायां
द्वादश प्रकरणम्

त्रयोदश प्रकरणम् ।

अथ गृह प्रवेश चक्रम् ।

(छं.इं.) सोम्यायने ज्येष्ठतपोंत्यमाधवेयात्रानिवृत्तोन्नृपतेर्नवेगृहे ॥ स्याद्वेशनंद्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपवयोदयेस्थिरे ॥१॥

टीक-उत्तरायण सूर्य में ज्येष्ठ माघ फाल्गुन बैसाख इन महीनों में नवीन घर में अथवा यात्रा से लौट कर अपने घर में प्रवेश करना शुभ है द्वार में कहे हुये नक्षत्र और मृदु संज्ञक ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में प्रवेश करना श्रेष्ठ है और लग्न कहते हैं। जन्म राशि और जन्म लग्न से उपचयअर्थात् ३। ६। १०। ११ स्थान का लग्न होय अथवा स्थिर लग्न में प्रवेशकरना शुभ है ॥१॥

पुराने घर में प्रवेश का मुहूर्त

(छं.इं.) जीर्णे गृहेग्न्यादिभयान्नवेपि मार्गोर्जयोःश्रावणिकेऽपि सत्स्यात् ॥ वेशोऽम्बुपेज्यानिलवास्रवेषु नावश्यमस्ता-[illegible]विचारणात्र ॥२॥

टीका—पुराना घर होय उसकी मरम्मत कराई होयअथवा अग्निलगने से जो खराब होगया होय उसकी मरम्मत कराई होय ऐसे मकानकाप्रवेश

भी मार्गशीर्ष, कार्तिक, श्रवण के महीने में श्रेष्ठ है शतभिषा, पुष्य, कृतिका धनिष्ठा, ज्येष्ठा, इन नक्षत्रों में प्रवेश करै जीर्ण गृह के प्रवेश में शुक्र के अस्तादि का विचार आवश्यक नहीं है ॥२॥

वास्तु पूजन का मुहूर्त ।

(छं. उ.) मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिं च कारयेत् ॥ त्रिकोणकेंद्रायधनत्रिगैः शुभैर्लग्ने त्रिषष्ठायगतैःश्च पापैः ॥३॥

मृदु संज्ञक (मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा,) ध्रुव संज्ञक (तीनों उत्तरा रोहिणी) क्षिप्र (हस्त, पुष्य अभिजित) चर संज्ञक (स्वाती, पुनर्वसु श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल) इन नक्षत्रों में केन्द्र त्रिकोणमें दूसरे ग्यारहवे और तीसरे घर मे शुभ ग्रह होंय तीसरे, छठे ग्यारहमें घर में पापग्रहहोंय ऐसे लग्न में वास्तु पूजन और भूत बलि करना श्रेष्ठ है ॥३॥

गृह प्रवेश में तिथिवार कहते हैं ॥

(छं. इ.) शुद्धाबुरंध्रे द्विजनुर्भमृत्यौ व्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे ॥ अग्रेम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वा विशेद्वेश्म भकूटशुद्धम् ॥४॥

टीका-गृहप्रवेश की लग्न से चौथा आठवां घर शद्ध होय और वह लग्न जन्म राशि और जन्म लग्नसे अष्टम न होय रविवार औरमङ्गलवार न होय रिक्ता (१४ । ४ । ६) तिथि न होय चर लग्न अमावास्याऔर चैत्र का महीना नहीं होय भकूट की शुद्धि होने पर अपने आगे भरा हुआ घड़ा और ब्राह्मणों को आगे करके घर प्रवेश करै ॥४॥

वामार्कज्ञान से भिन्न २ दिशाओं के द्वारा प्रवेश कहते हैं ।

(छं.इ.) "वामो रविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्के पंचमे प्राग्वदना-

दिमंदिरे ॥ पूर्णातिथौ प्रावदने गृहे शुभो नंदादिके याम्यजलोत्तराननं ॥५॥

टीका—गृह प्रवेश के लग्न से जो आठमा स्थान है उससे पांचवे स्थान में जो सूर्य होय तौ पूर्वाभिमुख गृहमें प्रवेश करने वाले को सूर्य बांयाहोता है इसी प्रकार लग्न से जो पंचम स्थान है उससे पंचम सूर्य होयतौ दक्षिणाभिमुख में प्रवेश करने वाले को सूर्य बांया होगा इसी प्रकार लग्न से द्वितीय स्थान से जो पंचम है उसमें जो सूर्य होय तौ पश्चिमाभिमुख गृहमें प्रवेश करने वाले को बांया होता है और जो लग्न से ग्यारहमें घरसेपंचम सूर्य होय तौ उत्तराभिमुख घरमें प्रवेश करने वाले को सूर्य बांया होता है। ५।१०।१५ इन तिथियों में पूर्वाभिमुख गृहमें प्रवेश शुभ है और १।६।११ इन तिथियों में दक्षिणाभिमुख प्रवेश शुभ है २।७।१२ इनमें पश्चिमाभिमुखमें प्रवेश शुभ है ।३।८।१३ इनमें उत्तराभिमुखमेंप्रवेश शुभहै ॥५॥

गृह प्रवेश में कलश चक्र।

पूर्व मुख	दक्षिण मुख	पश्चिम मुख	उत्तरा मुख
सूर्यः ८	सूर्यः ५	सूर्यः २	सूर्यः १२
सू. ९	सू. ६	सू. ३	सू. १२
सू. १०	सू. ७	सू. ४	सू. १
सू. ११	सू. ८	सू. ५	सू. २
सू. १२	सू. ९	सू. ६	सू. ३

[छ.शा] वक्त्रे भूरविभात्प्रवेश समये कुम्भेग्निदाहः कृताः प्राच्यामुद्वसनं कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे ॥

श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे युगमिता गर्भेविनाशो गुदे रामास्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कंठे भवेत्सर्वदा ॥६॥

टीका—कलश के आकार का चक्र बनवावै जिस नक्षत्र पर सूर्य होय वह नक्षत्र मुख पर रक्खै उसका फल अग्निदाह है उसमें प्रवेश करने से घर में आग लगती है उहसे आगे के ४ नक्षत्र पूर्व में रक्खै उनका फल उद्वसन है अर्थात इन नक्षत्रों में प्रवेश होने से मकान सूना रहता है उससे आगे के ४ नक्षत्र दक्षिण में रक्खै उनका फल लाभ है उससे आगे के ४ नक्षत्र पश्चिम में रक्खै उनका फल श्री है अर्थात इनमें प्रवेश होने से द्रव्य आता है आगे के ४ नक्षत्र उत्तर में रक्खे उनका फल कलह है उससे आगे ४ नक्षत्र गर्भ में रक्खे उनका फल विनाश है ३ नक्षत्र गुदा में रक्खे उनका फल स्थिरता है आगे के ३ नक्षत्र कंठ में रक्खे उनका फल स्थिरता है ॥६॥

प्रवेश के पीछे का कर्तव्य ।

(छं.उ.) एवं सुलग्ने स्वगृहं प्रविश्य वितानपुष्यश्रतिघोषयुक्तं ॥ शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् राजार्चयेद्भूमिहिरण्यवस्त्रैः ॥७॥

टीका—इस प्रकार सुन्दर लग्न में वस्त्रों का मण्डप बनाकर पुष्पफलों से युक्त वेद ध्वनि जिसमें हो रही है ऐसे घर में प्रवेश करके कारीगर, ज्यतिषी पुरवासी लोगों को बुलाकर भूमि सोना वस्त्र देकर राजा उनका सत्कार करै ॥७॥

इति श्री मुहूर्त चिन्तामणौ भाषा टीकायां त्रयोदश प्रकरणं समाप्तम् ।

———

चतुर्दश प्रकरणम

अथ वंश वर्णनम्

[छं. शा.] आसीद्धर्मपुरे षडंगनिगमाध्येतृद्विजमडिते ज्यो-

तिर्विरिलकः फणींद्ररचिते भांष्ये कृतातिश्रमः ।। तत्त-
ज्जातकसंहितागणितकृन्मान्यो महाभूभुजां तर्कालं-
कृतिवेदवाक्यविलसद्बुद्धिः स चिंतामणिः ।।१।।

टीका—षडंग वेद के पढ़ने वाले ब्राह्मणों से शोभित धर्मपुर में ज्योति-
षियों में श्रेष्ठ शेषजी से बनाये हुए भाष्य में अतिश्रम करनेवाला जातक
संहिताओं को रचनेवाला राजाओं से पूज्य न्याय अलंकार और वेद इनसे
शोभित बुजिसकी द्धि है ऐसा चिन्तामणि नामक पंडित हुआ ।।१।।

पिता का वर्णन

[छ. शा. वि.] ज्योतिर्विद्गणवंदितांघ्रिकमलस्तत्सूनुरासी-
त्कृती नाम्नानंतइति प्रथमाधिगता भूमंडला-
हस्करः ।। या रम्यां जनिपद्धतिं समकरो
द्दुष्टाशयध्वंसिनीं टीकां चोत्तमकामधेनुग
णितेऽकार्षीत्सतां प्रीतये ।।२।।

ज्योतिषी लोग जिसके चरणों में प्रणाम करते हैं ऐसा ग्रन्थ रचना में
चतुर पृथ्वी पर सूर्य के समान अनन्त नामक ज्योतिषी हुआ जिसने कि
दुष्टाशयों की विध्वंश करने वाली बहुत सुन्दर जातक पद्धति बनाई और
जिसने कि सज्जनों के प्रसन्न करने के लिए कामधेनु नामक ग्रन्थ की टीका
बनाई है ऐसा अनन्त है ।।२।।

तदात्मज उदारधीर्विबुधनीलकंठानुजो गणेशपदपंकजं
हृदि निधाय रामाभिधः ।। गिरीशनगरे वरे भुजभुजे-
षुचंद्रैमिते शके विनिरमादिमं खलुमुहूर्तचिंतामणिम् ।।३।।

अनन्त नामक ज्योतिषी का पुत्र उदार बुद्धि नीलकंठ का

छोटा भाई ऐसा जो राम ज्योतिषी है सो अपने पूज्यगणपति के चरणोंको हृदय में धारण करके उत्तम काशीजी नामक पुर में १५२२ सालिवाहन शक में मुहूर्तचिंतामणि नामक ग्रन्थ को रचता हुआ ॥३॥

चतुर्दश प्रकरणं समाप्तम्
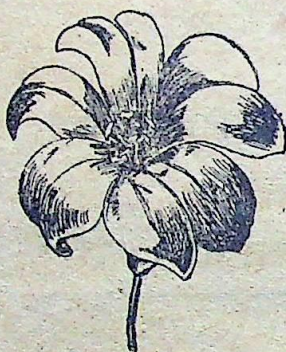
पुस्तक मिलने का पता—

हिन्दी पुस्तकालय मथुरा ।

पं० गजराजसिंह शर्मा द्वारा गोपाल प्रेस, हाथरस में मुद्रित ।